R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2021-23

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

अक्स

वर्ष : 21 । अंक : 23
01 से 15 सितंबर 2023
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

यात्राओं के सहारे जीत की खोज!

मप्र के इतिहास में पहली बार भाजपा और कांग्रेस का जोर यात्राओं पर

सबको साधने के लिए दोनों पार्टियों ने घोषणाओं का रिकॉर्ड भी तोड़ा

SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.

D-10™ Hemoglobin Testing System

For HbA_{1c}, HbA_2 and HbF

Flexible
to solve more testing needs

Comprehensive
B-thalassemia and diabetes testing

Easy
for simple operation

Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.

A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid HbA_{1c} or $HbA_2/F/A_{1c}$ testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps, With the D-10™ System, It's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.

Add:- C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687

इस अंक में

घपला

9 | मप्र में भूतों का इलाज!

देश के जरूरतमंद नागरिकों को इलाज की सहूलियत देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में बड़ा गड़बड़झाला सामने आया है। ये हम नहीं कह रहे बल्कि देश...

लालफीताशाही

10-11 | नोटशीट का खेला

मप्र में कई मंत्रियों की नोटशीट की आड़ में कमाई का खेल चल रहा है। इस खेल में सबसे अधिक कुख्यात पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग है। विभाग में आलम यह है कि मंत्री द्वारा नोटशीट लिखवा ली जाती...

राजपाट

15 | जीवनभर 'राज' करने वाले...

मप्र में विधानसभा चुनाव के लिए सियासी दल अपनी तैयारियों को धार देने में लगे हैं। वहीं जीवन भर राज करने वाले नौकरशाहों की नजर भी विधानसभा चुनाव पर है। अलग-अलग पेशे से जुड़े अफसर इस बार चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी में हैं। कोई भाजपा...

विडंबना

18 | भ्रष्टों के खिलाफ सबूत नहीं...

घूसखोरी, आय से अधिक संपत्ति जमा करने या सार्वजनिक प्राधिकार का दुरुपयोग करने वाले भ्रष्टों के खिलाफ लोकायुक्त की कार्रवाई अपने अंजाम तक नहीं पहुंच पा रही है। ऐसे मामलों में ट्रैपिंग या छापेमारी के बाद एफआईआर तो दर्ज हो रही है, लेकिन सजा नहीं मिल पा रही...

आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

मिशन 2023 को फतह करने के लिए भाजपा और कांग्रेस वह सारे हथियार आजमा रही हैं, जिनका उपयोग उन्हें सत्ता दिला सकता है। इन्हीं में से एक है यात्राएं। मप्र के इतिहास में पहली बार भाजपा और कांग्रेस का सबसे अधिक जोर यात्राओं पर है। मतदाताओं को साधने के लिए दोनों पार्टियां अब तक दर्जनभर यात्राएं निकाल चुकी हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की विकास यात्रा समाप्त होते ही पार्टी ने जनआशीर्वाद यात्रा का ऐलान कर दिया है।

राजनीति

30-31 | काम कम, हंगामा ज्यादा

भारतीय प्रशासन में संविधान सर्वोपरि है, पर राज्य का हर अंग किसी न किसी रूप में जनता के प्रति जवाबदेह है। चुनकर आए प्रतिनिधियों की कड़ी में सांसद सबसे ऊपर होते हैं। संसद अपनी प्रक्रियाओं को खुद रेगुलेट करती है और उसकी कार्यवाही की व्यवस्था को किसी भी अदालत...

महाराष्ट्र

35 | दावपेंच की राजनीति

महाराष्ट्र की राजनीति में फिर से कुछ पक रहा है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को गत दिनों एक कार्यक्रम में पुणे जाना था, लेकिन वह अचानक अपने घर सतारा चले गए। पुणे में अजित पवार ने कहा कि मुख्यमंत्री अस्वस्थ हैं, इसलिए वह आराम करने सतारा चले गए। लेकिन वह कितने अस्वस्थ...

बिहार

38 | बेचारे के सहारे!

लालू परिवार पर कभी ईडी तो कभी सीबीआई की कार्रवाई जारी है। वहीं दूसरी ओर एनडीए से नाता तोड़ने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जितने ही ज्यादा भाजपा पर गरम हैं उतने ही लालू प्रसाद यादव के करीब। उनके बयानों से ही यह झलकने लगा...

6-7 अंदर की बात
40 विदेश
41 महिला जगत
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

हम चांद के पार...अब सूर्य कर रहा इंतजार...

किसी कवि ने लिखा है...

जग को, चालीस दिनों में भारत मां की दृष्टि दिखा दी है,
धरती माता की राखी चंदा मामा तक पहुंचा दी है।

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचकर भारत ने वह कर दिखाया जिसे करने में दुनिया के पसीने छूट रहे थे। यही नहीं चांद के पार जाने के बाद अब भारत सूर्य की ओर जाने की तैयारी कर चुका है। गौरतलब है कि 60 के दशक में जब अमेरिका और सोवियत संघ (अब रूस) के बीच कोल्ड वॉर चल रहा था, तब चांद पर सबसे पहले पहुंचने की होड़ भी शुरू हो गई थी। दोनों देश कई बार चांद पर पहुंचे, लेकिन उन्हें वह सफलता नहीं मिली जो भारतीय स्पेस एजेंसी इसरो को मिली है। इसरो अब तक चांद पर तीन बार मिशन भेज चुका है। साल 2008 में चंद्रयान-1 लॉन्च किया था। इसमें सिर्फ ऑर्बिटर था। इसने 312 दिन तक चांद का चक्कर लगाया था। ये दुनिया का पहला मून मिशन था, जिसने चांद पर पानी की मौजूदगी का पता लगाया था। इसके बाद साल 2019 में चंद्रयान-2 को लॉन्च किया गया। इस बार इसरो ने ऑर्बिटर के साथ-साथ लैंडर और रोवर भेजा। इसका मकसद चांद के दक्षिणी ध्रुव के पास लैंडर उतारना था। लेकिन लैंडिंग से कुछ सेकंड पहले ही संपर्क टूट गया और हार्ड लैंडिंग हो गई। इस मिशन को न तो पूरी तरह फेल कहा जा सकता है और न ही पास। क्योंकि ऑर्बिटर तो इसका काम कर ही रहा था। फिर, 14 जुलाई 2023 को तीसरा मून मिशन चंद्रयान-3 छोड़ा। इसमें ऑर्बिटर की बजाय प्रपल्शन मॉड्यूल लगाया गया। लैंडर और रोवर भी साथ थे। लॉन्चिंग के 40 दिन बाद 23 अगस्त को चांद के दक्षिणी ध्रुव के पास चंद्रयान-3 के लैंडर ने सॉफ्ट लैंडिंग की। इसके साथ ही चांद के दक्षिणी ध्रुव के पास तक पहुंचने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। इन तीनों ही मिशन की लागत काफी कम थी। चंद्रयान-3 की लागत 615 करोड़ रुपए बताई जा रही है। जबकि, रूस ने लूना-25 के लिए 1,600 करोड़ से ज्यादा खर्च किए थे। भारत की सफलता से आज पूरा विश्व भारत की ओर नजर लगाए हुए है। वहीं भारत अब सूर्य की ओर कदम बढ़ा चुका है। भारत ने अपने जो भी अभियान चलाए हैं वह मानव समुदाय के हित के लिए हैं। जबकि रूस और अमेरिका वर्चस्व दिखाने में लगे हुए थे। गौरतलब है कि 20 जुलाई 1969 को चांद पर कदम रखने वाले पहले अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने वहां उतरते ही कहा था कि यह इंसान के लिए छोटा कदम हो सकता है, लेकिन मानव जाति के लिए एक लंबी छलांग है। विश्व के अंतरिक्ष इतिहास में यह वाक्य लगभग कहावत में बदल गया है। उस घटना की आधी सदी से भी ज्यादा समय के बाद 23 अगस्त की शाम को भारत का चंद्रयान-3 चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरा है। उसके बाद विक्रम लैंडर की ढलाननुमा सीढ़ी से उतरकर मून रोवर प्रज्ञान ने भी धीरे-धीरे चांद की सतह पर अपनी यात्रा शुरू कर दी है। प्रज्ञान संभवतः प्रति सेकंड हद से हद एक सेंटीमीटर ही आगे बढ़ पा रहा है, लेकिन पर्यवेक्षकों को इस बात पर रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि चांद के सीने पर यह छोटा कदम भू-राजनीति और चांद आधारित अर्थव्यवस्था (लूनर इकोनॉमी) में एक लंबी छलांग है। अंतरराष्ट्रीय सामयिकी फॉरेन पॉलिसी ने लिखा, भारत का मून लैंडिंग दरअसल एक विशाल जियो-पॉलिटिकल स्टेप है। दुनिया के तमाम देश इस समय अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में नई-नई इबारत लिखने की कोशिश कर रहे हैं और इसके लिए भारी-भरकम रकम खर्च कर रहे हैं।

- राजेन्द्र आगाल

पाक्षिक अक्स

वर्ष 21, अंक 23, पृष्ठ-48, 1 से 15 सितंबर, 2023

प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल

सम्पादकीय कार्यालय :
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 (म.प्र.),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
Website : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

ब्यूरो
कोलकाता:- इंद्रकुमार, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्केण्डेय तिवारी,
जयपुर:- आर.के. बिन्नानी, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

प्रदेश संवाददाता
094251 25096 (इंदौर) विकास दुबे
098276 18400 (जबलपुर) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, (उज्जैन) श्यामसिंह सिकरवार
089823 27267, (रतलाम) सुभाष सोमानी
075666 71111, (विदिशा) मोहित बंसल

क्षेत्रीय कार्यालय
नई दिल्ली : ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी
फोन : 9811017939
जयपुर : सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान)
मोबाइल-09829 010331
रायपुर : एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर,
फोन : 0771 2282517
भिलाई : नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर,
भिलाई, मोबाइल 094241 08015
इंदौर : नवीन रघुवंशी, रघुवंशी कॉलोनी, इंदौर,
मो.-9827227000
देवास : जय सिंह, देवास
मो.-7000526104, 9907353976

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित

इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।

पत्र–संपादक के नाम

akshnews.com

चुनावी तैयारी में पार्टियां

मप्र में विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा और कांग्रेस तैयारियों में जुट गई हैं। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह आए दिन मप्र का दौरा कर रहे हैं। वहीं कांग्रेस के बड़े-बड़े दिग्गज भी मप्र में आकर कांग्रेस को मजबूत करने में लगे हैं। इसके अलावा अन्य पार्टियां भी तैयारियों में लगी हैं।

● **संदीप शिवहरे,** इंदौर (म.प्र.)

कड़ी कार्यवाही करे सरकार

जब से पंचायतों में विकास के लिए फंड मुहैया कराया जाने लगा है, तभी से भ्रष्टाचार के मामले बढ़ने लगे हैं। सरपंचों ने अपने पद का दुरुपयोग कर करोड़ों रुपए का भ्रष्टाचार किया। किसी भी सरकारी योजना को नहीं छोड़ा। इस पर सरकार को कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए।

● **राघेश्याम सिंह,** भोपाल (म.प्र.)

रेत ठेकेदारों की बल्ले-बल्ले

मप्र सरकार ने रेत खदानों की नीलामी प्रक्रिया का जिम्मा खनिज निगम को सौंपा है। रेत खदानों का संचालन खनिज निगम ही करेगा। इस बार खनिज निगम सभी तरह की जरूरत अनुमतियां लेकर ही ठेकेदारों को सौंपेगा। ऐसे में रेत ठेकेदारों को किसी तरह की परेशानी से नहीं जूझना होगा।

● **अजय मिश्रा,** ग्वालियर (म.प्र.)

सत्तापक्ष-विपक्ष की नोंकझोंक

देश में राजनीति का रुख किस कदर बदल गया है, इसका नजारा हाल ही में हुए संसद के मानसून सत्र में देखने को मिला। एक तरफ जहां सत्तापक्ष ने विपक्ष की एक नहीं सुनीं। वहीं विपक्ष भी किसी एक मुद्दे पर टिककर बातचीत करने के मूड में नहीं दिखा। राजनीति के हर कदम के कुछ घोषित, तो कुछ अघोषित मकसद होते हैं। यह भी दिलचस्प है कि उसके घोषित मकसद से कहीं ज्यादा अघोषित और सांकेतिक मकसद महत्वपूर्ण होते हैं। विपक्ष द्वारा लोकसभा में पेश अविश्वास प्रस्ताव का घोषित मकसद मणिपुर के मामले को राष्ट्रीय नैरेटिव का हिस्सा बनाना रहा, लेकिन इसका अघोषित मकसद आगामी लोकसभा चुनाव का मुद्दा तय करना और उसके जरिए नरेंद्र मोदी सरकार को घेरना था।

● **मुस्कान साहू,** जबलपुर (म.प्र.)

सकारात्मक कदम उठाए सरकार

प्रोजेक्ट चीता के तहत केंद्र सरकार नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से 20 चीतों को भारत में फिर से बसाने के उद्देश्य से लाई थी। हालांकि पिछले चार महीनों में भारत में जन्मे तीन शावकों सहित आठ चीतों की अलग-अलग घटनाओं में बीमारियों के चलते मौत हो गई है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार को मिलकर इस विषय में गहन चिंतन करना चाहिए और चीतों के लिए कोई सुरक्षित उपाय खोजने की रणनीति पर काम करना चाहिए। दोनों सरकारों को इस विषय में कुछ सकारात्मक कदम उठाने चाहिए।

● **अंजली शर्मा,** सीहोर (म.प्र.)

कथा-सत्संग का सहारा

कथावाचक अब क्षेत्रवार राजनीतिक दलों के नेताओं के प्रतिनिधि हो चुके हैं। मप्र में कथा-सत्संग के माध्यम से चुनाव जीतने का दांव पुराना है जिसका सर्वाधिक लाभ भाजपा के नेताओं ने उठाया है। पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती स्वयं कथावाचक रह चुकी हैं और उनके राजनीति में प्रवेश से पूर्व नेता अपने क्षेत्र में उनकी कथा करवाकर चुनाव जीतने का उपक्रम करते रहे हैं। अब कांग्रेस भी इस अखाड़े में उतर चुकी है।

● **कुमेर सिंह,** रायसेन (म.प्र.)

पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

अक्स

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

सीएम की कुर्सी छोड़ेंगे नीतीश?

बिहार की राजनीति में इन दिनों मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के संभावित कदम को लेकर कयास लगाए जा रहे हैं। सियासी हलकों में इस बात की चर्चा है कि वह जल्द ही मुख्यमंत्री की कुर्सी डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव को सौंप देंगे। इसके पीछे तर्क दिया जा रहा है कि उन्हें भाजपा के विजयी रथ को रोकने के मकसद से तैयार विपक्षी दलों के गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस की तरफ से अगले लोकसभा चुनाव के लिए संयोजक पद की जिम्मेदारी दी जा सकती है। राजनीतिक पंडितों का कहना है कि करीब 18 वर्षों से बिहार की गद्दी पर कायम नीतीश कुमार के लिए किसी भी तरह की भविष्यवाणी करना जल्दबाजी होगी। वह भी संयोजक जैसे पद के बदले में मुख्यमंत्री की गद्दी छोड़ने की बात तो और भी अधिक काल्पनिक लगती है। वह भी ऐसे समय में जब इंडिया गठबंधन अपने दो प्रमुख ध्रुव एनसीपी सुप्रीमो शरद पवार और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त नहीं है। नीतीश कुमार के संभावित कदम के बारे में किसी भी तरह का अनुमान लगाने से पहले हमें राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के उस फैसले के बारे में भी विचार करना चाहिए, जो उन्होंने कांग्रेस जैसी देश की सबसे पुरानी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव से पहले लिया था।

शिंदे सरकार में फेरबदल की आहट

महाराष्ट्र में एक सप्ताह पहले उपमुख्यमंत्री अजित पवार की एनसीपी मुखिया शरद पवार से मुलाकात के बाद तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही थी। वहीं अब राज्य के एक वरिष्ठ नेता ने दावा किया है कि आने वाले कुछ दिनों में प्रदेश की मुख्य सीट यानी सीएम की कुर्सी समेत राज्य सरकार में बड़े बदलाव होंगे। ये दावा महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वडेट्टीवार ने किया जिसके बाद से एक बार फिर महाराष्ट्र में अटकलों का बाजार तेज हो गया है। एक प्रेस कांफ्रेंस में कांग्रेस नेता वडेट्टीवार ने दावा किया कि आने वाले कुछ सप्ताह में महाराष्ट्र सरकार में बड़े बदलाव होंगे, साथ ही प्रमुख सीट बदल जाएगी। दरअसल, 2022 में उद्धव ठाकरे की शिवसेना से बगावत कर एकनाथ शिंदे ने अपने गुट के विधायकों के साथ भाजपा से हाथ मिला लिया था जिसके बाद मुख्यमंत्री की सीट संभाली। वहीं शिंदे के प्रदेश की कमान संभालने के बाद राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता अजित पवार ने अपने गुट के विधायकों के साथ चाचा शरद पवार से बगावत कर भाजपा से हाथ मिलाकर एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली सरकार में शामिल हो उपमुख्यमंत्री की कुर्सी संभाल ली।

पोते पर दांव लगाएंगे शरद

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में दो फाड़ के बाद शरद पवार की नई राजनीतिक भूमिका को लेकर कयास लगाए जा रहे हैं कि वे भाजपा के साथ जा सकते हैं। लेकिन 82 वर्षीय शरद पवार इन अटकलों को सिरे से खारिज करते हुए एनसीपी को फिर से खड़ा करने की मुहिम पर निकल पड़े हैं। पवार अब भतीजे अजित पवार की जगह पोते रोहित पवार पर दांव लगाएंगे। बीते दिनों बीड में हुई एनसीपी (शरद गुट) की पहली स्वाभिमान सभा में इसके साफ संकेत मिले हैं। एनसीपी संस्थापक शरद पवार की बीड में हुई स्वाभिमान सभा में रोहित पवार ही छाए रहे। यहां तक कि एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल को भी भाषण देने का मौका नहीं मिला। जनसभा में उपस्थित लोगों की मांग पर जयंत पाटिल की जगह रोहित पवार ने भाषण दिया और जमकर तालियां बटोरी। एनसीपी के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री जितेंद्र आव्हाड ने भी मंच से अपने भाषण में कहा कि बेटा भले ही बाप से दूर हो जाए लेकिन दादा-पोते का संबंध अलग होता है वह उनसे दूर नहीं जा सकता। आव्हाड के इस बयान से साफ हो गया है कि पार्टी में रिक्त हुई उपमुख्यमंत्री अजित पवार की जगह अब रोहित पवार को मिलेगी।

इंडिया गठबंधन में दरार!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा के विजयी रथ को रोकने के लिए कांग्रेस की अगुवाई में विपक्षी दलों ने मिलकर हाल ही में इंडियन नेशनल डेवलपमेंट इंक्लूसिव अलायंस का गठन किया है। इसकी दो बैठकें हो चुकी हैं। तीसरी बैठक 31 अगस्त से मुंबई में होने वाली है। लेकिन इस बैठक से पहले सहयोगियों के बीच घमासान मचा हुआ है। दिल्ली में जहां अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी से ठन चुकी है। वहीं महाराष्ट्र में शरद पवार और अजित पवार की गुप्त मीटिंग ने भी कांग्रेस की धड़कनें बढ़ा दी हैं। इस सबके बीच बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का दिल्ली दौरा और अटल बिहारी वाजपेयी की समाधि स्थल पर जाना चौंकाने वाला कदम है। इंडिया गठबंधन के तहत आम आदमी पार्टी के साथ नई दोस्ती कांग्रेस की दिल्ली यूनिट को रास नहीं आ रही है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधियों ने इसे स्वीकार नहीं किया है। उन्होंने आलाकमान के सामने अरविंद केजरीवाल की पार्टी के प्रति अपना विरोध जोरदार ढंग से किया है।

शर्मिला थामेंगी हाथ!

इन दिनों दक्षिण की सियासत में वाईएस शर्मिला रेड्डी का नाम काफी चर्चित हो रहा है। शर्मिला ने राजनीति में कदम तो अपने भाई की मदद के लिए रखा था लेकिन बाद में मतभेद हो जाने के कारण शर्मिला ने साल 2021 में अपने भाई की पार्टी से अलग होकर अपनी नई पार्टी वाईएसआरटीपी बना ली। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सीएम जगन मोहन रेड्डी और उनकी बहन के बीच कथित तौर पर संपत्ति से जुड़े मुद्दों को लेकर विवाद काफी बढ़ गया था। इसी वजह से जिस भाई को सीएम बनाने में बहन ने रात-दिन एक किया था, उसी से वो अलग हो गईं और अपनी एक नई पार्टी बना ली। यही नहीं अब वो विरोधी पार्टी कांग्रेस से भी हाथ मिला सकती हैं, अगर ऐसा होता है तो निश्चित तौर पर सीएम जगनमोहन के लिए ये एक बहुत बड़ी चुनौती होगी, जिसका असर आने वाले चुनावों पर भी पड़ेगा। दरअसल वाईएसआरटीपी तेलंगाना पार्टी की प्रमुख शर्मिला पिछले दिनों दिल्ली दौरे पर आई थी।

इसे कहते हैं दर्द का हद से गुजर जाना...

जब कोई व्यक्ति अपने ही विदाई सम्मान समारोह में न पहुंचे तो इसे ही शायरों ने दर्द का हद से गुजर जाना कहा है। यह दर्द कैसा होगा, हम उपरोक्त वाक्ये से ही समझ सकते हैं। अपने कार्यकाल में चिकित्सकीय शिक्षा में पारंगत 1990 बैच के आईपीएस अधिकारी अपनी मिलनसारिता और स्वाभिमानी प्रवृत्ति के कारण सबके चहेते रहे। उन्होंने प्रदेश में कई महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई। शासन के प्रति हमेशा उन्होंने समर्पण और निष्ठा का भाव दिखाया। लेकिन सत्ताधीशों की लड़ाई में उनका यही समर्पण और निष्ठा उनके लिए दुख का कारण बन गया। दरअसल, चाटुकारिता के इस दौर में साहब स्वाभिमानी तरीके से काम करने के आदी रहे हैं। इसलिए उन्हें न तो सरकार और न ही अधिकारियों ने अधिक महत्व दिया। अभी हाल ही में साहब स्पेशल डीजी बनाए गए थे। इस दौरान न तो सरकार और न ही अधिकारियों ने उन्हें अधिक महत्व दिया। जबकि साहब की काबिलियत का लोहा हर कोई मानता है। साहब ने जैसे-तैसे समय काटा और एक माह तक इस पद पर रहने के बाद साहब रिटायर हुए तो उनका दुख उस समय देखने को मिला, जब वे अपने विदाई सम्मान समारोह में शामिल नहीं हुए। इसके पीछे उनका तर्क था कि जब सेवा में रहते हुए किसी ने उन्हें सम्मान नहीं दिया तो अब विदाई सम्मान समारोह का क्या औचित्य?

छोटे सरकार ने खरीदा प्लॉट

अक्सर कहा जाता है कि पूत के पांव पालने में नजर आने लगते हैं। प्रदेश की राजनीति में एक बड़े राजनेता के पुत्र भी पिता की तरह राजनीति में भाग्य आजमाने की तैयारी में जुटे हुए हैं। इसके लिए वे अक्सर पिता के विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय दिखते हैं। इनकी सक्रियता को देखकर लोग कहते हैं कि ये एक दिन जरूर बड़े नेता बनेंगे, क्योंकि इनके लक्षण वर्तमान राजनीति के नेताओं से पूरी तरह मेल-जोल करते हैं। अपने इन्हीं लक्षणों के कारण प्रदेश की राजनीतिक और प्रशासनिक वीथिका में इन्हें छोटे सरकार भी कहा जाता है। अब यही छोटे सरकार इन दिनों एक प्लॉट खरीदकर चर्चा में आ गए हैं। सूत्रों का कहना है कि छोटे सरकार ने हरियाली से परिपूर्ण केरवा रोड पर एक आधा एकड़ का प्लॉट खरीदा है। इस प्लॉट की कीमत क्या होगी, इसका आंकलन इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने यह प्लॉट पूर्व नेता प्रतिपक्ष से खरीदा है। छोटे सरकार को जानने वालों का कहना है कि अक्सर उनके गुर्गे राजधानी और उसके आसपास के क्षेत्रों में घूम-घूमकर उन जमीनों की पड़ताल कर रहे हैं, जिन्हें बेचा जाना है। कहा तो यहां तक जा रहा है कि उन्होंने जमीनों के कारोबार में बड़ा निवेश भी किया है।

तीन बेचारे, बिना सहारे

हिंसा की आग में जल रहे मणिपुर में वहां के स्थानीय लोग पलायन करने के लिए आतुर हैं। वहां पर सेना और पुलिस के जो जवान तैनात हैं, वे वहां से मुक्ति चाहते हैं। ऐसे में सरकार ने प्रदेश के तीन आईपीएस अफसरों को सीबीआई में भेजकर मणिपुर में तैनात कर दिया है। मणिपुर आज हिंसा की आग में पूरी तरह जल रहा है। आक्रोशित जनता हमलावर है। पुलिस प्रशासन और सेना पस्त पड़ी हुई है। प्रदेश सरकार ने लगभग हाथ खड़े कर दिए हैं। ऐसे में इन तीनों अफसरों को वहां भेजकर सरकार ने संकट में डाल दिया है। सीबीआई में पदस्थापना के कारण इन्हें तहकीकात के लिए गांव-गांव घूमना होगा। विभिन्न तरह की विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। इस दौरान विभिन्न पहलुओं पर चर्चा और मंथन के बाद रिपोर्ट तैयार करनी होगी। यह रिपोर्ट इन अफसरों की अग्नि परीक्षा भी होगी। क्योंकि जरा सी खामी या चूक इनकी सीआर खराब कर सकती है। ऐसे में इन तीन अफसरों के सामने बड़ी चुनौती खड़ी हो गई है। इन अफसरों को कम से कम 2 साल तक मणिपुर में रहना है। ये दो साल इनके लिए अब तक की सेवा पर भारी पड़ सकते हैं। अब देखना यह है कि तमाम तरह की विषम परिस्थितियों के बीच मप्र कैडर के ये तीन आईपीएस अधिकारी मणिपुर में किस तरह काम करते हैं। यहां बता दें कि इनमें से एक आईपीएस अधिकारी एक केंद्रीय मंत्री के खासमखास भी हैं।

मिल गया बुढ़ापे का सहारा

प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में इन दिनों एक रिटायर्ड आईएएस अधिकारी चर्चा का विषय बने हुए हैं। अपने सेवाकाल के दौरान परिवार के प्रति पूरी तरह समर्पित रहने वाले साहब अब जब बुढ़ापे के दौर से गुजर रहे हैं तो वे बेसहारा हो गए हैं। ऐसे में साहब को एक उन्हीं की हमउम्र महिला का सहारा मिल गया है। बताया जाता है कि शहर की जिस पॉश कॉलोनी में साहब ने अपनी सेवा के दौरान मकान बनाया था और उसे पूरी सेवाकाल के दौरान किराए पर चलाया, अब उसी मकान में वे उक्त महिला के साथ जीवन-यापन कर रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि अपने सेवाकाल के दौरान साहब उन अफसरों में गिने जाते थे, जिन पर कोई दाग नहीं लगा हो। लेकिन साहब जब रिटायर हुए तो धीरे-धीरे परिवार से उनका साथ छूटता चला गया। जिन बेटियों को उन्होंने उच्च शिक्षा-दीक्षा देकर यह आशा की थी कि वे बुढ़ापे में उनकी लाठी बनकर रहेंगी, वह भी अब उनसे मुंह मोड़ चुकी है। ऐसे में साहब को इस संकट की घड़ी में उनकी ही हमउम्र महिला का साथ मिल गया है, जिसके साथ साहब आराम से जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

पहली अधूरी, दूसरी की घोषणा

मप्र वाकई अजब है, गजब है। यहां वाहवाही लूटने के लिए घोषणाएं तो बड़ी-बड़ी कर दी जाती हैं, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए फंड तक मुहैया नहीं कराया जाता है। ऐसा ही कुछ हो रहा है पुलिसकर्मियों के मकान को लेकर। 2018 में सरकार ने 25 हजार मकान बनाने की घोषणा कर दी, लेकिन विडंबना यह है कि इस परियोजना में करीब 57 हजार करोड़ रुपए खर्च होने थे, लेकिन मात्र 2 हजार करोड़ ही आवंटित किए गए। ऐसे में ठेकेदार काम को लटकाए हुए हैं। अभी पहली घोषणा के मकान बन ही नहीं पाए हैं कि सरकार ने 25 हजार नए मकान बनाने की घोषणा कर दी है। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि जब पहली योजना के लिए ही पूरा पैसा नहीं दिया गया है तो यह दूसरी योजना कैसे पूरी होगी। दरअसल, पुलिसकर्मियों के बनने वाले मकान की जिम्मेदारी जिस संस्थान पर है, वहां भर्राशाही और लापरवाही चरम पर है। हाल ही में वहां की एक महिला अधिकारी के यहां मारे गए छापे के बाद संस्थान की पूरी पोल खुल गई है। अब देखना यह है कि घोषणाओं को अमली जामा पहनाने के लिए क्या कदम उठाए जाते हैं।

इमरान खान जल्द पाकिस्तान और पॉलिटिक्स दोनों छोड़ेंगे। इसका अंदेशा पहले से ही था, लेकिन अब उनकी पत्नी और बहनों ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। अगर इमरान पाक साफ रहते तो वे पाकिस्तान में रहकर आरोपों को गलत साबित करते।

● **नवाज शरीफ**

इंडिया के बैनर तले जिस तरह विपक्ष का कुनबा बढ़ रहा है, उससे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा की घबराहट बढ़ गई है। वे इस कोशिश में लगे हुए हैं कि इंडिया में जैसे भी हो, तोड़फोड़ की जाए, लेकिन यह अब संभव नहीं है। पिछले 9 साल में जनता के दुख-दर्द को देखकर सभी एकजुट हुए हैं और सबका एक ही लक्ष्य है भाजपा को लोकसभा चुनाव में हराना।

● **राहुल गांधी**

एशिया कप भारत के लिए वर्ल्ड कप से पहले की सबसे बड़ी परीक्षा का इम्तिहान है। भारतीय खिलाड़ियों को इसमें अच्छा परफॉर्मेंस कर वर्ल्ड कप की तैयारी को मजबूत करना होगा। अभी तक टीम मजबूत होने के बाद भी बिखरी हुई नजर आ रही है। इसलिए कप्तान रोहित शर्मा के सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि टीम को मजबूत आधार दें।

● **कपिल देव**

ज्यूडिशियरी में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार है। मैंने सुना है कि कभी-कभी तो वकील लोग जो लिखकर ले जाते हैं, फैसला वैसा का वैसा आ जाता है। ये कैसी व्यवस्था है? ये किस देश का न्याय है? इस कारण लोगों का न्याय व्यवस्था से विश्वास उठ रहा है।

● **अशोक गहलोत**

मैं जल्द ही जोया अख्तर की फिल्म द आर्चीज से डेब्यू करने जा रही हूं। फिल्म में मेरे किरदार वेरोनिका के आगे-पीछे चाहने वालों की लाइन लगी है, लेकिन मैं उससे पूरी तरह अलग हूं। कई लोग उसे प्यार के नाम पर चीट कर रहे हैं। अगर मेरा बॉयफ्रेंड मुझे चीट करेगा, तो मैं उसे छोड़ दूंगी। मैं उस तरह की लड़की हूं, जिसे वन वुमन मैन पसंद है। मुझे लगता है कि जो किरदार निभा रही हूं, मैं उससे बहुत अलग हूं। मेरे साथ अगर ऐसा होता है, तो मैं खूब रोऊंगी। उसके बाद उससे बदला लेने की कोशिश करूंगी। वैसे मैं सोच-समझकर ही अपना बॉयफ्रेंड सेलेक्ट करूंगी।

● **सुहाना खान**

वाक्युद्ध

अक्साई चिन और लद्दाख भारत का अभिन्न हिस्सा है। पहले भी चीन भारत के हिस्सों के लेकर नक्शे निकालता रहा है। उसके दावों से कुछ नहीं होता। हमारी सरकार का रुख साफ है। बेकार के दावों से ऐसा नहीं हो जाता कि किसी और के इलाके आपके हो जाएंगे। ऐसा करना चीन की पुरानी आदत है।

● **एस जयशंकर**

अक्साई चिन और लद्दाख भारत के अभिन्न अंग हैं और मनमाने तरीके से तैयार किया गया कोई चीनी नक्शा इसे नहीं बदल सकता। मोदी सरकार को आत्मावलोकन करना चाहिए कि दिल्ली में शी जिनपिंग को तवज्जो देनी है या नहीं, क्योंकि उन्होंने भारतीय क्षेत्र पर अवैध कब्जा कर रखा है। इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है।

● **मनीष तिवारी**

मप्र में भूतों का इलाज!

देश के जरूरतमंद नागरिकों को इलाज की सहूलियत देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में बड़ा गड़बड़झाला सामने आया है। ये हम नहीं कह रहे बल्कि देश के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने चौंकाने वाला खुलासा किया है। नियंत्रक और महालेखा परीक्षक यानी कैग की लोकसभा में पेश की गई हालिया रिपोर्ट में बताया गया है कि इस योजना के करीब 7.5 लाख लाभार्थी एक ही मोबाइल नंबर पर रजिस्टर्ड हैं। इस मोबाइल नंबर में सभी 10 नंबर में 9 का अंक (9999999999) है। वहीं इस योजना के तहत ऐसे मरीज भी लाभ उठा रहे हैं, जिन्हें पहले मृत दिखाया गया था।

ऑडिट में मप्र में भी भूतों के इलाज की बात सामने आई है। मप्र में एक तरफ चुनावी माहौल जमाया जा रहा है, दूसरी मौजूदा भाजपा सरकार की कुछ गड़बड़ियां और फर्जीवाड़े के मामले सामने आ रहे हैं। अब जो मामला सामने आया है, उसे सुनकर आप आश्चर्य में पड़ जाएंगे। मप्र में इन दिनों मरे हुए लोगों का भी इलाज चल रहा है। दरअसल प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना की आड़ में पैसे कमाने के लिए राज्य में मरे लोगों का इलाज कागजों पर दिखाया गया और भ्रष्टाचार किया गया। मरे हुए लोगों को आयुष्मान योजना के तहत एडमिट कर पैसे निकाल लिए गए। मप्र में आयुष्मान योजना की दुर्दशा हो रही है। भ्रष्टाचारियों ने आयुष्मान भारत को भ्रष्टाचार का जरिया बना लिया है। मप्र की शिवराज सरकार ने केंद्र की प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना के नाम पर पहले तो जमकर वाहवाही लूटी। अब आयुष्मान योजना में मप्र में हुए बड़े फर्जीवाड़े का सच सामने आ रहा है। बता दें कि योजना के सबसे ज्यादा कार्डधारक भी मप्र में ही बताए गए। लेकिन अब कैग की रिपोर्ट ने जो पोल खोली है, उससे पता चलता है कि आयुष्मान योजना में मप्र में बड़ा फर्जीवाड़ा हुआ। मप्र में आयुष्मान भारत योजना के तहत मुर्दों का भी इलाज किया गया। कैग की रिपोर्ट ने मप्र के आयुष्मान में अव्वल होने की पोल खोल दी। हैरत की बात तो ये है कि 447 ऐसे पेशेंट जिनकी भर्ती होने से पहले ही मौत हो चुकी थी पर भ्रष्टाचार के पुजारियों ने डेड बॉडी को भर्ती कर लूट की ओर 1.2 करोड़ की राशि क्लेम कर दी। इतना ही नहीं एक ही मरीज का एक ही समय में एक साथ कई अस्पतालों में इलाज किया गया। 8081 मरीजों का एक ही समय में एक साथ कई अस्पतालों में इलाज करवाया, इसमें 213 अस्पताल शामिल हैं।

मप्र में करीब 25 अस्पताल ऐसे हैं जिन्होंने क्षमता से अधिक बेड ऑक्यूपेंसी दिखाई। यानी कि ज्यादा मरीजों की भर्ती दिखाकर क्लेम लिया। जवाहरलाल नेहरू कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र में 20 मार्च 2023 तक 100 बेड थे, लेकिन इसमें 233 मरीजों को दिखाया गया कैग की रिपोर्ट में सरकारी अस्पताल समेत कुल 24 अस्पतालों के नाम शामिल हैं। कैग की रिपोर्ट में कहा गया कि डिफॉल्टिंग अस्पतालों से होने वाली रिकवरी के मामले में मप्र के आंकड़े सबसे खराब है। मप्र में 96 प्रतिशत तक की रिकवरी अब तक नहीं हो पाई।

कैग की इस ऑडिट रिपोर्ट को संसद में तब पेश किया गया, जब स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्यमंत्री एसपी सिंह बघेल ने एक लिखित उत्तर में राज्यसभा को बताया कि सरकार प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना के तहत संदिग्ध लेनदेन और संभावित धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग का इस्तेमाल कर रही है। बघेल ने कहा कि इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग स्वास्थ्य देखभाल धोखाधड़ी की रोकथाम, पता लगाने और निवारण के लिए किया जाता है। उन्होंने बताया कि 1 अगस्त, 2023 तक आयुष्मान भारत योजना के तहत कुल 24.33 करोड़ कार्ड बनाए गए हैं। ऑडिट में सबसे बड़ी खामी ये उजागर हुई है कि इस योजना के तहत ऐसे मरीज इलाज करा रहे हैं जिन रोगियों को पहले मरा हुआ दिखाया गया था। लेकिन मरने के बाद भी वे इलाज कराते रहे। टीएमएस में मृत्यु के मामलों के डेटा को एनालाइज करने से पता चला कि आयुष्मान भारत योजना के तहत उपचार के दौरान 88,760 रोगियों की मृत्यु हो गई। इन रोगियों के संबंध में नए इलाज से संबंधित कुल 2,14,923 दावों को सिस्टम में भुगतान के रूप में दिखाया गया है। ऑडिट रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि उपरोक्त दावों में शामिल करीब 3,903 मामलों क्लेम की राशि का भुगतान अस्पतालों को किया गया। इनमें 3,446 मरीजों से संबंधित पेमेंट 6.97 करोड़ रुपए का था।

● **कुमार विनोद**

मप्र में लापरवाही की हद

कैग की रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि मप्र में आयुष्मान के लिए जिला स्तर पर शिकायत निराकरण समितियों का गठन नहीं किया गया। आयुष्मान योजना की सूचना शिक्षा और संवाद का प्लान तो बनाया लेकिन उसे लागू नहीं किया। प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना के सबसे ज्यादा आयुष्मान कार्ड धारक मप्र में ही हैं और यहीं पर सबसे ज्यादा लापरवाही देखी जा रही है। कैग की पैन इंडिया ऑडिट रिपोर्ट में अनियमितताओं के सबसे ज्यादा मामले मप्र के हैं। मप्र में कई संदिग्ध कार्ड और मृत लोगों की भी लाभार्थी के रूप में रजिस्ट्रेशन की जानकारी पाई गई। मरे हुए व्यक्तियों के इलाज का क्लेम करने के सबसे ज्यादा मामले देश के पांच राज्यों में देखने को मिले हैं। इनमें छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखंड, केरल और मप्र शामिल हैं। कैग की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तरह के दावों का सफल भुगतान राज्य स्वास्थ्य एजेंसियों की ओर से अपेक्षित जांचों को सत्यापित किए बिना किया जाना बड़ी चूक की तरफ इशारा करता है। ऑडिट में डेटा एनालाइज करते हुए ये भी पता चला कि इस योजना के एक ही लाभार्थी को एक ही समय में कई अस्पतालों में भर्ती किया गया। जुलाई 2020 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण ने भी इस मुद्दे को उजागर किया था।

नोटशीट का खेला

मप्र में कई मंत्रियों की नोटशीट की आड़ में कमाई का खेल चल रहा है। इस खेल में सबसे अधिक कुख्यात पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग है। विभाग में आलम यह है कि मंत्री द्वारा नोटशीट लिखवा ली जाती है, लेकिन उसके बाद खुद मंत्री को ही पता नहीं कि वे नोटशीटें कहां-कहां घूम रही हैं। स्थिति यह है कि अधिकांश नोटशीटों का जवाब तक नहीं आता है और उसमें जमकर खेल हो जाता है। पाक्षिक अक्स के पास ऐसी कई नोटशीटें हैं, जो लिखी तो गईं लेकिन उनका पालन हुआ कि नहीं यह किसी को पता नहीं। मुख्य महाप्रबंधक एमपीआरआरडीए केसी ध्रुवकर द्वारा किए गए निर्माण कार्यों में हुए भ्रष्टाचार की जांच कराने हेतु पहली नोटशीट क्रमांक-3416, दिनांक 30.11.2022 को और दूसरी नोटशीट क्रमांक-3464, दिनांक 04.12.2022 को लिखी गई। इसमें लिखा गया कि ध्रुवकर की जांच कराकर 7 दिवस में प्रतिवेदन प्रेषित करें। लेकिन उसके बाद उस नोटशीट का क्या हुआ, किसी को पता नहीं। इसी तरह मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत से उपायुक्त (विकास) के पद पर पदोन्नति में अनियमितता के संदर्भ में भीमभाई पटेल को डिमोशन के लिए मंत्री ने नोटशीट लिखी, लेकिन उस पर भी कोई कार्यवाही नहीं हुई। वहीं अमिताभ सिरवैया, शिवानी वर्मा और संदीप शर्मा को बिना कार्य के वेतन दिए जाने के मामले में मंत्री ने नोटशीट लिखी कि 7 दिन के अंदर अवगत कराएं कि बिना कार्य के भुगतान कराने के लिए कौन उत्तरदायी है। लेकिन इसका क्या हुआ, किसी को पता नहीं। इसी तरह सुनील खत्री को पदच्युत करने के लिए मंत्री ने नोटशीट लिखी थी। मंत्री की सख्त नोटशीट के बाद भी किसी पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। वहीं विधानसभा ध्यानाकर्षण में विभागीय टीप तथा ध्यानाकर्षण के संबंध में उपलब्ध कराई गई जानकारी में काफी भिन्नता पाई गई। इस पर मंत्री ने प्रमुख अभियंता ग्रामीण यांत्रिकी सेवा वीके श्रीवास्तव के खिलाफ विभागीय जांच के लिए नोटशीट लिखी, लेकिन उस नोटशीट का भी कुछ पता नहीं चला। ऐसे में लोगों का कहना है कि मंत्री से नोटशीटें केवल लोगों को ब्लैकमेल करने के लिए लिखवाई जा रही हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि विभाग में भर्राशाही तेजी से बढ़ रही है।

राजीव खरे, उपायुक्त

संजय सर्राफ, संचालक

ध्रुवकर को नियम विरुद्ध पदोन्नति

मुख्य महाप्रबंधक केसी ध्रुवकर को नियम विरूद्ध पदोन्नति का मामला भी चर्चा में है। दरअसल, मुख्य महाप्रबंधक केसी ध्रुवकर मुख्यतः ग्रामीण यांत्रिकी विभाग के हैं। परंतु ग्रामीण विकास सड़क प्राधिकरण में उन्हें प्रमुख अभियंता से मुख्य अभियंता बनाकर भेजा गया है। यह पूरा खेल विभाग करता रहता है। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री सचिवालय से अनुमति तक नहीं ली गई। इस मामले में ध्रुवकर का कहना है कि मैंने विभाग प्रमुख को आवेदन दिया था कि वरिष्ठता सूची में मेरा नाम होने के बाद भी मुझे हटाकर दूसरे को ईसी बनाया है। एक सेवानिवृत्त कार्यपालन यंत्री ने बताया कि विभाग में यह खेल खूब खेला जा रहा है। सूत्रों से पता चला है कि इस खेल के बड़े खिलाड़ी पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के उपायुक्त स्थापना राजीव खरे हैं। वे वर्षों से इस पद पर पदस्थ हैं। ये महिला एवं बाल विकास विभाग के महेंद्र द्विवेदी जो मंत्री के विशेष सहायक हैं, उनके खासमखास हैं। खरे, द्विवेदी और सर्राफ विंध्य के एक ही क्षेत्र के रहने वाले हैं और शिक्षा-दीक्षा भी एकसाथ हुई है। अब ये तीनों मिलकर विभाग को चूना लगा रहे हैं। यह हम नहीं बल्कि ये नोटशीटें बता रही हैं।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग में लालफीताशाही और भर्राशाही का आलम यह है कि संजय सर्राफ को एकसाथ तीन-तीन पदों पर पदोन्नति प्रदान कर दी गई। इस संदर्भ में मंत्री महेंद्र सिंह सिसोदिया ने अपनी नोटशीट में लिखा कि प्रथम दृष्ट्या ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सर्राफ को पदोन्नति प्रदान करने के लिए प्रत्येक स्तर पर शासन के प्रचलित नियम प्रक्रियाओं को ताक पर रखकर एक के बाद एक बाधाएं दूर कर तीन-तीन पदोन्नतियां एकसाथ प्रदान की गई हैं। मंत्री ने इस संदर्भ में 15 दिवस के अंदर जांच कर अभिमत मांगा था, लेकिन उसके बाद इसका क्या हुआ, किसी को पता नहीं।

पदोन्नति में भी गड़बड़झाला

विभाग में पदोन्नति में भी जमकर गड़बड़झाला किया जा रहा है।

नोटशीटों की जुबानी विभाग में चल रहे खेल की कहानी...

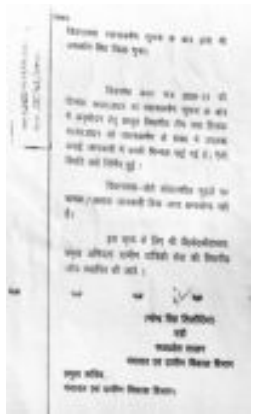

एससी/एसटी पदों के विरूद्ध सामान्य वर्ग के लोगों को पदोन्नत किया जा रहा है। वर्ष 2013 में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत से उपायुक्त विकास के पद पर पदोन्नति हेतु विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक संपन्न हुई थी। इसी प्रकार उपायुक्त से संयुक्त आयुक्त, संयुक्त आयुक्त से अतिरिक्त संचालक एवं ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के अंतर्गत सहायक यंत्री से कार्यपालन यंत्री, कार्यपालन यंत्री से अधीक्षण यंत्री के पद पर पदोन्नतियां प्रदान की गई है। इस समय उपायुक्त के सामान्य के 80 पद थे इसके विरूद्ध रमन बाधवा, नीरजा उपाध्याय, उमेश शर्मा आदि 10 अधिकारियों को अनुसूचित जाति/जनजाति के पदों के विरूद्ध सामान्य के 80 पदों से अधिक जाते हुए आरक्षण नियमों की अवहेलना करते हुए पदोन्नति प्रदान की गई।

इसी प्रकार की पदोन्नति संदीप शर्मा उपायुक्त की संयुक्त आयुक्त के पद पर की गई थी, जिसे विभागीय मंत्री के निर्देश पर निरस्त किया गया, परंतु राजेश शुक्ला संयुक्त आयुक्त की अतिरिक्त संचालक तथा इसी प्रकार ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के अंतर्गत सहायक यंत्री से कार्यपालन यंत्री के पद पर की गई नियम विरूद्ध पदोन्नति आज दिनांक तक निरस्त नहीं की गई है। भीम भाई पटेल उपायुक्त को दंडित होने के बावजूद भी संयुक्त आयुक्त के पद पर पदोन्नति प्रदान की गई थी। विभागीय मंत्री के निर्देशित करने के बाद पदोन्नति निरस्त करने की कार्यवाही प्रारंभ हुई परंतु नस्ती पैसेंजर की गति से चलने के कारण आदेश जारी नहीं हो सका है। रिटायर्ड अमिताभ सिरवैया, संयुक्त आयुक्त को 3 वर्ष तक शिवानी वर्मा एवं संदीप शर्मा को 6 माह तक बिना कार्य के वेतन भुगतान कराने के लिए उत्तरदायित्व निर्धारित करने के विभागीय मंत्री के आदेश के बावजूद भी उत्तरदायित्व निर्धारण नहीं हुआ है। अनिल भावसार, महेश श्रीवास्तव एवं नरेश रावत उपयंत्री इलेक्ट्रिक को वर्ष 2006 में इलेक्ट्रिकल सहायक यंत्री/कार्यपालन यंत्री का पद स्वीकृत न होने के बावजूद भी नियम विरूद्ध सहायक यंत्री/कार्यपालन यंत्री के पद पर पदोन्नतियां प्रदान की गई। विभागीय मंत्री के आदेश के बावजूद भी नस्ती लंबित है।

जानकारी के अनुसार विभाग में जिला पंचायतों एवं अन्य कार्यालयों में तिलहन संघ से प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत कई अधिकारियों को सामान्य प्रशासन विभाग की संविलियन की योजना 2013 के विपरीत पांचवें एवं छठवें वेतनमान का लाभ उनके अन्य विभागों में संविलियन होने के बावजूद भी अनिल द्विवेदी संयुक्त आयुक्त एवं सुधीर खांडेकर उपायुक्त द्वारा प्रदान कराया गया। इस कार्यवाही से शासन को लगभग 4 से 5 करोड़ की राशि का नुकसान हुआ है। शासन ने आउटसोर्स पर चतुर्थ श्रेणी के पद पर लेने हेतु अनुमति प्रदान की गई है परंतु विकास आयुक्त कार्यालय एवं ग्रामीण यांत्रिकी सेवा में नियमों को ताक में रखकर सहायक ग्रेड-3 के पद पर कई कर्मचारियों को आउटसोर्स पर लेकर कार्य कराया जा रहा है।

इलेक्ट्रिक का व्यक्ति सिविल की पदोन्नति

ग्रामीण यांत्रिकी सेवा में अधीक्षण यंत्री (विद्युत) का पद समाप्त होने के बावजूद नरेश रावत कार्यपालन यंत्री (विद्युत) को मुख्यालय में रिक्त पड़े अधीक्षण यंत्री (सिविल) के पद विरूद्ध प्रभारी अधीक्षण यंत्री बना दिया। नरेश रावत की विभाग में उपयंत्री (विद्युत) के पद पर नियुक्ति हुई थी। इनकी पदोन्नति जब सहायक यंत्री पर की गई थी तब भी विभाग में सहायक यंत्री (विद्युत) का पद नहीं था। उस पर सहायक यंत्री (सिविल) के पद विरूद्ध पदोन्नति कर दी गई थी। बाद में विभाग ने सहायक यंत्री (विद्युत) के पद स्वीकृत किए थे। सहायक यंत्री से कार्यपालन यंत्री के समय भी अनुसूचित जाति/जनजाति पदों के विरूद्ध पदोन्नति का लाभ दे दिया गया। ग्रामीण यांत्रिकी सेवा में जो कार्यपालन यंत्री (सिविल) के वरिष्ठता की सूची में हैं, उन्हें प्रभारी अधीक्षण यंत्री न बनाकर विद्युत के कार्यपालन यंत्री को प्रभारी अधीक्षण यंत्री बनाया गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इन्होंने कार्यपालन यंत्री पर पदोन्नति के बाद से ही कभी भी फील्ड का काम नहीं किया। इससे पूर्व मप्र ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण मुख्यालय में स्थापना प्रभारी थे। अब यह ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के मुख्यालय में स्थापना प्रभारी हैं। पूरे प्रदेश के सिविल के इंजीनियर इनका इसलिए विरोध नहीं करते हैं कि यह स्थापना प्रभारी होने से किसी भी अधिकारी के विरूद्ध कोई भी पुरानी जांच चालू करवा देते हैं।

नरेश रावत, कार्यपालन यंत्री

इनको वरिष्ठ अधिकारियों एवं मंत्री बंगले का संरक्षण प्राप्त है। यदि इनकी प्रथम नियुक्ति दिनांक से अभी तक हुई नियुक्ति एवं प्रभार की जांच लोकायुक्त जैसी संस्था से करा ली जाए तो पदोन्नति में बहुत बड़ा घोटाला उजागर हो सकता है। विभाग के प्रमुख अभियंता हरिसिंह झाणिया स्वयं सिविल से हैं। झाणिया की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्नचिन्ह लग रहा है कि इन्होंने सिविल के वरिष्ठ कार्यपालन यंत्री होते हुए भी विद्युत के कार्यपालन यंत्री को अधीक्षण यंत्री (सिविल) का प्रभार क्यों दिलवा दिया। इस मामले में झाणिया का कहना है कि नरेश को प्रभारी अधीक्षण यंत्री बनाया गया है, परंतु वह प्रशासनिक कार्य देख रहे हैं। प्रस्ताव और अनुमोदन मंत्री और एसीएस द्वारा हुआ है, वह सिविल के पद के विरूद्ध हुआ है।

फर्जी डिग्री फिर भी पद पर जमे

प्रदेश के विभिन्न विभागों में कार्यरत उपयंत्रियों ने बी टेक (सिविल) की किसी पत्राचार से उत्तीर्ण की थी। उसी के आधार पर विभागीय पदोन्नति सहायक यंत्री के पद पर हो गई। जिन उपयंत्रियों की वरिष्ठता सूची में पदोन्नति नहीं हुई वह उच्च न्यायालय गए कि जिन उपयंत्रियों की पदोन्नति की गई है उनकी बी टेक (सिविल) की डिग्री फर्जी है। न्यायालय ने अपने निर्णय में बी टेक की डिग्री फर्जी की पुष्टि कर दी गई एवं सभी को डिमोशन के लिए शासन को निर्देश दिए गए। जो उपयंत्री फर्जी डिग्री से पदोन्नति प्राप्त की थी वह उच्च न्यायालय के निर्णय के विरूद्ध उच्चतम न्यायालय की शरण में गए उस पर उच्चतम न्यायालय ने भी फर्जी डिग्री की पुष्टि कर दी। जब फर्जी डिग्री वालों को ऊपरी अदालत से भी कोई राहत नहीं मिली, तो विभाग ने इन फर्जी डिग्री वाले सहायक यंत्रियों को उपयंत्री के पद पर आदेश जारी कर दिए। इस आदेश के खिलाफ यह लोग उच्च न्यायालय गए और स्थगन आदेश ले आए। विभाग ने कभी भी स्थगन आदेश को समाप्त करने का कोई प्रयास नहीं किया। न्यायालय ने पद पर बने रहने का स्थगन आदेश दिया था। फर्जी डिग्री से पदोन्नति प्राप्त करने पर वैधानिक कार्यवाही करने से कोई रोक नहीं लगाई थी। विभाग से मिलकर इन फर्जी डिग्री उपयंत्री आज भी उच्च पद पर मप्र ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण में कार्यरत है और कुछ लोग तो सेवानिवृत्त हो चुके है।

जब इस फर्जी प्रकरण का संज्ञान मंत्रीजी को लाया गया तब मंत्रीजी ने 29/02/2020 को विभाग के लिए कार्यवाही करने हेतु लिखा गया। परंतु मंत्रीजी के आदेश के बावजूद आज तक उस नस्तीको विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने नहीं देखा। प्रभावित कर्मचारियों से प्रतिमाह तीन माह, छः माह में मंत्री बंगले के गुर्गे तथा अधिकारी इनसे वर्षों से वसूली कर रहे हैं। हरिसिंह झाणिया से पूछा जाए कि आपके विभाग में इस प्रकरण पर क्या कार्यवाही की गई है। क्या आपको इसकी जानकारी है या नहीं? कोर्ट केस की अलग शाखा होती है, जिसकी प्रतिमाह एचओडी समीक्षा बैठक में समीक्षा करनी होती है।

● जितेंद्र तिवारी

मेट्रो में इंदौर ने मारी बाजी

अभी हाल ही में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में मेट्रो मॉडल कोच का लोकार्पण किया और भोपाल मेट्रो को मंडीदीप, सीहोर तक चलाने की घोषणा की और साथ ही यह भी कहा कि इंदौर की घोषणा वहीं करूंगा। लेकिन मेट्रो ट्रेन के ट्रैक निर्माण में इंदौर ने बाजी मार ली है। इसलिए भोपाल से पहले इंदौर में मेट्रो का ट्रायल रन होगा। इंदौर में मेट्रो ट्रायल रन के लिए उल्टी गिनती शुरू हो गई है और अब एक माह से भी कम समय ही शेष है। गांधीनगर डिपो से सुपर कॉरिडोर तक 5.9 किलोमीटर के हिस्से में ट्रायल रन के पूर्व की तैयारियां अंतिम दौर में हैं। अगस्त के अंत तक अधोसंरचना संबंधित कार्य पूर्ण किए जाएंगे। वडोदरा के सांवली से मेट्रो के दो कोच 21 अगस्त को और एक कोच 22 अगस्त को सड़क मार्ग से ट्राले में इंदौर के लिए रवाना होंगे। 10 दिन में ये कोच इंदौर पहुंचेंगे। 1 या 2 सितंबर को उनकी इंदौर में मेट्रो डिपो परिसर में लोडिंग की जाएगी। चार से पांच दिन तक उनके ट्रायल किए जाएंगे।

10 सितंबर तक इंदौर में मेट्रो ट्रायल रन की तैयारी पूरी हो जाएगी। 15 सितंबर के आसपास मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की उपस्थिति में ट्रायल रन होगा। इंदौर मेट्रो के ट्रायल रन की तैयारियों के निरीक्षण के लिए मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के एमडी मनीष सिंह ने गांधीनगर मेट्रो डिपो व ट्रायल रन वाले हिस्से का निरीक्षण किया। वे मेट्रो के निर्माण कार्य की मौजूदा गति से संतुष्ट दिखे। उन्होंने कहा कि जनवरी से अभी तक मेट्रो के इंजीनियर, कंसल्टेंट व एजेंसी ने दिन-रात तेज गति से काम किया है। एमडी मनीष सिंह ने बताया कि भोपाल के मुकाबले इंदौर में पहले मेट्रो ट्रेन का संचालन शुरू होगा। गांधीनगर से रेडिसन चौराहे तक 17 किलोमीटर के हिस्से में मेट्रो का व्यावसायिक संचालन अप्रैल 2024 तक शुरू कर दिया जाएगा। उस समय ही जनता मेट्रो ट्रेन में सफर कर पाएगी। इंदौर मेट्रो के निर्माण में आईआईटी मद्रास, राइट्स व भारत सरकार की अन्य एजेंसियों का मार्गदर्शन लिया जा रहा है। इंदौर में मेट्रो के ट्रायल रन होने का मतलब यह रहेगा कि मेट्रो रेल चलाने के सारे सिस्टम स्थापित हो चुके हैं। इंदौर में मेट्रो का ट्रायन रन होने के बाद कमिश्नर ऑफ मेट्रो सेफ्टी रेल का दौरा होगा। वे मेट्रो के सुरक्षा मापदंडों की बारीकी से जांच करेंगे। इसके बाद ही व्यावसायिक संचालन के लिए अनुमति मिलेगी। इसके बाद ही आम आदमी इसमें सफर कर पाएगा।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में मेट्रो मॉडल कोच के लोकार्पण अवसर पर भोपाल मेट्रो को मंडीदीप, सीहोर तक चलाने की घोषणा की और साथ ही यह भी कहा कि इंदौर की घोषणा वहीं करूंगा। 15 सितंबर को इंदौर में मेट्रो का ट्रायल रन संभावित है, जिसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मौजूद रहेंगे और इस अवसर पर वे इंदौर मेट्रो के विस्तार की घोषणा भी कर सकते हैं, जिसमें उज्जैन के साथ देवास, धार, पीथमपुर भी संभव है, जिसको लेकर लगातार मांग जनप्रतिनिधियों द्वारा भी की जाती रही है। पिछले दिनों इसका प्रजेंटेशन भी किया गया था। महाकाल लोक बनने के कारण उज्जैन तक अवश्य मेट्रो ले जाने की मांग बढ़ गई है।

रोजाना लाखों की संख्या में धर्मालु उज्जैन जा रहे हैं, जिसके चलते अगर इंदौर से उज्जैन मेट्रो चलती है तो वह अत्यंत लाभदायक साबित हो सकती है। हालांकि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पूर्व में भी इस आशय की बात कह चुके हैं और संभव है कि अभी ट्रायल रन के अवसर पर चुनाव को देखते हुए इसकी घोषणा भी भोपाल मेट्रो की तरह कर दें। पीथमपुर, धार, देवास को भी मेट्रो से जोड़ने की मांग विशेषज्ञों, जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों द्वारा भी की जाती रही है। उल्लेखनीय है कि अभी इंदौर-भोपाल मेट्रो के प्रथम चरण का काम चल रहा है। इंदौर मेट्रो में साढ़े 5 किलोमीटर के प्रायोरिटी कॉरिडोर पर ट्रायल रन अगले माह लिया जाना है और संभवत: 15 सितंबर को यह ट्रायल रन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा किया जाएगा। मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के एमडी मनीष सिंह लगातार इसकी मॉनीटरिंग कर रहे हैं। वडोदरा से तीन कोच की एक मेट्रो ट्रेन भी रवाना हो गई है, जो आज-कल में इंदौर पहुंचने वाली है, जिसे गांधी नगर डिपो में रखा जाएगा और फिर इसी ट्रेन से ट्रायल रन होना है। अभी गांधीनगर से सुपर कॉरिडोर, एमआर-10 होते हुए विजय नगर, रेडिसन से रोबोट चौराहा तक एलिवेटेड कॉरिडोर का काम तेज गति से चल रहा है। इस 17 किलोमीटर के ट्रैक पर अगले साल अप्रैल-मई तक मेट्रो ट्रेन का व्यावसायिक संचालन शुरू हो जाएगा, यानी यात्री इसका इस्तेमाल करने लगेंगे।

● **बृजेश साहू**

अब पटरी पर दौड़ने में कोई बाधा नहीं

भोपाल मेट्रो के ट्रायल रन से पहले ट्रैक पर ट्राली रन किया गया, जिसमें भोपाल मेट्रो ट्रैक पास हो गया है, यानी मेट्रो के ट्रायल रन के लिए ट्रैक तैयार है। यह ट्राली रन सुभाषनगर से रानी कमलापति रेलवे स्टेशन (आरकेएमपी) के बीच किया गया। असल में मेट्रो के ट्रायल रन के लिए एक माह का समय शेष है। इसके लिए प्रायोरिटी कॉरिडोर में जो भी काम बचा है, उसे 20 दिन में पूरा करने का लक्ष्य रखा है। ट्रायल रन के लिए सबसे महत्वपूर्ण रेलवे ट्रैक का काम शत-प्रतिशत पूर्ण हो गया है। ट्राली का ट्रायल रन अधिकारियों के तकनीकी दल ने किया है। बता दें कि ट्रायल रन के लिए प्रायोरिटी कॉरिडोर में 4.2 किलोमीटर का एक तरफ रेलवे ट्रैक बिछाया जा चुका है। जबकि दूसरी ओर यानि कि डाउन ट्रैक में केंद्रीय विद्यालय तक ट्रैक बिछ गया है। हालांकि मेट्रो के ट्रायल रन के लिए एक तरफ का ट्रैक ही जरूरी है। वहीं ट्रैक पर ट्रेन की सिग्नलिंग के लिए 33 केवी वोल्ट की बिजली केबल बिछाने का काम प्रगति पर है, इसमें 31 अगस्त तक करंट दौड़ने लगेगा। जबकि मेट्रो स्टेशन में टिकटिंग, वेटिंग एरिया और डिपो में मेट्रो के वाशिंग एडं मेटेनेंस का कार्य बाकी है। मप्र मेट्रो रेल कार्पोरेशन के अधिकारियों ने बताया कि प्रायोरिटी कॉरिडोर में बचा हुआ काम 15 से 20 सितंबर तक पूरा करना है। सांवली गुजरात से मेट्रो की रैक भी 20 सितंबर तक भोपाल पहुंचेगी। इसके बाद 25 तारीख तक इसकी सेटिंग समेत अन्य कार्य किए जाएंगे। जबकि 25 से 30 सितंबर के बीच मेट्रो का टायल रन होगा।

जो पैमाने पर खरा उसी को टिकट

भाजपा ने भले ही 39 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर चुनावी माहौल को गरमा दिया है, लेकिन कांग्रेस इससे न हड़बड़ाई है और न ही घबराई है। कांग्रेस फूंक-फूंककर कदम बढ़ा रही है। पार्टी ने इस बार टिकट वितरण के लिए तीन प्राथमिकताएं तय कर रखी हैं। ये हैं- स्वच्छ छवि, जीतने की क्षमता और पार्टी का सर्वे। सूत्रों के अनुसार हाईकमान ने तय किया है कि जो इन 3 पैमानों पर खरा उतरेगा उसी को टिकट दिया जाएगा। इसके लिए प्रदेश कांग्रेस की संगठन और विधानसभा चुनाव को लेकर एक बड़ी बैठक 2 से 4 सितंबर के बीच भोपाल में होने जा रही है। इस बैठक में सभी जिलाध्यक्षों के साथ-साथ प्रदेश के प्रमुख पदाधिकारियों को भोपाल बुलाया है। इसमें संगठन की मजबूती को लेकर भी चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही उम्मीदवारों के नामों की पैनल में से नाम भी फाइनल किए जाएंगे, जिन्हें सीईसी को भेजा जाएगा।

कांग्रेस के प्रदेश संगठन की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ, राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह, कैंपेन समिति के अध्यक्ष कांतिलाल भूरिया और उनकी टीम, स्क्रीनिंग कमेटी के जितेंद्र सिंह, सदस्य अजय कुमार और सप्तगिरी शुक्ला विशेष तौर पर मौजूद रहेंगे। वहीं प्रदेश के प्रभारी और पर्यवेक्षक तथा कांग्रेस के महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला भी तीन दिन तक भोपाल में ही रहेंगे और विभिन्न बैठकों में भाग लेंगे। विधानसभा चुनाव के हिसाब से यह बैठक अहम मानी जा रही है और इस बैठक के पहले दो दिन संगठनात्मक चर्चा होगी। किस विधानसभा की क्या स्थिति है, इस संबंध में रिपोर्ट भी रखी जाना है। इसके बाद तीसरे दिन यानि 4 सितंबर को प्रदेश स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक होगी, जिसमें टिकट के दावेदारों के नामों पर विचार किया जाएगा। इस बैठक में नामों के पैनल पर चर्चा की जाएगी। इसके बाद सेंट्रल इलेक्शन कमेटी (सीईसी) की दिल्ली में होने वाली बैठक में नामों का पैनल या सिंगल नाम भेजे जाएंगे, जिनकी घोषणा 10 सितंबर के पहले की जाएगी।

मप्र में कांग्रेस सितंबर के दूसरे सप्ताह में 103 सीटों के टिकट घोषित करने की तैयारी कर रही है। इसके लिए प्रक्रिया तेज कर दी गई है। मप्र के इंचार्ज जनरल सेक्रेटरी रणदीप सिंह सुरजेवाला और स्क्रीनिंग कमेटी के चेयरमैन भंवर जितेंद्र सिंह ने प्रदेश के 63 जिला प्रभारियों और जिलाध्यक्षों से प्रत्येक विधानसभा से दावेदारों के नाम बंद लिफाफे में मांगे हैं। साथ ही इलेक्शन कमेटी के चेयरमैन कमलनाथ से 230 विधानसभा सीटों के प्रत्याशियों के नाम मांगे हैं। प्रत्येक सीट से एक और दो नाम तय कर स्क्रीनिंग कमेटी में रखे जाएंगे। इनमें से सिंगल नाम तय कर सेंट्रल इलेक्शन कमेटी (सीईसी) के पास भेजे जाएंगे और अंतिम सूची जारी कर दी जाएगी। जिला प्रभारी, जिलाध्यक्ष और इलेक्शन कमेटी द्वारा तीन अलग-अलग बंद लिफाफे में दिए गए दावेदारों के नाम देखे जाएंगे। इन सूचियों में जो कॉमन सशक्त दावेदारों के नाम रहेंगे, उनमें से नाम छांटे जाएंगे। इन नामों को स्क्रीनिंग कमेटी की मीटिंग में रखा जाएगा।

230 सीटों के लिए टिकट देने में एआईसीसी के दो और पीसीसी का एक सर्वे भी अहम रहेगा। कांग्रेस टिकटों के बंटवारे के मामले में गंभीर है। पार्टी साफ छवि और जीतने वाले उम्मीदवारों को टिकट देने के पक्ष में है। लगातार हार रही 66 सीटों पर पहले नाम घोषित कर दिए जाएंगे, ताकि प्रत्याशियों को प्रचार के लिए पर्याप्त समय मिल जाए। इन सीटों पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के द्वारा भेजे गए पर्यवेक्षकों ने दावेदारों से नाम लिए थे और उन्हें पीसीसी को सौंप दिया गया है। कर्नाटक पैटर्न पर मप्र में प्रत्येक विधानसभा में दावेदारों को नारी सम्मान योजना के फॉर्म आम जनता के बीच भरवाने के लिए कहा गया है। इस फार्म में कांग्रेस की प्रदेश में सरकार बनने पर पांच गारंटियों का उल्लेख है। इनमें महिलाओं को हर महीने 1500 रुपए, पुरानी पेंशन, किसान कर्जमाफी, 100 यूनिट का बिजली बिल माफ और 200 यूनिट का हाफ, सामाजिक पेंशन की राशि 600 रुपए से बढ़ाकर 1000 रुपए किया जाना शामिल है। ये आवेदन 2 सितंबर के पहले जमा करने को कहा है। जितने ज्यादा आवेदन जिस उम्मीदवार के द्वारा भरवाए जाएंगे, उससे टिकट की प्राथमिकता तय होगी।

● **अरविंद नारद**

सभी समीकरणों का होगा आंकलन

दरअसल, प्रदेश की राजनीति में अब तक टिकट वितरण का काम चुनाव आयोग द्वारा कार्यक्रम घोषित होने के बाद होता था और अनेकों बार तो नामांकन पत्र दाखिल करने की आखिरी तारीख तक सूचियां आती थीं लेकिन इस बार जल्दी टिकट घोषित करने के लिए प्रयास तेज हो गए हैं बल्कि भाजपा ने 103 आकाशी सीटों में से 39 सीटों पर प्रत्याशी घोषित कर दिए हैं और शेष सीटों पर जल्दी ही प्रत्याशी घोषित करने जा रही है। इससे कांग्रेस पर दबाव है। ऐसे में कांग्रेस की रणनीति 2 से 4 सितंबर के बीच राजधानी भोपाल में बनाई जाएगी। जिसमें कांग्रेस के सभी बड़े नेता और जिला अध्यक्ष भी बुलाए गए हैं। प्रभारी और पर्यवेक्षक पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला भी 3 दिन राजधानी भोपाल में रहेंगे। पहले 2 दिन संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा होगी। प्रत्येक विधानसभा की बूथ स्तर तक जमावट का जायजा लिया जाएगा। तीसरे दिन 4 सितंबर को प्रदेश स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक होगी जिसमें टिकट के दावेदारों के नाम पर विचार किया जाएगा। सर्वे रिपोर्ट और नेताओं की राय के आधार पर कोशिश की जाएगी कि अधिकांश सीटों पर सिंगल नाम तय करके सेंट्रल इलेक्शन कमेटी को भेजे जाएं, लेकिन विवाद की स्थिति में पैनल बनाकर भेजा जाएगा। पार्टी की कोशिश होगी कि 10 सितंबर के पहले अधिकांश प्रत्याशियों की घोषणा कर दे। कुल मिलाकर प्रदेश की सियासत में सितंबर का महीना बेहद महत्वपूर्ण होने जा रहा है, जिसमें दोनों ही दलों के न केवल अधिकांश प्रत्याशी तय हो जाएंगे। बल्कि रणनीति भी अंतिम रूप ले लेगी। जैसे कि संभावनाएं जताई जा रही हैं कि इस बार दीपावली के पहले भी विधानसभा के चुनाव हो सकते हैं। इस कारण चुनाव आयोग के साथ-साथ दलों की तैयारी भी तेज हो गई है। अब देखना होगा कि सितंबर किसके लिए सितम और किसके लिए रहम देकर जाएगा।

बनने लगी हेरिटेज शराब

उत्पादन, टेस्टिंग और नई शराब नीति पर खरा उतरने के बाद महुए से बनी हेरिटेज शराब मोंड की बिक्री शुरू हो गई है। जल्द ही यह शराब प्रदेशभर में सुरा प्रेमियों को मिलने लगेगी। यानी अब वे महुए से निर्मित हेरिटेज शराब का सेवन कर पाएंगे। करीब डेढ़ साल के लंबे इंतजार के बाद प्रदेश में हेरिटेज शराब की बिक्री शुरू हो गई है। अभी हेरिटेज शराब पर्यटन विकास निगम के बार में और एंबी वाइन्स की शॉप पर उपलब्ध है। लेकिन जानकारों का कहना है कि यह जल्द ही बाजार में मिलने लगेगी। प्रदेश की केवल 89 आदिवासी विकास खंडों में आदिवासी सोसाइटी समूह ही इसका उत्पादन कर पाएंगे। बिक्री के लिए यह दूसरों की मदद ले सकेंगे। अभी अलीराजपुर में इसका उत्पादन शुरू है। गौरतलब है कि नई शराब नीति लागू होने के बाद से ही सुरा प्रेमियों को इस हेरिटेज शराब का इंतजार है। लेकिन सरकार इसको बाजार में उतारने से पहले पूरी तरह परख लेना चाहती थी। इसलिए इसके निर्माण और टेस्टिंग पर विशेष ध्यान दिया गया। अब सारे पैमाने पर खरा उतरने के बाद यह शराब बिक्री के लिए तैयार है। यह शराब दो तरह की पैकिंग में उपलब्ध है। हेरिटेज शराब के 180 मिलीलीटर क्वार्टर की कीमत 200 रुपए और 750 मिलीलीटर बॉटल की कीमत 800 रुपए है।

दरअसल, सरकार ने जनवरी, 2022 में हेरिटेज मदिरा नीति को मंजूरी दी थी। हेरिटेज मदिरा नीति में अलीराजपुर और डिंडोरी में हेरिटेज शराब निर्माण के लिए पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने का प्रावधान किया गया है। इसके बाद से हेरिटेज शराब के निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। हर स्तर पर टेस्टिंग के बाद जब सरकार पूरी तरह से संतुष्ट हो गई, तो अब जाकर अलीराजपुर की डिस्टलरी से शराब का व्यावसायिक उत्पादन शुरू हो पाया है। शराब का निर्माण आदिवासी स्व सहायता समूह कर रहा है। अभी डिंडोरी की डिस्टलरी से हेरिटेज शराब का उत्पादन शुरू नहीं हो पाया है। बता दें कि सरकार ने टेस्ट ट्रायल के तौर पर प्रदेश के दो जिलों अलीराजपुर और डिंडोरी में प्लांट लगाए थे। आबकारी विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सरकार ने हेरिटेज शराब का उत्पादन एक पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर 2 जिलों में लगाया था, जो सफल रहा। इसकी क्षमता को लेकर यह स्पष्ट कर दिया गया है कि 1 दिन में भले ही दो या तीन मशीनें शराब बनाए, लेकिन इसकी मात्रा एक बार में एक हजार लीटर से अधिक नहीं होगी। नए नियमों के अनुसार आदिवासी व स्वसहायता समूह को ही लाइसेंस के लिए पात्र माना जाएगा। लाइसेंस लेने के बाद ब्रांडिंग व अन्य सहायता के लिए स्वसहायता समूह या बाहरी व्यक्ति से एग्रीमेंट कर सकता है। इसके अलावा कंपोजिट, देशी या विदेशी शराब की दुकानों पर यह नहीं मिलेगी। वाइन शॉप के साथ हेरिटेज शराब सिर्फ पर्यटन निगम के बाहर वाणिज्य बार में मिलेगी। बोतल भराई शुल्क, निर्यात शुल्क और परिवहन शुल्क के लिए सरकार कोई शुल्क नहीं लेगी। हेरिटेज शराब ड्यूटी फ्री होगी। केवल बोतलबंद और लेबल युक्त हेरिटेज मदिरा के भारत के अंदर निर्यात की अनुमति दी जाएगी। खुली हेरिटेज मदिरा का केवल भारत के बाहर निर्यात किया जा सकेगा। आबकारी आयुक्त ही निर्यात की अनुमति देंगे। आबकारी आयुक्त हेरिटेज शराब के भंडारण के लिए देशी, विदेशी शराब के भंडागारों में इसके निशुल्क या सशुल्क भंडारण की अनुमति दे सकेंगे।

हेरिटेज शराब का निर्माण महुए के फूलों से किया जाता है। यह दुनिया की एकमात्र शराब है, जो फूलों से बनाई जाती है। इस शराब में मिथाइल एल्कोहल नहीं होता, जो शरीर को नुकसान पहुंचाता है। अन्य सभी प्रकार की शराब में मिथाइल एल्कोहल होता है। सरकार का सबसे ज्यादा फोकस शराब की शुद्धता पर है। इसके निर्माण में किसी भी तरह के कैमिकल का प्रयोग नहीं किया जा रहा है। डिस्टलरी में हाईजीन पर पूरा फोकस है। सरकार की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हेरिटेज शराब की ब्रांडिंग की योजना है। सरकार का मानना है कि महुए से शराब का निर्माण सिर्फ मप्र में किया जा रहा है। यदि शराब की ठीक से ब्रांडिंग की जाए, तो हेरिटेज शराब देश-दुनिया में मप्र की पहचान बन सकती है। सरकार ने शराब बनाने वाले स्व-सहायता समूह को एक साल तक वैट से और पांच साल तक एक्साइज ड्यूटी से छूट दी है। साथ ही उद्योग विभाग की अपात्र सूची से शराब को बाहर किया गया है, ताकि स्व-सहायता समूहों को औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन के अंतर्गत अनुदान मिल सके। उप सचिव वाणिज्यिक कर विभाग आरपी श्रीवास्तव का कहना है कि हेरिटेज शराब की बिक्री शुरू कर दी गई है। राज्य सरकार भले ही प्रदेश में नई शराब की दुकानें नहीं खोल रही, लेकिन हेरिटेज शराब की बिक्री के बहाने नए आउटलेट प्रदेश भर में शुरू किए जा सकेंगे। एयरपोर्ट से लेकर एमडी के वाइन के आउटलेट और बार में हेरिटेज शराब की बिक्री हो सकेगी। बोतलों पर सरकार यह चेतावनी भी देगी कि शराब पीकर वाहन न चलाएं। निर्माण से लेकर आउटलेट तक के लिए 5000 रुपए तक लाइसेंस शुल्क चुकाना होगा।

● **राकेश ग्रोवर**

सभी जिलों में बिकेगी हेरिटेज शराब

मप्र की केवल 89 आदिवासी विकास खंडों में आदिवासी सोसाइटी समूह ही हेरिटेज शराब का उत्पादन कर पाएंगे। बिक्री के लिए यह दूसरों की मदद ले सकेंगे। अभी अलीराजपुर में इसका उत्पादन शुरू है। राज्य सरकार भले ही प्रदेश में नई शराब की दुकानें नहीं खोल रही, लेकिन हेरिटेज शराब की बिक्री के बहाने नए आउटलेट प्रदेश भर में शुरू किए जा सकेंगे। एयरपोर्ट से लेकर एमडी के वाइन के आउटलेट और बार में हेरिटेज शराब की बिक्री हो सकेगी। बोतलों पर सरकार यह चेतावनी भी देगी कि शराब पीकर वाहन न चलाएं। बता दे मप्र सरकार ने टेस्ट ट्रायल के तौर पर प्रदेश के दो जिलों डिंडोरी और अलीराजपुर में प्लांट लगाए थे। आबकारी विभाग के अधिकारी सचिंद्र मोरी ने बताया कि सरकार ने हेरिटेज शराब का उत्पादन एक पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर 2 जिलों में लगाया था, जो सफल रहा। इसकी क्षमता को लेकर यह स्पष्ट कर दिया गया है कि 1 दिन में भले ही दो या तीन मशीनें शराब बनाए, लेकिन इसकी मात्रा एक बार में एक हजार लीटर से अधिक नहीं होगी।

जीवनभर 'राज' करने वाले अब राजनीति में

मप्र में विधानसभा चुनाव के लिए सियासी दल अपनी तैयारियों को धार देने में लगे हैं। वहीं जीवन भर राज करने वाले नौकरशाहों की नजर भी विधानसभा चुनाव पर है। अलग-अलग पेशे से जुड़े अफसर इस बार चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी में हैं। कोई भाजपा और कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने की तैयारी में है, तो कोई इन दोनों दलों को टक्कर देने के लिए तीसरे दल के साथ जा रहा है। प्रदेश में दो दर्जन सीटों पर प्रशासनिक सेवा से जुड़े अफसर चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं। इसमें कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर, आईएफएस, डॉक्टर, प्रोफेसर आईपीएस अफसर शामिल हैं। वहीं कुछ अपनी नई पार्टी बनाकर राजनीति कर रहे हैं।

राजनीति का आकर्षण ही कुछ ऐसा है, जिसमें हर कोई हाथ आजमाना चाहता है। राजनीति के बदलते दौर में नौकरशाहों की रूचि बढ़ रही है। यही वजह है कि सेवानिवृत्ति के बाद अधिकारी बिना देरी किए राजनीतिक दलों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ रहे हैं। चुनावी साल में आधा दर्जन से ज्यादा सेवानिवृत्त अधिकारी कांग्रेस, भाजपा की सदस्यता ले चुके हैं। हालांकि इनमें भाजपा से जुड़ने वालों की संख्या ज्यादा है। जबकि कई अधिकारी ऐसे हैं, जो राजनीतिक दलों के साथ अनौपचारिक रूप से जुड़े हैं। राजनीतिक दलों को भी प्रशासनिक कार्य की दृष्टि से सेवानिवृत्त अधिकारियों की जरूरत होती है। प्रदेश की दोनों प्रमुख पार्टियों भाजपा और कांग्रेस में घोषणा पत्र बनाने की जिम्मेदारी नौकरशाहों के पास है। मौजूदा स्थिति में कांग्रेस के चुनावी वचन पत्र और भाजपा के दृष्टि पत्र दो सेवानिवृत्त अधिकारियों की निगरानी में तैयार हो रहे हैं। कांग्रेस के वचन पत्र का काम वीरेंद्र बाथम देख रहे हैं, जबकि भाजपा का दृष्टि पत्र कवींद्र कियावत तैयार करा रहे हैं। विधानसभा चुनाव 2023 में मप्र में कई अधिकारी ऐसे हैं जो भाजपा से टिकट की दावेदारी के लिए गोटियां फिट कर रहे हैं। श्याम सिंह कुमरे सिवनी जिले की बरघाट सीट से दावेदारी कर रहे हैं। वेदप्रकाश जबलपुर पश्चिम से दावेदारी कर सकते हैं। 15 दिन पहले सेवानिवृत्त हुए आईपीएस पवन जैन राजस्थान भाजपा में शामिल हो गए हैं। हालांकि कुछ अधिकारी ऐसे भी हैं जो अन्य दलों के साथ जुड़े हैं। जबकि राज्य प्रशासनिक एवं अन्य सेवाओं के अधिकारी भी राजनीति में आने का रास्ता खोज रहे हैं। जबकि आधा दर्जन से ज्यादा अधिकारियों की पत्नियां राजनीतिक दलों के साथ जुड़ी हैं और चुनाव में टिकट की दावेदारी भी कर रही हैं। राजनीतिक दलों के साथ जुड़ने वाले कुछ सेवानिवृत्त अधिकारियों के खिलाफ लोकायुक्त एवं ईओडब्ल्यू में जांच चल रही है। इनमें से कुछ के खिलाफ भ्रष्टाचार की गंभीर शिकायत है। सेवा में रहते हुए भी गंभीर आरोप लगे थे। हालांकि राजनीतिक दलों से जुड़ने के बाद इन अधिकारियों के खिलाफ जांच की गति मंद हो जाती है।

कांग्रेस के लिए कर रहे काम

प्रदेश में कई अफसर ऐसे हैं जो कांग्रेस के लिए काम कर रहे हैं या कांग्रेस के टिकट से चुनाव लड़ना चाहते हैं। आईएएस वीरेंद्र कुमार बाथम प्रमुख सचिव से सेवानिवृत्ति होने के बाद कांग्रेस से जुड़ गए। उन्होंने 2018 के चुनाव में वचन पत्र तैयार करने में भूमिका निभाई। 2023 के चुनाव के लिए भी वचन पत्र तैयार करवा रहे हैं। आईएएस अजिता वाजपेयी अपर मुख्य सचिव से सेवानिवृत्त होने के बाद कांग्रेस में शामिल हो गईं। वे प्रशासनिक सलाहकार की भूमिका में हैं। साथ ही वचन पत्र समिति में भी शामिल हैं। आईपीएस एमपी वरकड़े डीआईजी पद से सेवानिवृत्त होने के बाद कांग्रेस में शामिल हो गए। 2018 में कांग्रेस से टिकट की दावेदारी की। इस बार फिर दावेदार हैं। आईएफएस आजाद सिंह डबास भारतीय वन सेवा के अधिकारी रहे हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद कांग्रेस में शामिल हो गए। कांग्रेस ओबीसी विभाग के संयोजक बने। हालांकि बाद में कांग्रेस छोड़ दी। उपरोक्त अफसरों के अलावा कई अन्य अफसर भी हैं जो राजनीतिक पारी खेलने के लिए तैयार हैं इनमें किसी ने अपनी पार्टी बना ली है तो कोई अन्य संगठन से जुड़ गया है। वरद मूर्ति मिश्रा आईएएस की नौकरी छोड़ राजनीतिक पार्टी बना चुके हैं। वे सभी 230 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का भी ऐलान कर चुके हैं।

प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा के साथ अफसरों का बड़ा वर्ग जुड़ रहा है। अभी तक कई अधिकारी भाजपा के साथ जुड़ गए हैं, वहीं कई कवायद में लगे हुए हैं। आईएएस महेश चंद्र चौधरी सेवानिवृत्त होने के बाद भाजपा में शामिल हो गए। ये छिंदवाड़ा कलेक्टर और जबलपुर संभागायुक्त रहे हैं। वहीं आईएएस एसएन सिंह चौहान वर्तमान में भाजपा के सदस्य हैं। पार्टी कार्यालय में अक्सर देखे जाते हैं। कुछ महीने पहले विचार मंच पर प्रदेश के सेवानिवृत्ति आईएएस एवं आईपीएस अफसरों को एकजुट करने का काम किया था। आईएएस एसएस उप्पल भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष नंदकुमार चौहान के समय भाजपा से जुड़े। वर्तमान में भाजपा विधि एवं विधायी कार्य एवं निर्वाचन संबंधी कार्य के प्रदेश संयोजक हैं। आईएएस कवींद्र कियावत भोपाल संभागायुक्त से सेवानिवृत्त होकर भाजपा से जुड़े। उज्जैन समेत कई जिलों में कलेक्टर रह चुके हैं, अब मप्र की घोषणा समिति में मुख्य भूमिका में हैं। आईएएस भागीरथ प्रसाद सेवानिवृत्ति के बाद कांग्रेस से जुड़े 2014 के विधानसभा चुनाव में भिंड से कांग्रेस का टिकट तय होने के बाद भाजपा में आए और सांसद बने। आईएएस श्याम सिंह कुमरे सेवानिवृत्ति के बाद अपने गृह जिले सिवनी में जनजातियों के बीच सक्रिय हुए। पिछले तीन साल से जनजाति कल्याण से जुड़ी संस्थाओं में काम कर रहे हैं। वर्तमान में बरघाट सीट से भाजपा से टिकट की दावेदारी भी कर रहे हैं। आईएएस पन्नालाल सोलंकी सेवानिवृत्ति के बाद भाजपा से जुड़ गए। आमतौर पर सरकार एक अधिकारी को एक ही जिले का दोबारा कलेक्टर नहीं बनाती है, लेकिन पन्नालाल सोलंकी श्योपुर जिले के दो बार कलेक्टर रहे। सोलंकी ने जनजाति बाहुल्य विजयपुर सीट से टिकट की दावेदारी की थी। आईएएस रविंद्र मिश्रा पन्ना कलेक्टर रहे हैं। वे चंबल संभागायुक्त रहने के बाद रिटायर हुए। भाजपा के साथ हैं। पन्ना कलेक्टर रहते कई बार विवादों में रहे। आईएएस वेदप्रकाश शर्मा जबलपुर नगर निगम के आयुक्त रहे हैं। सेवानिवृत्ति के बाद जबलपुर में हैं। वहां से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। राजनीतिक दल में शामिल होने की तैयारी कर रहे हैं। आईपीएस पवन जैन पिछले महीने 31 जुलाई को भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं। उन्होंने गत दिनों राजस्थान धौलपुर जिले की राजाखेड़ा विधानसभा क्षेत्र में भाजपा की सदस्यता ली। वहीं से टिकट की दावेदार करेंगे। ईएनसी जीएस डामोर वर्तमान में झाबुआ से भाजपा के सांसद हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद भाजपा से जुड़े। वे 2018 झाबुआ से विधायक बने, फिर 2019 में सांसद बने।

● धर्मेंद्र सिंह कथूरिया

गणपति बिल्डर्स और टीएनसीपी की सांठगांठ

पटवारी के अक्स में बेखौफ कर दी कूटरचना

मानचित्र दिनांक 08.11.2006 में दर्शाए गए पटवारी के खसरा अक्स प्लान में खसरा क्र. 137, 138 के मध्य के सरकारी रास्ते को खत्म करके बिल्डर ने उस पर प्लाटिंग कर दी। सीमांकन अनुमोदित मानचित्र 15.05.2008 में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर है। एफआईआर से बचने के लिए कराए गए संशोधित मानचित्र दिनांक 11.11.2020 में सरकारी रास्ते को बरकरार तो कर दिया गया परंतु उसका आकार मनमर्जी मुताबिक तब्दील करके सीधा कर दिया गया। इसके अतिरिक्त संशोधित मानचित्र में अयोध्या बाईपास रोड से शुरू होने वाले सरकारी रास्ते को मनमाने तरीके से तब्दील कर दिया गया है जिससे बिल्डर के व्यवसायिक एरिया बढ़ने के साथ-साथ आवासीय प्लाट्स के आकार और साइज में भी अंतर आया है। इस अवैधानिक कृत्य से विनोद सिंह और अरूणा सिंह ने मिल-जुलकर सांठगांठ करके करोड़ों रुपयों का अनुचित लाभ ले लिया।

भोपाल में टीएनसीपी के अफसरों और बिल्डरों की सांठगांठ किसी से छिपी नहीं है। ऐसी ही एक सांठगांठ का मामला सामने आया है, जिसमें गणपति बिल्डर्स टीएनसीपी के अफसरों के साथ सांठगांठ कर कॉलोनी का निर्माण कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार ओम कन्स्ट्रक्शन एंड बिल्डर्स पार्टनर विनोद सिंह और अरूणा सिंह वर्ष 2006 से ग्राम दामखेड़ा तहसील हुजूर अयोध्या बाईपास रोड भोपाल में 14.59 एकड़ भूमि पर ईको ग्रीन पार्क कॉलोनी का निर्माण कर रहे हैं। कॉलोनी के मध्य में स्थित 0.78 एकड़ अपनी भूमि पर यह दोनों गणपति ईको नाम की कॉलोनी भी बना रहे हैं जिसे ईको ग्रीन पार्क के अनुमोदित मानचित्रों में अन्य की भूमि के रूप में दर्शाया गया है। इनके पुत्र अभिराज सिंह गणपति ग्रुप के सभी कार्यों का संचालन करते हैं। इन लोगों ने दस्तावेजों में कूटरचना, तब्दिली, हेराफेरी करके विभिन्न विभागों से सांठगांठ और मिल-जुलकर अनुमतियां प्राप्त करने में महारथ हासिल की हुई है। इनके सभी प्रोजेक्ट्स में किए गए कारनामों का दस्तावेजी सबूतों सहित एक सीरीज के तौर पर हम खुलासा करने जा रहे हैं। सभी दस्तावेजों की एक प्रतिलिपि हमारे कार्यालय में सुरक्षित है।

ओम कन्स्ट्रक्शन एंड बिल्डर्स को उनकी 23 खसरों में ग्राम दामखेड़ा अयोध्या बाईपास रोड तहसील हुजूर भोपाल में स्थित 14.59 एकड़ भूमि पर कार्यालय नगर तथा ग्राम निवेश, जिला भोपाल (टीएनसीपी) से पहला मानचित्र अनुमोदन पत्र क्र. 3470 से 3472/एल.पी. 169/29/जिका/नग्रानि/2006 भोपाल दिनांक 08.11.2006 द्वारा प्रदान किया गया। इस मानचित्र अनुमोदन में विनोद सिंह और अरूणा सिंह ने हल्का पटवारी अक्स में कूटरचना करके एक सरकारी रोड पर तो प्लाटिंग ही कर दी और दूसरी सरकारी रोड को अपनी मनमर्जी मुताबिक बदली करके उसकी निरंतरता को ही खत्म करके बंद कर दिया।

उल्लेखनीय है कि टीएनसीपी के निर्देशानुसार प्रोजेक्ट का सीमांकन प्लान अनुमोदन एक महीने के अंदर यानि दिनांक 08.12.2006 से पहले किया जाना था परंतु यह सीमांकन अभिन्यास अनुमोदन के लगभग 18 माह बाद किया गया। मजेदार बात यह है कि बिल्डर्स ने सीमांकन अनुमोदन के लिए आवेदन ही दिनांक 16.01.2008 को किया। यह भी जानना महत्वपूर्ण है कि अभिन्यास अनुमति का संयुक्त सीमांकन, राजस्व निरीक्षक और टीएनसीपी के अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से किया जाना आवश्यक है और यह संयुक्त सीमांकन अनुमोदित मानचित्र ही मान्य अनुमति होती है। टीएनसीपी कार्यालय के पत्र क्र. 1210 से 1213 दिनांक 15.05.2008 द्वारा सीमांकन प्लान का नक्शा अनुमोदित किया गया। जनवरी 2020 में कलेक्टर भोपाल के आदेश पर विनोद सिंह पर पुलिस स्टेशन छोला मंदिर में एफआईआर नंबर 0087 दिनांक 31.01.2020 धारा 420 और 447 में दर्ज की गई। अभिन्यास अनुमति दिनांक 08.11.2006 के अनुसार अभिन्यास में प्रश्नाधीन स्थल की सीमा तक दर्शाए गए मार्गों की निरंतरता सुनिश्चित किया जाना अनिवार्य होगा। अत: स्थल पर स्थित मार्गों को गेट अथवा बाउंड्रीवाल से अवरूद्ध न किया जाए जिसे मान्य नहीं किया जाएगा। परंतु बिल्डर ने न केवल मार्गों की निरंतरता को खत्म किया, सरकारी मार्गों में मनचाही तब्दीलियां कीं बल्कि एक सरकारी रास्ते को पूरी तरह से कब्जा करके उस पर प्लाटिंग भी कर दी। बिल्डर विनोद सिंह ने इस धोखाधड़ी, सरकारी भूमि पर अतिक्रमण आदि इत्यादि से बचने के लिए पत्र क्र. बीपीएलएलपी-5682/एल.पी./109/29(3)/जि.का./न.ग्रा.नि./2020 दिनांक 11.11.2020 को कॉलोनी का मानचित्र संशोधित करवाया।

संशोधित मानचित्र में इन लोगों द्वारा दिनांक 08.11.2006 के नक्शे में सरकारी रास्ते पर कब्जा करके की गई प्लाटिंग को हटाकर फिर से सरकारी मार्ग दर्शा दिया परंतु न तो कॉलोनी के प्लाट कम हुए न ही उनका आकार और साइज बदली हुआ। सीमांकन उपरांत सत्यापित मानचित्र दिनांक 15.05.2008 में यह सरकारी रास्ता दर्शाया गया है (फ्लैग क्र. 2)। परंतु कलेक्टर के आदेश पर की गई इस एफआईआर में भी पुलिस स्टेशन छोला मंदिर द्वारा एफआईआर लगा दी गई है। उल्लेखनीय है कि अभिन्यास अनुमति दिनांक 08.11.2006 और 15.05.2008 कुल 23 खसरों की 14.59 एकड़ भूमि पर प्रदान की गई परंतु संशोधित अभिन्यास अनुमति दिनांक 11.11.2020 इन्हीं 23 खसरों की कुल 14.57 एकड़ पर प्रदान की गई। तीनों अभिन्यास अनुमतियों में कुल 23 खसरे ही हैं, खसरा क्रमांक भी तीनों अभिन्यास अनुमतियों में एक ही है परंतु बिल्डर ने टीएनसीपी के अधिकारियों के साथ मिलकर सांठगांठ करके बिना ईको ग्रीन पार्क के रहवासियों को सूचना/जानकारी दिए इन खसरों के रकबों को 14.59 एकड़ से 14.57 एकड़ कर दिया यानि ईको ग्रीन पार्क प्रोजेक्ट की 871.2 वर्गफीट भूमि कम कर दी गई। इस 871 वर्गफीट भूमि को इसी बिल्डर विनोद सिंह ने अपने दूसरे नए प्रोजेक्ट गणपति ईको में अवैधानिक रूप से जुड़वाकर लगभग 50 लाख रुपए का फायदा उठा लिया। गौरतलब है कि संशोधित मानचित्र दिनांक 11.11.2020 के पैराग्राफ 6 के अनुसार धारा 29(3) में संशोधन केवल अभिन्यास में दर्शित ए-बी-सी-डी पार्ट पर 7.50 मीटर शासकीय मार्ग हेतु किया गया है। परंतु संशोधित मानचित्र में शासकीय मार्ग में संशोधन के अतिरिक्त अन्य संशोधन जैसे शासकीय रास्ते में अपनी सुविधा अनुसार प्लाट्स की संख्या और साईज बढ़ाने के उद्देश्य से बदलाव, नक्शे में दर्शित अन्य की भूमि जिसके भूमि स्वामी यही बिल्डर हैं, में अन्य की भूमि के साइज और आकार को बढ़ाने के उद्देश्य से बदलाव और पुराने अनुमोदित नक्शे से अलग प्लाट्स की संख्या और साइज में बदलाव इत्यादि भी स्पष्ट्तया दृष्टिगोचर हैं। तीनों अनुमोदित मानचित्रों में अन्य की भूमि का आकार और साइज अलग-अलग है। उल्लेखनीय है कि यह अन्य की भूमि अरूणा सिंह की है जो कि ओम कन्स्ट्रक्शन एंड बिल्डर की दूसरी पार्टनर हैं। इस अन्य की भूमि का आकार और साइज बदली होने से ओम कन्स्ट्रक्शन एंड बिल्डर्स को लाखों

रुपयों का नाजायज फायदा पहुंचा है। सीमांकन उपरांत अनुमोदित मानचित्र दिनांक 15.05.2008 में अन्य की भूमि का आकार और साइज सही है परंतु संशोधित मानचित्र दिनांक 11.11.2020 में अन्य की भूमि के आकार और साइज को बढ़ा दिया गया है जिससे बिल्डर को करोड़ों रुपयों का अनुचित लाभ पहुंचा है। स्मरण रहे कि इस अन्य की भूमि में यही बिल्डर गणपति ईको नाम की आवासीय परियोजना का निर्माण कर रहे हैं।

अभिन्यास अनुमतियों में टीएनसीपी के निर्देशानुसार अनुज्ञा जारी होने के दिनांक से तीन वर्ष तक की कालावधि तक प्रवृत्त रहेगी परंतु 2006 से 2020 तक की अवधि के दौरान बिल्डर विनोद सिंह और अरूणा सिंह बिना परमिशन के ही इस कॉलोनी का निर्माण करते रहे। यह भी गौरतलब है कि बिल्डर की एक सगी नजदीकी रिश्तेदार नगर निगम भोपाल में चीफ सिटी प्लानर तथा टीएनसीपी भोपाल में ज्वाइंट डायरेक्टर रहीं हैं, जिनके दम पर ही यह बिल्डर इतनी बड़ी कूटरचनाएं करने के बावजूद भी आज तक कानून के शिकंजे से बाहर है। संयुक्त रूप से स्थल सीमांकन और सत्यापन किए गए प्लान को ही वास्तविक नक्शा माना जाता है। परंतु इस सीमांकित और सत्यापित नक्शे को बिल्कुल नजरअंदाज करते हुए टीएनसीपी के संबंधित अधिकारियों ने संयुक्त सीमांकन बगैर असत्यापित मानचित्र दिनांक 08.11.2006 के आधार पर ही मानचित्र संशोधन दिनांक 11.11.2020 कर दिया जिससे बिल्डर विनोद सिंह और अरूणा सिंह द्वारा की गई कूटरचनाएं धोखाधड़ी और हेराफेरी पर इन अधिकारियों ने अपने भ्रष्टाचार की मोहर लगाकर इन लोगों को करोड़ों रुपयों का फायदा भी पहुंचा दिया। अभिन्यास अनुमति दिनांक 08.11.2006 में अयोध्या बाईपास रोड पर सरकारी रास्ते के उत्तर पश्चिम में प्रदान किए गए एरिया फोर कन्वीनेंट शॉप्स (प्लाट नं. 1 से 9 तक) का आकार और साइज संशोधित अभिन्यास अनुमति दिनांक 11.11.2020 में बदली कर दिया गया है जिसके कारण बिल्डर को करोड़ों रुपयों का अवैधानिक लाभ पहुंचा है। इस एरिया में ही बिल्डर द्वारा होटल श्रीजी का संचालन नगर निगम की अनुमति के बिना किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त संशोधित अभिन्यास दिनांक 11.11.2020 में कोलुआ कलां रोड पर प्लाट नं. 337 से 348 में प्रदान किए गए एरिया फोर कन्वीनेंट शॉप्स को भी खत्म कर दिया गया है। जबकि प्लाट नं. 337 से 348 तक के प्लाट्स के आकार और साइज में तब्दीली करके लगभग सभी को व्यवसायिक शॉप्स के तौर पर बेचकर उसकी रजिस्ट्री भी करवाई जा चुकी है। उल्लेखनीय है कि अभिन्यास अनुमति दिनांक 08.11.2006 में एरिया फोर कन्वीनेंट शॉप्स का वर्णन प्लाट नं. 1 से 9 और प्लाट नं. 337 से 348 में तो किया गया है परंतु स्टेटमेंट ऑफ एरिया (टेबल) के वर्णन में इसका उल्लेख नहीं किया गया है जबकि स्टेटमेंट ऑफ एरिया में, एरिया फोर कन्वीनेंट शॉप्स का वर्णन करना राजस्व करों को अदा करने के लिए आवश्यक होता है। 11.11.2020 के संशोधित अभिन्यास में तो इसे खत्म ही कर दिया गया है। इस प्रकार टीएनसीपी अधिकारियों के साथ सांठगांठ करके बिल्डर विनोद सिंह ने तथ्यों को छुपाकर लाखों रुपयों की राजस्व राशि की चोरी भी की है।

यह भी गौरतलब है कि कलेक्टर भोपाल के आदेश पर दर्ज की गई एफआईआर के बावजूद भी बिल्डर ने अयोध्या बाईपास रोड से शुरू होने वाले सरकारी रास्ते पर गेट लगाकर इस मार्ग को अवरूद्ध किया हुआ है जो आज भी कायम है। अभिन्यास अनुमति दिनांक 08.11.2006 और स्थल सीमांकन दिनांक 15.05.2008 के समय ओम कन्स्ट्रक्शन एंड बिल्डर्स के दो पार्टनर्स विनोद कुमार सिंह और उनके सगे भाई प्रमोद सिंह थे। उल्लेखनीय है कि इन दो पार्टनर्स के अलावा अभिन्यास अनुमतियों में वर्णित अन्य किसी भी भूमि स्वामी से न तो कोई रजिस्टर्ड अनुबंध किया गया है और न ही किसी प्रकार का पंजीकृत ज्वाइंट वेंचर अनुबंध किया गया है। ऐसी स्थिति में विनोद सिंह एवं अन्यों ने इन अभिन्यास अनुमतियों में अन्य व्यक्तियों का नाम दर्शाकर धोखाधड़ी, हेराफेरी और कूटरचना करके करोड़ों रुपयों की राजस्व राशि की चोरी की है। खसरा वर्ष 2023-24 के अनुसार मृदुला सिंह पत्नी अशोक कुमार सिंह (विनोद कुमार सिंह के सगे छोटे भाई) के नाम पर खसरा नंबर 121 कुल रकबा 0.259 हेक्टेयर (0.64 एकड़), खसरा नंबर 122/2 और 123 कुल रकबा 0.502 हेक्टेयर (1.24 एकड़) और खसरा नंबर 120/2 कुल रकबा 0.421 हेक्टेयर (1.04 एकड़) भूस्वामिनी के तौर पर अंकित है। टीएनसीपी द्वारा अनुमोदित अभिन्यास 2006, सीमांकन प्लान अभिन्यास 2008 और संशोधित अभिन्यास 2020, तीनों अभिन्यासों में मृदुला सिंह के चारों खसरे प्रमोद सिंह और विनोद कुमार सिंह के संयुक्त नाम से दिखाए गए हैं। मृदुला सिंह की भूमि के खसरों पर अगर नगर तथा ग्राम निवेश कार्यालय भोपाल से अनुमति प्राप्त की गई है, जो की गई है तो तीनों अनुमोदित अभिन्यासों में मृदुला सिंह का नाम भूमि स्वामी के तौर पर होना चाहिए। मगर ऐसा जानबूझकर अन्य कई बातों को छुपाने के लिए किया गया है।

● **कुमार राजेंद्र**

पातरा नदी को पातरा नाला बनाकर ले ली अनुमति

तीनों अनुमोदित मानचित्रों के दक्षिण और पश्चिम में पातरा नदी स्थित है परंतु विनोद सिंह ने खसरे और अक्स में कूटरचना करके पातरा नदी को पातरा नाला दिखा दिया। राजस्व अभिलेखों में आज दिनांक में भी यह पातरा नदी है, न की पातरा नाला। पातरा नदी के वर्ष 2023-24 के खसरा क्र. 90 के कॉलम 12 में यह मप्र शासन नजूल भूमि नदी पातरा दर्शाई गई है। नियमानुसार नदी के किनारे से 30 मीटर (100 फिट) की दूरी में कोई निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता, इस भूमि को वृक्षारोपण के साथ-साथ खुला रखना आवश्यक होता है। परंतु टीएनसीपी के अधिकारियों के साथ मिल-जुलकर सांठगांठ करके पातरा नदी को पातरा नाला दर्शाकर सिर्फ 3 मीटर (10 फीट) की दूरी छोड़कर ही अनुमति प्राप्त कर ली। इस प्रकार बिल्डर को लगभग 20 करोड़ का फायदा पहुंचा। अनुमान लगाइए कि अनुमति प्रदान करने वाले टीएनसीपी अधिकारियों को कितना मिला होगा?

सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) नहीं लगाया कॉलोनी का सीवेज सीधा पातरा नदी में

लगभग 350 डुप्लेक्सों की कॉलोनी में एसटीपी का नियमानुसार निर्माण किया जाना आवश्यक है परंतु आज भी कॉलोनी का सीवेज सीधे पातरा नदी में मिलाया जा रहा है। इस संबंध में कॉलोनी के एक अधिवक्ता रहवासी ओबी मिश्रा द्वारा कॉलोनी के अन्य निवासीगणों के निर्देश पर एक वैधानिक सूचना पत्र ओम कन्स्ट्रक्शन एंड बिल्डर्स द्वारा विनोद सिंह उर्फ विनोद कुमार सिंह व अन्य पांच को प्रेषित किया गया है जिसमें बिल्डर विनोद कुमार सिंह और अरूणा सिंह ने की कूटरचना धोखाधड़ी और हेराफेरी से कष्ट झेल रहे ईको ग्रीन पार्क के रहवासी के दुख का वर्णन अधिवक्ता रहवासी ने विस्तारपूर्वक किया है।

भ्रष्टों के खिलाफ सबूत नहीं जुटा पा रहा लोकायुक्त

घूसखोरी, आय से अधिक संपत्ति जमा करने या सार्वजनिक प्राधिकार का दुरुपयोग करने वाले भ्रष्टों के खिलाफ लोकायुक्त की कार्रवाई अपने अंजाम तक नहीं पहुंच पा रही है। ऐसे मामलों में ट्रैपिंग या छापेमारी के बाद एफआईआर तो दर्ज हो रही है, लेकिन सजा नहीं मिल पा रही है। सबूत के अभाव में कोर्ट में दर्ज होने वाले केस कमजोर पड़ जा रहे हैं। इस कारण आरोपी दोषमुक्त हो रहे हैं।

गौरतलब है कि प्रदेश में भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति लागू है। उसके बाद भी भ्रष्टाचार रुकने का नाम नहीं ले रहा है। रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार हुए और आय से अधिक संपत्ति के विशेष पुलिस स्थापना लोकायुक्त थाने में दर्ज भ्रष्टाचार के प्रकरणों में बड़ी संख्या में आरोपी साक्ष्य के अभाव में दोष मुक्त हो रहे हैं। कुछ प्रकरणों में न्यायालय के आदेश पर भी खात्मा रिपोर्ट लगाई गई है। ऐसे में लोकायुक्त की कार्रवाई के दौरान उपयोग किए जाने वाले साक्ष्यों पर सवाल उठ रहे हैं। क्योंकि रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तारी जैसे प्रकरणों में आरोपी और फरियादी के बीच रिश्वत लेने-देने को लेकर हुई बातचीत और गिरफ्तारी के बाद आरोपी के हाथों, कपड़ों अथवा बैग आदि से बरामद नकदी एवं हाथ धुलाने पर निकले गुलाबी रंग को न्यायालय में प्रमुख साक्ष्य के रूप में उपयोग किया जाता है। ऐसे में लोकायुक्त के यह प्रमुख साक्ष्य न्यायालय में घूसखोरी और भ्रष्टाचार को साबित कर पाने में नाकाफी साबित हो रहे हैं।

विभाग ने स्वीकार किया है कि लोकायुक्त द्वारा दर्ज कुल मामलों में आरोपितों पर मुकदमा चलाने के लिए पर्याप्त साक्ष्य का अभाव है। इनमें अधिकांश मामले सार्वजनिक प्राधिकार के दुरुपयोग से संबंधित हैं। प्राथमिक जांच के दौरान कांड से जुड़े लोगों को आरोपी तो बना दिया है, लेकिन लोकायुक्त में उनके खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य नहीं दे पाती, जिससे केस कमजोर पड़ जाता है। इससे आरोपियों को बचने का मौका मिल जाता है। विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) की एक रिपोर्ट के अनुसार 2 मई 2019 से 10 अगस्त 2021 के बीच लोकायुक्त संगठन में दर्ज भ्रष्टाचार के 60 प्रकरणों में 70 से अधिक आरोपियों को विशेष न्यायालयों ने दोष मुक्त कर दिया था। लोकायुक्त टीम ने इन प्रकरणों में खात्मा रिपोर्ट भी लगा दी थी। खास बात यह है कि इनमें 50 मामले ऐसे हैं, जिनमें लोकायुक्त संगठन न्यायालय में पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सका। पांच प्रकरणों में आरोपियों की मृत्यु के कारण न्यायालय ने खात्मा रिपोर्ट लगा दी थी। जबकि इनमें पांच प्रकरणों में उच्च न्यायालय के आदेश पर खात्मा लगाया गया था। इस तरह कुल 27 महीनों में 60 मामलों के 6 दर्जन से अधिक आरोपी न्यायालय से दोष मुक्त हो गए। साक्ष्यों के अभाव सहित अन्य कारणों से विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) संगठन द्वारा अलग-अलग जिलों के विशेष न्यायालयों में खात्मे के लिए प्रस्तुत किए गए भ्रष्टाचार के प्रकरणों एवं ऐसे प्रकरण जिनमें खात्मा लग चुका था, उन सभी प्रकरणों की जानकारी जैसे ही लोकायुक्त के पास पहुंची, महानिदेशक लोकायुक्त से उन्होंने ऐसे सभी खात्मा प्रकरणों की सूची एवं नस्तियां मांगी थीं। बताया जा रहा है कि लोकायुक्त कार्यालय में इन प्रकरणों की खात्मा रिपोर्ट और डीजी कार्यालय की नस्तियों के अध्ययन के बाद कुछ खात्मा के लिए प्रस्तुत प्रकरणों को निरस्त कर इनमें फिर अभियोजन पत्र तैयार किए गए हैं। ऐसे में सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या लोकायुक्त के संज्ञान में लाए बिना अथवा पर्याप्त साक्ष्यों के बावजूद महानिदेशक लोकायुक्त संगठन कार्यालय ने कुछ प्रकरणों में अनावश्यक खात्मा करने के लिए न्यायालयों में प्रस्तुत कर दिया? जिन प्रकरणों में खात्मा रिपोर्ट लगाकर आरोपियों को दोष मुक्त किया गया था, उनमें एक तत्कालीन उप परिवहन निरीक्षक, वरिष्ठ उप पंजीयक, कनिष्ठ अधिकारी, सहायक प्राध्यापक, सरपंच, पंचायत सचिव, लेखापाल, सीईओ जिला एवं जनपद सीईओ जबलपुर विकास प्राधिकरण, कार्यपालन यंत्री, अस्पताल अधीक्षक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर बैठे अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल थे।

● **प्रवीण सक्सेना**

कई प्रकरणों का होगा पुनर्मूल्यांकन

कार्यालय विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) संगठन द्वारा जिला स्तर पर बड़ी संख्या में प्रकरणों में खात्मा लगवा दिया था तो ऐसे अन्य कई प्रकरणों को खात्मे के लिए न्यायालय में प्रस्तुत कर भी दिया था। लेकिन इस बीच सचिव लोकायुक्त कार्यालय, डॉ. अरुण कुमार गुप्ता ने 11 अक्टूबर 2021 को महानिदेशक, विशेष पुलिस स्थापना, लोकायुक्त कार्यालय को पत्र लिखकर निर्देशित किया था कि विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) के समस्त पुलिस अधीक्षकों को सूचित किया जाए कि वे 1 जून 2020 से 31 अगस्त 2021 की अवधि में न्यायालय में प्रस्तुत खात्मा रिपोर्टों को इस निवेदन के साथ वापस लें कि यह प्रकरण पुनर्मूल्यांकन कर पुनः प्रस्तुत किए जाएंगे। जारी आदेश में निर्देशित किया गया था कि ऐसी प्रत्येक रिपोर्ट मय केस डायरी महानिदेशक विशेष पुलिस स्थापना कार्यालय की नस्त के साथ 28 अक्टूबर 2021 तक लोकायुक्त के समक्ष पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत किए जाएं। आदेश में कहा गया कि यदि विशेष न्यायालयों द्वारा प्रकरणों में खात्मा स्वीकार कर लिया गया है तो ऐसे जिलेवार प्रकरणों की सूची तैयार कर तत्काल लोकायुक्त के अवलोकन के लिए 28 अक्टूबर 2021 तक प्रस्तुत किए जाएं। विशेष न्यायालयों द्वारा खात्मा स्वीकार किए गए प्रकरणों की केस डायरी एवं महानिदेशक विशेष पुलिस स्थापना की नस्ती भी 28 अक्टूबर तक लोकायुक्त के समक्ष प्रस्तुत की जाए। महानिदेशक विशेष पुलिस स्थापना (लोकायुक्त) योगेश चौधरी का कहना है कि यह खात्मा प्रकरण और इस संबंध में जारी लोकायुक्त कार्यालय का पत्र मेरी पदस्थापना के पूर्व का था। हालांकि खात्मा के लिए न्यायालय से वापस आए कुछ प्रकरणों की खात्मा रिपोर्ट को निरस्त किया गया है। मैं इस संबध में जानकारी लेकर ही कुछ बता पाऊंगा।

निकायों की वित्तीय शक्तियां हुई दोगुनी

विधानसभा चुनाव के पहले राज्य सरकार ने महापौर, निकाय अध्यक्षों के साथ ही उनकी कैबिनेट यानि काउंसिल को और पावरफुल बना दिया है। उनकी वित्तीय शक्तियां दोगुना तक बढ़ा दी गई हैं। साथ ही आयुक्तों और मुख्य नगरपालिका अधिकारियों के काम मंजूर करने के अधिकारों में इजाफा किया है। इससे आचार संहिता लगने के पहले बड़ी संख्या में कार्य स्वीकृत हो सकेंगे। मंजूरी के लिए फाइलें नहीं अटकेंगी। यह पहल नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेंद्र सिंह के निर्देश पर की गई है।

प्रदेश में 16 नगर निगम हैं। इनमें से पांच लाख से अधिक आबादी वाले शहरों के महापौरों को 5 करोड़ रुपए की वित्तीय शक्तियां मिली थीं। अब इसे बढ़ाकर 10 करोड़ रुपए तक कर दिया गया है। महापौर काउंसिल 10 करोड़ रुपए के कार्यों की मंजूरी दे सकती हैं। इसकी पावर बढ़ाते हुए यह राशि 20 करोड़ रुपए कर दी गई है। नगर निगम परिषद को 20 करोड़ से अधिक लागत के काम मंजूर करने का अधिकार दिया गया है। कमिश्नर को भी 2 करोड़ की जगह 5 करोड़ रुपए तक के कामों के लिए सक्षम प्राधिकारी बनाया है। इसी तरह 5 लाख तक जनसंख्या के शहरों में महापौर 1 करोड़ से अधिक पर 5 करोड़ से कम, एमआईसी 5 से 10 करोड़ और निगम परिषद 10 करोड़ से अधिक लागत के कार्य मंजूर कर सकेंगी। कमिश्नर को 1 करोड़ रुपए के अधिकार दिए गए हैं। नगरीय विकास विभाग की ओर से जारी आदेश में साफ किया गया है कि केंद्र, बाहरी मदद से चल रही योजनाओं, डिपॉजिट वर्क और विशिष्ट स्कीम्स में राज्य सरकार एमआईसी या कमिश्नर को ऐसी वित्तीय शक्तियों का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत कर सकेगी। सरकार के इस कदम से अब शहरी इलाकों में विकास के कामों में तेजी आएगी। खासतौर पर इस तरह के कामों की स्वीकृति में अब तक काफी समय लगता था, लेकिन अब आवश्यकता अनुसार ही काम की स्वीकृति अलग-अलग स्तर पर की जा सकेगी। इसकी वजह से लोगों को परेशानी से जल्द मुक्ति मिल सकेगी।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी 5 लाख तक, अध्यक्ष 5 से 10 लाख, प्रेसीडेंट इन काउंसिल 10 लाख से 40 लाख, नगर पालिका परिषद 40 लाख से 5 करोड़, नगरीय प्रशासन कमिश्नर 5 से 30 करोड़, राज्य सरकार 30 करोड़ से अधिक। मुख्य नगर पालिका अधिकारी 2 लाख तक, अध्यक्ष 2 से 5 लाख, प्रेसीडेंट इन काउंसिल 5 लाख से 20 लाख, नगर पालिका परिषद 20 लाख से ढाई करोड़, नगरीय प्रशासन कमिश्नर ढाई से 30 करोड़, राज्य सरकार 30 करोड़ रुपए से अधिक। मुख्य नगरपालिका अधिकारी 5 लाख तक, अध्यक्ष 5 से 10 लाख, प्रेसीडेंट इन काउंसिल 10 लाख से 40 लाख, नगर पालिका परिषद 40 लाख से 5 करोड़, नगरीय प्रशासन कमिश्नर 5 से 30 करोड़, राज्य सरकार 30 करोड़ से अधिक। मुख्य नगर पालिका अधिकारी 2 लाख तक, अध्यक्ष 2 से 5 लाख, प्रेसीडेंट इन काउंसिल 5 लाख से 20 लाख, नगर पालिका परिषद 20 लाख से ढाई करोड़, नगरीय प्रशासन कमिश्नर ढाई से 30 करोड़, राज्य सरकार 30 करोड़ रुपए से अधिक।

वहीं प्रदेश के शहरी इलाकों में रहने वाले लोगों को पेयजल व सीवरेज जैसी मुसीबत से मुक्ति दिलाने के लिए अब सरकार 12858 करोड़ रुपए खर्च करने जा रही है। यह काम अटल नवीकरण एवं शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) के दूसरे चरण के तहत किए जाएंगे। यह काम प्रदेश की सभी 413 निकायों और 5 छावनी परिषद में कराए जाएंगे। इसमें वॉटर सप्लाई, सीवरेज के अलावा ग्रीन एरिया विकसित करने पर फोकस रहने वाला है। इस योजना में प्रदेश सरकार द्वारा राज्य अंश के रूप में 6905.82 करोड़ रुपए दिए जाएंगे, जबकि केंद्र सरकार इसमें 4580.93 करोड़ रुपए की मदद करेगा। इसके अलावा इस मद में नगरीय निकायों को 1371.96 करोड़ रुपए का अंशदान देना होगा। अमृत दो के पहले चरण में उन क्षेत्रों में पेयजल की पाइप लाइन डालीं जाएंगीं, जहां पर अभी वॉटर सप्लाई नेटवर्क ही नहीं है। इसी तरह से नए व छूटे क्षेत्रों में सीवरेज की लाइन डालने और फिर उसका कनेक्शन घरों में करने का काम किया जाएगा। अमृत योजना में बदलाव करते हुए इस बार सभी शहरों में जलस्त्रोतों के उन्नयन के काम को भी शामिल किया गया है। इसके तहत फिल्टर प्लांट्स की क्षमता में वृद्धि की जाएगी और सप्लाई सिस्टम को अपग्रेड किया जाएगा। इसके लिए नए पंप लगाए जाएंगे। साथ ही प्लांट्स पर बेकार बहाए जाने वाले पानी को री-साइकिल कर उसे उपयोग लायक बनाया जाएगा।

● **सुनील सिंह**

कामों का विभाजन

अमृत दो के तहत होने वाले कामों को तीन हिस्सों में विभाजित किया गया है, जिसके तहत पहले पैकेज या ट्रेच-1 में पेयजल समस्या, जलस्त्रोतों की कमी, गर्मियों में जल संकट ग्रस्त और नवगठित निकायों को शामिल किया गया है। प्रदेश में ऐसी निकायों की संख्या 296 है। इन निकायों में 2945.37 करोड़ की जलप्रदाय योजनाओं को शामिल किया गया है। जबकि स्पेशल पैकेज के तहत 89 निकायों में जल संरचनाओं के उन्नयन के लिए 153.53 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। दूसरे पैकेज में प्रदेश के 121 निकायों की पेयजल, 331 निकायों में 341 जल संरचनाओं के उन्नयन, 385 निकायों 390 ग्रीन एरिया व पार्क विकास, 3 छावनी व अमृत 1 के चार शहरों की सीवरेज परियोजनाओं का रखा गया। इनके लिए 4157.30 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। योजना का फंडिंग पैटर्न आबादी के हिसाब से तय किया गया है। 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले निकायों में केंद्र 25 प्रतिशत, राज्य 58 फीसदी राशि देगा। बाकी 17 प्रतिशत निकाय को जुटाना होंगे। अमृत के पहले चरण में भी भोपाल नगर निगम की हिस्सेदारी 17 फीसदी ही थी। इसे जुटाने के लिए करीब पौने दो सौ करोड़ रुपए का म्युनिसिपल बॉन्ड जारी किया गया। एक से अधिक पर 10 लाख से कम आबादी के निकायों में केंद्र 33 फीसदी राशि देगा। राज्य से 57 प्रतिशत पैसा मिलेगा। निकाय को 10 फीसदी की व्यवस्था स्वयं ही करना होगी। वहीं 1 लाख से कम जनसंख्या के निकाय में केंद्र 50 प्रतिशत और राज्य 45 फीसदी राशि मुहैया कराएगा। निकाय का अंश महज 5 प्रतिशत ही रहेगा।

देव 'लोक' से भूलोक की राजनीति साधने का प्रयास

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बीते एक वर्ष में उज्जैन में निर्माणाधीन महाकाल लोक की तर्ज पर मालवा, बुंदेलखंड व चंबल क्षेत्र में 7 देव लोक बनाने की घोषणा की है। यदि इन सभी 7 देव लोकों का निर्माण कार्य पूर्ण होता है तो इनकी संयुक्त लागत 3,500 करोड़ रुपए से अधिक होगी। कांग्रेस इन देव लोकों का विरोध तो नहीं कर रही है लेकिन इन घोषणाओं पर तंज कसते हुए मुख्यमंत्री को घोषणावीर बता रही है, जबकि कई स्थानों पर कार्यों का विधिवत शुभारंभ भी हो चुका है। 850 करोड़ की लागत से बने महाकाल लोक के प्रथम चरण के लोकार्पण के बाद इसके दूसरे व तीसरे चरण का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। ओंकारेश्वर में मप्र सरकार की 2,200 करोड़ की महत्वाकांक्षी परियोजना एकात्म धाम जो जगतगुरु शंकराचार्य को समर्पित है, के निर्माण का बड़ा कार्य पूर्ण हो चुका है। मुरैना जिले के ऐंती पर्वत स्थित विश्व प्रसिद्ध शनि धाम के भी विकास का खांका खिंच गया है जिसकी जिम्मेदारी केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने ली है।

त्रेतायुगीन शनि मंदिर में प्रतिष्ठत शनिदेव की प्रतिमा भी विशेष है। ऐसी मान्यता है कि यह प्रतिमा आसमान से टूट कर गिरे एक उल्कापिंड से निर्मित है। महाराष्ट्र के सिंगनापुर स्थित शनि मंदिर में प्रतिष्ठित शनि शिला भी इसी शनि पर्वत से ले जाई गई है। यहां विकास कार्यों के अंतर्गत शनि धाम की 6.5 किमी लंबाई की परिक्रमा में चंबल अंचल के 30 महापुरुषों, संत-महात्माओं की प्रतिमाएं स्थापित करने के साथ ही शनिकुंड बनाया जाएगा। सैलानियों के ठहरने के लिए धर्मशाला, मंदिर परिसर में सोलर लाइट, प्रशासनिक भवन का निर्माण, शनि परिक्रमा में शिव पर्वत का निर्माण जैसे अन्य कार्य भी किए जाएंगे। वहीं हनुमानजी के भक्तों को भी शिवराज सरकार ने प्रसन्न कर दिया है। विधानसभा के पटल पर 14 मार्च, 2023 को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हनुमानजी के भक्तों को बड़ी सौगात के रूप में छिंदवाड़ा के सौंसर के जामसांवली में जहां हनुमान जी की लेटी हुई प्रतिमा है, वहां हनुमान लोक बनाने की घोषणा की। इसके अलावा भिंड जिले में देश के प्रमुख हनुमान मंदिर दंदरौआ धाम में भी हनुमान लोक बनाने की सैद्धांतिक मंजूरी मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने दी है। दंदरौआ धाम वाले हनुमानजी को डॉक्टर हनुमानजी के नाम से भी जाना जाता है और ऐसी मान्यता है कि यहां दर्शन करने से असाध्य रोग ठीक हो जाते हैं। अत: भिंड जिले के इस मंदिर में दूर-दूर से श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं।

मई, 2023 में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हीरे की खानों के लिए प्रसिद्ध पन्ना में पन्ना गौरव दिवस पर लोगों की सलाह और सुझाव से जुगल किशोर सरकार लोक बनाने की घोषणा की। इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने ओरछा के विश्व प्रसिद्ध राम मंदिर में रामराजा लोक और चित्रकूट में वनवासी लोक की घोषणा की थी। इन लोकों के निर्माण में कितना खर्च आएगा इसे लेकर सरकारी स्तर पर आंकलन किया जा रहा है।

वर्तमान में सलकनपुर स्थित विजयासन देवी धाम में देवी लोक का निर्माण प्रारंभ हो चुका है। देवी लोक में देवी के 9 रूपों और 64 योगिनी को शास्त्रों में वर्णित कथाओं के साथ आकर्षक रूप में प्रदर्शित करने के साथ ही यहां आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अनेक निर्माण एवं विकास के कार्य कराए जा रहे हैं। देवी लोक के निर्माण पर 200 करोड़ रुपए से अधिक की राशि के व्यय का अनुमान है। विकास एवं निर्माण कार्यों के भूमिपूजन के पश्चात लगभग 40 करोड़ रुपए में प्रवेश द्वार, शिव मंदिर का पाथवे निर्माण, मेला ग्राउंड पर भव्य दीपस्तंभ एवं 102 दुकानों का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

सागर में स्थित रविदास मंदिर धाम में 100 करोड़ खर्च होंगे, तो वहीं दतिया के विश्व प्रसिद्ध तांत्रिक सिद्धपीठ पीताम्बरा पीठ में पीतांबरा माई लोक बनेगा। इसके अलावा मप्र की आर्थिक राजधानी इंदौर में देवी अहिल्याबाई की स्मृति को जीवंत रखने के लिए अहिल्या लोक का प्रस्ताव भी मुख्यमंत्री की ओर से आया है। इंदौर के पास जानापाव, जिसे भगवान परशुराम की जन्मस्थली कहा जाता है, में भी बड़े स्तर पर विकास कार्य चल रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र काशी में जब बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर बना और इसकी तर्ज पर उज्जैन में महाकाल लोक का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ, तब भी यह प्रश्न समाज के एक बड़े वर्ग में अनुत्तरित था कि लोक के निर्माण की आस किसे है? किंतु काशी विश्वनाथ कॉरिडोर और महाकाल लोक के प्रथम चरण के लोकार्पण के बाद इन धार्मिक नगरों में जिस प्रकार जनसमूह उमड़ा है, उससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के छोटे-बड़े अवसर बढ़े हैं। इससे राजस्व बढ़ा है जिसका लाभ स्थानीय जनता को मिल रहा है।

● **लोकेंद्र शर्मा**

बदल रही नगरों की सूरत

यह भी एक तथ्य है कि स्थानीय जनता ने भी प्रदेश में बनने वाले लोकों को लेकर अपनी स्वीकारोक्ति दी है क्योंकि कई स्थानों के आधुनिकीकरण और विकास की मांग वर्षों पुरानी थी। कांग्रेस ने पूर्व में तो इन लोकों को हास-परिहास का विषय बनाया किंतु जनता के रुख को देखते हुए अब महाकाल लोक और देवी लोक पर उन्होंने अपना दावा ठोकते हुए इन्हें कमलनाथ सरकार की देन बताया है। हालांकि प्रश्न यह नहीं है कि किसने बनवाया अथवा क्यों बनवाया, प्रश्न यह उठता है कि क्या धार्मिक स्थलों के विकास को भी राजनीतिक हित-लाभ की दृष्टि से तोला जाएगा? उज्जैन का ही उदाहरण लें तो महाकाल लोक बनने के पश्चात पूरे नगर की सूरत ही बदलती जा रही है। चौड़ी सड़कें, नवीन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का निर्माण, ठहरने के लिए अत्याधुनिक धर्मशालाएं तथा होटल बन रहे हैं। साथ ही उज्जैन के आसपास के जिलों में भी विकास कार्य हो रहे हैं। देवास और नलखेड़ा इसका प्रमाण हैं। जो लोग महाकाल लोक आ रहे हैं वे देवास में चामुंडा माता या नलखेड़ा में बगुलमुखी माता के दर्शन भी कर रहे हैं। ऐसे में अगर सरकार द्वारा बनाए जा रहे देवलोक के प्रति जन मन आकर्षित हो रहा है तो कौन राजनीतिक व्यक्ति होगा जो इसका लाभ नहीं लेना चाहेगा? यही कारण है कि प्रदेश में दिग्विजय सिंह से लेकर कमलनाथ तक सभी बड़े नेता अपनी धार्मिक आस्था को सार्वजनिक रूप से प्रकट कर रहे हैं। कमलनाथ ने अपने गृहक्षेत्र में 101 फिट ऊंची हनुमत प्रतिमा बनवाने के बाद प्रखर सनातनी कथावाचक धीरेंद्र शास्त्री की हनुमत कथा करवाई, वहीं दिग्विजय सिंह पवित्र सावन मास में जगह-जगह रुद्राभिषेक करते दिख रहे हैं।

जातीय संघर्ष की तरफ बढ़ रहा देश

ओबीसी आरक्षण के लिए चार श्रेणियां प्रस्तावित

रोहिणी आयोग की रिपोर्ट अभी सार्वजनिक नहीं हुई है, लेकिन मीडिया में आई खबरों की मानें तो आयोग ने ओबीसी आरक्षण की पिछड़ेपन के आधार पर चार श्रेणियां प्रस्तावित की हैं, लेकिन इन चार श्रेणियों की जातियों/उपजातियों के बीच आरक्षण कोटा बंटवारे का आधार क्या होगा, यह स्पष्ट नहीं है। अगर यह आधार भी जाति जनसंख्या होगी तो सबसे ज्यादा नुकसान में वो जातियां रह सकती हैं, जो संख्या में कम होने के बावजूद सामाजिक जागरूकता और संसाधनों के चलते आरक्षण का सबसे ज्यादा लाभ उठाती रही हैं, जैसे कि जाट, यादव, गूजर, कुर्मी, कुणबी मराठा, पाटीदार आदि। अगर संख्या के आधार पर कोटे के भीतर कोटे में इनका आरक्षण कम किया गया तो इनमें भारी नाराजी फैल सकती है। दूसरे, असंतोष उन जातियों में भी फैल सकता है, जो संख्या में ज्यादा होने के बावजूद कम आरक्षण कोटा पाएंगीं। संभव है कि विपक्ष की जाति गणना की मांग के मुद्दे की धार को भोंथरा करने के लिए केंद्र की मोदी सरकार लोकसभा चुनाव के पहले देश में जाति गणना की घोषणा कर दे। वैसे भी इस पर अमल 2025 में ही हो पाएगा। अगर 2014 में भाजपानीत एनडीए फिर सत्ता में आया तो देखा जाएगा।

हाल में दो घटनाएं लगभग एक साथ हुई हैं, जो भारतीय राजनीति और सामाजिक न्याय के संघर्ष का नया मोर्चा खोल सकती हैं। पहला है-पटना हाईकोर्ट द्वारा बिहार की नीतीश सरकार को राज्य में जातिगत सर्वे कराने की अनुमति देना और दूसरा देश में ओबीसी आरक्षण को लेकर गठित रोहिणी आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपना। इस रिपोर्ट में आयोग ने ओबीसी जातियों को चार श्रेणियों में विभाजित करने की सिफारिश की है। यानी जातिगत सर्वे से जहां बिहार में पिछड़ा वर्ग जातियों की सही संख्या का पता लगेगा, वहीं रोहिणी आयोग रिपोर्ट यदि लागू होती है तो ओबीसी में श्रेणीवार आरक्षण का नए सिरे से बंटवारा होगा। यानी कोटे के भीतर कोटा वाली व्यवस्था लागू होगी।

वर्तमान में देश में ओबीसी के लिए 27 फीसदी आरक्षण (राज्यों में यह प्रतिशत अलग-अलग है) लागू है। इन दोनों घटनाओं का राजनीतिक दल अपने हित साधने की दृष्टि से अलग-अलग तरीके से फायदा उठाएंगे। लेकिन एक बात साफ है कि इन घटनाओं ने ठंडी पड़ चुकी मंडल राजनीति को नए सिरे से हवा दे दी है, जिसका काउंटर अब कमंडल राजनीति से करना मुनासिब नहीं होगा। इस मंडल पार्ट 2 में सबसे बड़ा खतरा ओबीसी के भीतर मचने वाला नया घमासान होगा, जिसका फायदा राजनीतिक दल कैसे और किस रूप में उठाएंगे, यह देखने की बात है। अगले एक दशक तक यही राजनीति देश पर हावी रह सकती है।

जाति जनगणना की बिहार से हुई शुरुआत पूरे देश में ऐसी मांग के रूप में तेज होगी। इसका असर इस साल होने वाले चार राज्यों के विधानसभा और अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव पर पड़ेगा, क्योंकि पिछड़ा वर्ग आरक्षण की लड़ाई का सबसे महत्वपूर्ण चरण तो राजनीतिक आरक्षण का है, जो अभी तक अनसुलझा है या यूं कहें कि उसे किसी तरह दूसरे मुद्दे उठाकर दबाकर रखा गया है।

ओबीसी जातियों को शिक्षा और नौकरी में 27 फीसदी आरक्षण तो मिल ही चुका है। नया आंकड़ा आने पर सरकार को इस आरक्षण को भी बढ़ाना पड़ सकता है। साथ ही तमाम ओबीसी जातियां जनप्रतिनिधित्व में भी उनकी संख्या के हिसाब से आरक्षण मांगेगीं, जो अधिकांश राजनीतिक दलों के लिए बड़ी चुनौती साबित होने वाला है। वो पुराना नारा जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी फिर जोर पकड़ेगा। ध्यान रहे कि देश में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण का बिल इसी कारण से अटका हुआ है कि ओबीसी पहले अपना राजनीतिक आरक्षण सुनिश्चित करना चाहते हैं, उसके बाद ही महिला आरक्षण का समर्थन करना चाहते हैं। यही कारण है कि 9 सालों से केंद्र में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने के बाद भी भाजपा महिला आरक्षण बिल संसद में पारित कराने का साहस नहीं जुटा पाई है।

देश में जाति आधारित जनगणना 1931 के बाद से नहीं हुई है। आजादी के बाद से देश में अनुसूचित जाति और जनजातियों की गणना तो होती है, लेकिन ओबीसी और सामान्य वर्ग की जातियों को अलग-अलग नहीं गिना गया है। फिर भी अनुमानत: ओबीसी जातियों की संख्या 50 फीसदी के आसपास है। जाति गणना को अनदेखा करने के पीछे असल भय राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में ऊंची और प्रभावशाली जातियों का वर्चस्व छिनना है और संख्याधारित आरक्षण के आगे योग्यता के मूल्य का हाशिए पर जाने का है। इसका अर्थ यह नहीं कि ओबीसी में योग्य लोग नहीं हैं। वहां भी हैं, लेकिन अभी भी उच्चतम पदों और जिम्मेदारियों को संभालने वालों में ऊंची जातियां ही हावी हैं।

देश में ओबीसी की वास्तविक संख्या कितनी है, यह तभी पता चलेगा, जब देश के सभी राज्यों में जाति जनगणना हो। अभी तक केंद्र सरकार इसे नकारती आई है, क्योंकि इसमें धर्म के आधार काफी हद तक गोलबंद किए गए हिंदू समाज का जाति के आधार पर नए सिरे से विभाजन का खतरा तो है ही, साथ में खुद ओबीसी श्रेणी में नए घमासान मचने की चिंता भी है (हालांकि मुसलमानों के मामले में वो इसी जाति चेतना की समर्थक है)। इससे भी बढ़कर परेशानी यह है कि अगर रोहिणी आयोग की रिपोर्ट पर सरकार ने कार्रवाई की तो वो पिछड़ी जातियां, जो ओबीसी आरक्षण के बाद सबल हुई हैं और इस आरक्षण का सर्वाधिक लाभ उन्होंने ही उठाया है, सरकार से नाराज हो सकती हैं। ये वो जातियां हैं, जो अलग-अलग राज्यों में संख्या बल, धन बल और बाहुबल के आधार पर राजनीतिक पलड़ा अपने पक्ष में झुकाने में सक्षम हैं। क्या सरकारें इन्हें नाराज करने का जोखिम मोल ले सकती हैं? रोहिणी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में ओबीसी के तहत आने वाली सभी जातियों की संख्या और इस वर्ग को 30 वर्ष पूर्व मिले आरक्षण के बाद उनकी सामाजिक स्थिति व आरक्षण लाभ की वस्तुस्थिति का लेखा-जोखा पेश किया है। रिपोर्ट के मुताबिक देश में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के तहत कुल 2633 जातियां सूचीबद्ध हैं। लेकिन आरक्षण लाभ की दृष्टि से यहां सामाजिक न्याय की उपेक्षा अथवा पक्षपाती लाभ ही हुआ है।

● **डॉ. जय सिंह सेंधव**

माफिया खा गए जंगल

मप्र में लकड़ी माफिया जमीन के दलालों के साथ संगठित होकर जंगल साफ कर रहे हैं। ऐसी करीब 30 हजार वर्ग किमी जमीन से जंगल गायब हो चुका है। ये जमीन वन विभाग की है। यहां न फॉरेस्ट कवर है और न ही हरियाली। ऐसा नहीं है कि माफिया ने ये काम चंद दिनों में किया हो। वो सालों से जंगल खा रहे हैं और संबंधित जिलों का प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठा है। वन विभाग की जितनी जमीन साफ हुई है, उसका कुल क्षेत्रफल केरल (करीब 38600 वर्ग किमी) से थोड़ा ही कम है। इस जमीन पर अब वनावरण का नामोनिशान भी नहीं है। बड़ी बात ये है कि इस 30 हजार वर्ग किमी जमीन में से 10 हजार वर्ग किलोमीटर (10 लाख हेक्टेयर) जमीन तो वह है, जिस पर पिछले 15 साल में वनाधिकार के पट्टे बांटे जा चुके हैं, जबकि करीब 7 हजार वर्ग किमी (7 लाख हेक्टेयर) वन भूमि पर अतिक्रमण हो चुका है।

वन अफसरों के मुताबिक करीब 6 हजार वर्ग किमी जमीन बंजर या चट्टानी है, बाकी जंगल भूमि पिछले 20 साल में बने बांधों में डूब गई या विकास परियोजनाओं और उद्योगों को हस्तांतरित कर दी गई। पिछले साल जारी हुई फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश की 31.59 प्रतिशत वन भूमि से फॉरेस्ट कवर गायब बताया था। मप्र सरकार के रिकॉर्ड के मुताबिक प्रदेश में कुल वन भूमि 94,689 वर्ग किलोमीटर है, लेकिन सिर्फ 64,772 वर्ग किमी पर ही वनावरण यानी फॉरेस्ट कवर है। शेष 29,917 वर्ग किमी वन भूमि अब सिर्फ नाम की ही वन भूमि है।

केंद्र सरकार के कृषि मंत्रालय के लैंड यूज स्टैटिक्स रिपोर्ट 2019 के मुताबिक मप्र में वास्तविक वन भूमि सिर्फ 87 हजार 80 वर्ग किलोमीटर दर्ज है, जबकि राज्य के आंकड़ों में यह 94,689 वर्ग किलोमीटर है यानी केंद्र और राज्य सरकारों के वन भूमि के रिकॉर्ड में भी 7609 वर्ग किलोमीटर का बड़ा अंतर है। आखिर यह अंतर क्यों है, इसका सटीक जवाब किसी के पास नहीं है। मप्र के प्रधान मुख्य वन संरक्षक आरके गुप्ता कहते हैं कि मप्र का बड़ा हिस्सा पठारी है। इसलिए भी वन भूमि के क्षेत्रफल और वनावरण में अंतर है। केंद्र ने मप्र में बंजर व चट्टानी जमीन का क्षेत्रफल 13,500 वर्ग किमी बताया है, लेकिन इसमें वन-राजस्व भूमि स्पष्ट नहीं है। दो माह पहले प्रदेश के 28 रिटायर्ड आईएफएस ने वन भूमि पर बढ़ते अतिक्रमण रोकने के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह को पत्र लिखा था। रिटायर्ड आईएफएस जगदीश चंद्रा कहते हैं कि वनाधिकार पट्टों के लालच में देशभर में जंगलों का सबसे ज्यादा नुकसान मप्र में हुआ है।

5 साल में 19 हजार हेक्टेयर से ज्यादा जंगल साफ

मप्र में जंगलों की कटाई कोई नई बात नहीं है। बुरहानपुर क्षेत्र के जंगल बीते कुछ सालों में लगभग पूरी तरह साफ कर दिए गए हैं। हालांकि विकास कार्यों के लिए भी जंगलों को साफ किया जा रहा है। अब यह जानकारी आधिकारिक रूप से सामने आ गई है। बीते पांच वर्षों में प्रदेश में करीब 19 हजार हेक्टेयर से अधिक जंगल खत्म हो गए हैं। यह प्रदेश में सबसे अधिक है यानी जंगलों को साफ कर दिया गया है। यह उस राज्य में हो रहा है जहां देश में सबसे अधिक फॉरेस्ट कवर है। मप्र में तेजी से जंगल खत्म हो रहे हैं। राज्यसभा में सांसद विवेक तन्खा के सवाल पर जो जवाब मिला है वह निराश करने वाला है। इसके तहत बताया गया कि मप्र में बीते पांच वर्षों 2018 से 23 तक 19,720 हेक्टेयर जंगल खत्म हो चुके हैं। इस जवाब में अन्य राज्यों का भी आंकड़ा शामिल है। जो बताता है कि मप्र में सबसे बड़ा फॉरेस्ट एरिया खत्म हुआ है। इसके बाद ओडिशा में 13,303 हेक्टेयर, गुजरात में 8064 हेक्टेयर, उप्र में 4090 हेक्टेयर, झारखंड में 4416 हेक्टेयर जंगल खत्म हुए हैं। असके अलावा भी कई राज्यों में जंगलों को खासा नुकसान हुआ है। कांग्रेस शासित राज्य छत्तीसगढ़ में 2802 हेक्टेयर और राजस्थान में 2972 हेक्टेयर जंगल खत्म हुए हैं। वन और जलवायु परिवर्तन विभाग के राज्यमंत्री अश्विनी शुक्ला ने कांग्रेस सांसद विवेक तन्खा के सवाल पर यह जवाब दिया है। बीते पांच वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा कुल 90 हजार हेक्टेयर वन भूमि को गैर वन्य क्षेत्र के रूप में उपयोग के लिए स्वीकृति दी गई है। इंडियन स्टेट ऑफ फॉरेस्ट की साल 2021 रिपोर्ट के मुताबिक मप्र में देश में सबसे अधिक फॉरेस्ट कवर है। जो करीब 95000 वर्ग किमी का इलाका जंगल से घिरा है, लेकिन इसे बचाने के लिए सरकार की ओर से कोई खास कदम नहीं उठाए गए हैं। हालांकि बीते साल बताया गया था कि प्रदेश सरकार अगले 10 सालों में 37 लाख हेक्टेयर जंगल को रिस्टोर करना चाहती है और इस विचार को केंद्र से भी हरी झंडी मिल गई है। इस कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र में भी वन बहाली की एक प्रविष्टि के रूप में भेजा गया था।

मप्र के 25 जिलों में जंगल का सफाया हो रहा है। मुख्यमंत्री कमलनाथ ने एंटी माफिया मूवमेंट का ऐलान किया है परंतु माफिया मुक्त मप्र का पूरा अभियान केवल अतिक्रमण विरोधी अभियान बनकर रह गया है। वन माफिया, वन विभाग के अधिकारियों से पार्टनरशिप करके जंगलों का सफाया कर रहे हैं। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं। यह कोई आरोप नहीं बल्कि भारत सरकार की रिपोर्ट है। भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया ने 2019 की रिपोर्ट जारी कर दी गई है। इस रिपोर्ट से पता चलता है कि प्रदेश के 50 जिलों में से 25 में वनक्षेत्र दो साल में कम हुआ। बताने की जरूरत नहीं कि इन जिलों में वन माफिया और वन विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत के कारण अंधाधुंध पेड़ों की कटाई की गई है। वहीं मप्र के 25 जिले ऐसे भी हैं जहां वन क्षेत्र बढ़ा है। कहने की जरूरत नहीं कि यहां का जंगल वन विभाग के अच्छे अधिकारियों के हाथ में रहा। सबसे ज्यादा जंगल सीहोर जिले में कटे हैं। जंगल कटने की सूची में वनमंत्री उमंग सिंघार का गृह जिला धार भी शामिल है। वहीं पन्ना में सबसे ज्यादा वनक्षेत्र बढ़ा है।

उज्जैन ऐसा जिला है जहां कुल क्षेत्रफल का एक प्रतिशत भी जंगल नहीं है। यहां जंगल सिर्फ 0.59 प्रतिशत जमीन पर है। 10 जिलों में वनक्षेत्र 10 प्रतिशत से कम है और 17 में 20 प्रतिशत से कम। सिर्फ 2 जिलों में 50 प्रतिशत से ज्यादा। ये दो जिले बालाघाट और श्योपुर हैं। 10 प्रतिशत से कम वन वाले जिलों में झाबुआ भी शामिल है। 35 प्रतिशत से ज्यादा जंगल वाले जिले मात्र 10 हैं। इसरो के सैटेलाइट से मिले आंकड़ों से ये रिपोर्ट जारी की गई है। इसके पहले साल 2017 में रिपोर्ट आई थी। दो सालों में प्रदेश में 68.49 वर्ग किलोमीटर जंगल बढ़े हैं। प्रदेश में 25.14 प्रतिशत जंगल है। 2017 में ये 25.11 प्रतिशत थे। 17 जिलों में वेरी डेंस फॉरेस्ट (अधिक घनत्व वाले जंगल) नहीं है। आलीराजपुर और झाबुआ भी इस श्रेणी में रखे गए हैं।

● **श्याम सिंह सिकरवार**

नोएडा की तर्ज पर विकसित होगा बुंदेलखंड

बुंदेलखंड में औद्योगिक विकास प्राधिकरण बनेगा

उप्र के पिछड़े इलाके बुंदेलखंड में नोएडा की तर्ज पर औद्योगिक विकास प्राधिकरण बनाया जाएगा। बुंदेलखंड के साथ ही अन्य औद्योगिक विकास प्राधिकरणों की जमीन खरीद के लिए योगी आदित्यनाथ की सरकार 8000 करोड़ रुपए खर्च करेगी। इस धनराशि में से 5000 करोड़ रुपए बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के गठन पर खर्च किए जाएंगे। प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ऐतिहासिक किलों को हेरिटेज होटल में बदला जाएगा और विंध्य, बुंदेलखंड व हिमालय के तराई क्षेत्र में एडवेंचर स्पोर्ट्स शुरू किए जाएंगे। पर्यटन विभाग के 10 अतिथि गृहों को चलाने के लिए निजी क्षेत्र को लीज पर दिया जाएगा। इसके अलावा दुधवा नेशनल पार्क के करीब सिंचाई विभाग की जमीन को विकसित कर पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में राज्य सरकार के अधीन ऐतिहासिक मिर्जापुर का चुनार किला, झांसी का बरुआ सागर किला, बरसाना मथुरा का जल महल, शुक्ला तालाब व टिकैत राय बारादरी बिठूर कानपुर के साथ ही लखनऊ के कोठी गुलिस्तान व दर्शन विलास को हेरिटेज होटल की तरह विकसित किए जाने के प्रस्ताव पर मुहर लगाई गई। इन ऐतिहासिक इमारतों को निजी क्षेत्र को 90 साल की लीज पर दिया जाएगा। प्रस्ताव के मुताबिक 75 फीसदी तक क्षतिग्रस्त हो चुकी इमारतों को भी लीज पर दिया जाएगा। साथ ही इन इमारतों के मूल स्वरूप में परिवर्तन न करने की शर्त भी लगाई जाएगी।

उप्र सरकार नोएडा की तर्ज पर बुंदेलखंड में भी औद्योगिक क्षेत्र का विकास करेगी। इस उद्देश्य से वह बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण का गठन करेगी। बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के गठन के लिए भूमि खरीदने और बुंदेलखंड में औद्योगिक क्षेत्र के विस्तार के लिए राज्य सरकार 5000 करोड़ रुपए खर्च करेगी। यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2023 के निवेशकों की ओर से पूरे प्रदेश में की जा रही विकसित भूमि की मांग को देखते हुए सरकार अन्य औद्योगिक विकास प्राधिकरणों को उनकी आवश्यकता और मांग के अनुसार भूमि खरीदने के लिए भी शर्तों के तहत धनराशि उपलब्ध कराएगी जिसके लिए 3000 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में गत दिनों हुई कैबिनेट बैठक में इसके लिए ऋण देने के मद में आवंटित कुल 8000 करोड़ रुपए की कार्ययोजना को मंजूरी दी गई।

बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के गठन और उसके विकास के लिए उपयोग में लाई जाने वाली 5,000 करोड़ रुपए की रकम में से प्रारंभिक तौर पर यूपीसीडा द्वारा बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण की ओर से भूमि खरीदने के लिए आवश्यकता अनुसार धनराशि जिलाधिकारी झांसी को उपलब्ध कराई जाएगी। प्राधिकरण के गठन तथा उसमें कार्मिकों की तैनाती हो जाने पर शेष धनराशि भूमि खरीदने और विकास कार्यों के लिए नवगठित बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण को उपलब्ध करा दी जाएगी। स्वीकृत धनराशि में से भूमि विकास के लिए किए जाने वाले कार्यों का अनुमोदन अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त की अध्यक्षता में गठित समिति करेगी। यूपीसीडा-बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा स्वीकृत ऋण की धनराशि का उपयोगिता प्रमाण पत्र समय से प्रस्तुत कराया जाएगा। वहीं 3000 करोड़ रुपए में से अन्य औद्योगिक विकास प्राधिकरणों को आवश्यकतानुसार जमीन खरीदने के लिए भूमि लागत का 50 प्रतिशत राज्य सरकार द्वारा ब्याज मुक्त ऋण के रूप में धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी।

प्राधिकरणों को शेष 50 प्रतिशत धनराशि वित्तीय संस्थाओं या स्वयं के स्रोतों से वहन करनी होगी। समस्त औद्योगिक विकास प्राधिकरणों से प्रस्ताव प्राप्त होने पर **भूमि क्रय व विकास कार्यों** का अनुमोदन अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा किया जाएगा। झांसी में बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण (बीडा) के गठन के लिए योगी सरकार ने 5 हजार करोड़ के ऋण की मंजूरी दे दी है। अब इस धनराशि से यहां के 36 गांवों की 14,258 हेक्टेयर जमीन की खरीद होगी। ताकि औद्योगिक विकास के लिए लैंड बैंक बनाया जा सके। साथ ही अन्य सुविधाओं का विकास किया जाएगा। कैबिनेट के फैसले के बाद अब बीडा के गठन में तेजी आ गई है। जल्द ही इसमें कर्मचारियों के तैनाती की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।

उद्यमियों को जमीन उपलब्ध कराने के लिए नोएडा की तर्ज पर बीडा का निर्माण किया जा रहा है। इसके लिए सदर तहसील के शिवपुरी रोड के इर्दगिर्द के 36 गांवों की 14,258 हेक्टेयर जमीन चिह्नित की गई है। इस जमीन की खरीद के लिए कैबिनेट की मंजूरी के बाद सरकार की ओर से 5 हजार करोड़ रुपए की धनराशि जारी कर दी गई है। यूपीसीडा की ओर से गाइडलाइन आने के बाद जमीन खरीद की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। अब बीडा में जल्द ही अधिकारियों व कर्मचारियों की तैनाती की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। पद सृजन की प्रक्रिया शुरू होने के बाद शुरुआत में इसमें प्रदेश के अन्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अफसरों व कर्मचारियों को भेजा जाएगा। इस बीच बीडा में स्थाई कर्मचारियों की तैनाती की प्रक्रिया भी शुरू कर दी जाएगी। उद्योग विभाग के उपायुक्त मनीष चौधरी ने बताया कि क्षेत्र का औद्योगिक विकास शासन की प्राथमिकता पर है। जिसके चलते बीडा के गठन की कार्यवाही तेजी से जारी है।

कार्ययोजना के अनुसार सबसे पहले 36 गांवों की चिह्नित जमीन को खरीदा जाएगा। इस पर 5 हजार करोड़ रुपए की धनराशि खर्च की जाएगी। जमीन क्रय करने के बाद यहां सड़कें बनाई जाएंगी। साथ ही बिजली और पानी की व्यवस्था की जाएगी। इस पर प्रति हेक्टेयर 2.5 करोड़ रुपए का खर्च आने का अनुमान है। बीडा सदर तहसील के शिवपुरी हाईवे के 36 गांवों में विकसित किया जा रहा है। इसके चलते प्रशासन की ओर से 5 अप्रैल 2023 को डोमागोर, पुनावली कला, राजपुर, बछौनी, खैरा, बैदोरा, चमरौआ, खजराहा, परासई, इमिलिया, अमरपुर, गागौनी, बदनपुर, बसाई, गेवरा, सिमरा, सारमऊ, कलौथरा, परवई, पलींदा, पाली पहाड़ी, ढिकौली, कोटखेरा, अंबावाय, सिजवाहा, डगरवाहा, वमेर, वाजना, बुजुर्ग, खजराहा खुर्द, मुरारी, किल्चुवारा बुजुर्ग, मथुरापुरा, रक्सा, बरुआपुरा, सफा व किल्चुवारा खुर्द गांव में जमीन की खरीद-फरोख्त पर रोक लगा दी थी, जो अभी भी जारी है।

● **सिद्धार्थ पांडे**

यात्राओं के सहारे जीत की खोज!

मप्र के इतिहास में पहली बार भाजपा और कांग्रेस का जोर यात्राओं पर

सबको साधने के लिए दोनों पार्टियों ने घोषणाओं का रिकॉर्ड भी तोड़ा

मिशन 2023 को फतह करने के लिए भाजपा और कांग्रेस वह सारे हथियार आजमा रही हैं, जिनका उपयोग उन्हें सत्ता दिला सकता है। इन्हीं में से एक है यात्राएं। मप्र के इतिहास में पहली बार भाजपा और कांग्रेस का सबसे अधिक जोर यात्राओं पर है। मतदाताओं को साधने के लिए दोनों पार्टियां अब तक दर्जनभर यात्राएं निकाल चुकी हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की विकास यात्रा समाप्त होते ही पार्टी ने जनआशीर्वाद यात्रा का ऐलान कर दिया है।

● राजेंद्र आगाल

राजनीति में यात्राओं का बड़ा महत्व होता है। यही कारण है कि जब भी चुनावी समर शुरू होता है, राजनीतिक पार्टियां जनता तक पहुंचने के लिए यात्राओं का सहारा लेने लगती हैं। मप्र के इतिहास में मिशन 2023 ऐसा है, जिसको साधने के लिए भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियां यात्राओं का सहारा ले रही हैं। दरअसल, 2018 में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने नर्मदा यात्रा निकालकर कांग्रेस के लिए जीत की पृष्ठभूमि तैयार की थी। उसको देखते हुए अब मप्र में भाजपा और कांग्रेस दोनों का फोकस यात्राओं पर है। वैसे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तो बराबर यात्राएं निकालते रहे हैं, लेकिन अब कांग्रेस भी यात्राओं के सहारे वोटबैंक मजबूत करने में लगी हुई है। यात्राओं का फायदा किसको होगा, यह तो आने वाला समय ही बताएगा, लेकिन दोनों पार्टियां दावा कर रही हैं कि प्रदेश के मतदाता उनको अधिक महत्व दे रहे हैं। यह महत्व वोट में कितना तब्दील हो पाता है, यह तीन महीने बाद होने वाले चुनाव में सबके सामने आ जाएगा।

मप्र में 2023 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक पार्टियां एक्टिव मोड़ में आ गई हैं। भाजपा और कांग्रेस अपने-अपने स्तर पर रणनीति बना रहे हैं। चुनावी माहौल से पहले मप्र की सियासत इन दिनों सुर्खियों में है। इसकी मुख्य वजह है यात्रा पॉलिटिक्स। मप्र में विधानसभा चुनाव से पहले हर एक व्यक्ति तक पहुंच बनाने के लिए भाजपा और कांग्रेस यात्राओं के सहारे हैं। भाजपा ने 3 सितंबर से 24 सितंबर तक जनआशीर्वाद यात्रा निकालने की तैयारी की है। 22 दिन में 10,000 किलोमीटर का सफर तय कर भाजपा एक बड़ी आबादी को साधने की कोशिश करेगी। इसी तरह कांग्रेस ने अनुसूचित जाति वोटरों को साधने के लिए अंबेडकर की जन्मस्थली महू से चार अलग-अलग यात्राओं को शुरू करने की योजना बनाई है। सितंबर के पहले हफ्ते में शुरू होने वाली कांग्रेस की इस यात्रा का रोडमैप तैयार हो गया है। कांग्रेस 15 दिन की यात्रा निकालेगी। इस यात्रा के जरिए एससी और एसटी वोटरों को साधने का काम किया जाएगा। 68 विधानसभा सीटों को कवर करने के लिए कांग्रेस अपने चार नेताओं को इन यात्राओं के साथ रवाना करेगी। महू से शुरू होने वाली यात्रा अलग-अलग दिशाओं में रवाना की जाएगी। कांग्रेस अनुसूचित जाति वर्ग के अध्यक्ष प्रदीप अहिरवार महू से लेकर रीवा तक यात्रा निकालेंगे। कांग्रेस नेता फूलसिंह बरैया महू से यात्रा शुरू कर ग्वालियर चंबल पहुंचेंगे। कांग्रेस के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष सुरेंद्र चौधरी महू से यात्रा लेकर प्रदेश के मध्य क्षेत्र रवाना होंगे। कांग्रेस नेता राजेंद्र मालवीय महू से निमाड़-मालवा तक यात्रा लेकर जाएंगे। सभी यात्राओं का समापन ग्वालियर में होगा। यहां पार्टी के बड़े नेता शामिल होंगे। कांग्रेस नेता सज्जन सिंह वर्मा का कहना है कि 2018 के विधानसभा के चुनाव में अनुसूचित जातियों, जनजाति वर्ग के मतदाताओं ने कांग्रेस को भरपूर वोट दिए थे। लेकिन, इस बार ज्यादा सीट जीतने के लिए महू से यात्रा शुरू की जाएगी। इस यात्रा के जरिए अनुसूचित जाति के बीच पहुंचकर कांग्रेस भाजपा की विफलता और कांग्रेस के चुनावी एजेंडा को लेकर जनता के बीच जाएगी। बता दें, प्रदेश में आदिवासियों के बाद अब अनुसूचित जाति मतदाताओं पर भाजपा और कांग्रेस की नजर है। यही वजह है कि भाजपा अपनी जनआशीर्वाद यात्रा के जरिए प्रदेशभर में अपने पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश में है।

दूसरी ओर, कांग्रेस महू से चार यात्राओं की शुरुआत कर एक बड़ी आबादी तक पहुंचने की कोशिश में है। दरअसल प्रदेश में अनुसूचित जाति मतदाताओं की संख्या 16 फीसदी से ज्यादा है। 230 विधानसभा सीटों में से 35 फीसदी सीटें अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। इसके अलावा 20 सीटें ऐसी हैं जहां अनुसूचित जाति वर्ग का वोटर खास दखल रखता है। यही वजह है कि आदिवासियों के बाद अब अनुसूचित जाति पर कांग्रेस अपना फोकस बढ़ा रही है।

वादों, घोषणाओं, सौगातों, गारंटी, वचनों की झड़ी

मप्र में दो माह बाद यानी नवंबर में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं। इन चुनावों में फतह हासिल करने के लिए राजनीतिक दलों ने वादों, घोषणाओं और सौगातों की झड़ी लगा दी है। सत्तारूढ़ शिवराज सिंह चौहान की सरकार ने जहां हर वर्ग के लिए सरकारी खजाने का मुंह खोलते हुए घोषणाओं का अंबार लगा दिया है। वहीं राज्य की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस अपनी 5 गारंटी सहित 11 वचन लेकर चुनाव में जनता के सामने है। दोनों दलों की घोषणाओं और वादों के पिटारे में खासतौर से प्रदेश की आधी आबादी यानी महिलाओं, युवा बेरोजगारों, किसानों और कर्मचारियों को साधने के लिए चुनावी गिफ्ट हैं। आइए जानते हैं भाजपा और कांग्रेस की उन 11 बड़ी घोषणाओं, चुनावी दांव के बारे में, जो वोट को नतीजों की शक्ल में प्रभावित करने की ताकत रखते हैं। इन वादों, घोषणाओं, सौगातों के ऐलान की कमान सत्तारूढ़ दल की ओर से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और कांग्रेस की ओर से प्रदेश अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने संभाल रखी है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की सरकार ने पिछले कुछ महीनों के दौरान लगातार जनहित की योजनाओं का ऐलान किया है। पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस नेता कमलनाथ ने पार्टी की तरफ से जनता को 5 गारंटी दी है। मप्र में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए सियासी बिसात बिछ चुकी है। राज्य के दो प्रमुख दल सत्तारूढ़ भाजपा हो या कांग्रेस, दोनों दल मैदानी स्तर पर चुनावी जंग की तैयारियों में जुटे हैं। दोनों दलों में प्रमुख नेताओं के ताबड़तोड़ दौरे तो शुरू हो ही चुके हैं। मतदाताओं को साधने और उन्हें वादों, घोषणाओं और सौगातें देने की झड़ी लगी हुई है। महिलाओं से लेकर नए वोटर बनने जा रहे छात्र-छात्राओं, बेरोजगार युवाओं, किसानों को साधने के लिए ऐसी-ऐसी घोषणाएं की जा रही हैं, जो चुनाव में मास्टर स्ट्रोक साबित हो सकती हैं। देखना रोचक होगा कि आगामी विधानसभा चुनाव में जनता किस दल की घोषणाओं को ज्यादा तरजीह देती है।

12 हजार किमी, 7 रथ, 230 सीटें

मप्र में नवंबर महीने में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं। नवंबर महीने के पहले हफ्ते में आचार संहिता लागू हो सकती है। ऐसे में अब पार्टियों के पास महज एक महीने का ही समय बचा है। भाजपा ने इस एक महीने को भुनाने के लिए रणनीति बना ली है। पार्टी 3 सितंबर से 24 सितंबर तक जन आशीर्वाद यात्रा आयोजित करेगी। यह यात्रा प्रदेश के सभी 230 विधानसभा सीटों को कवर करेगी। यह भाजपा का मप्र में अंतिम मास्टर स्ट्रोक है। जनआशीर्वाद यात्रा को लेकर भाजपा ने पूरी तैयारी कर ली है। भाजपा के प्लान के अनुसार यात्रा में 7 रथ शामिल होंगे। इन हाईटेक रथों में वीवीआईपी सुविधाएं रहेंगी। पांच रथों को यात्रा में शामिल किया जाएगा, जबकि 2 रथों को सुरक्षित रखा जाएगा। जनआशीर्वाद यात्रा प्रदेश के पांच प्रमुख स्थानों से शुरू होगी। इसके लिए पार्टी प्रदेश के प्रसिद्ध स्थल, आदिवासी वीरों की भूमि, धार्मिक स्थान, किसी शहीद की जन्मस्थली का चुनाव कर रही है। जनआशीर्वाद का रथ पूरे प्रदेश की 230 सीटों में 12 हजार किलोमीटर का सफर तय करेगा। पूरे प्रदेश को कवर करने के बाद 24 सितंबर तक सभी यात्राएं राजधानी भोपाल पहुंचेंगी। उक्त यात्रा रानी दुर्गावती की वीर स्थलीय जबलपुर का बरेला, राम की वनवास

स्थली चित्रकूट, चंद्रशेखर आजाद की भूमि भाबरा, झाबुआ, खंडवा में टंट्या मामा की जन्मस्थली, नर्मदा उद्गम स्थल अमरकंटक में भी पहुंचेगी।

24 सितंबर को सभी रथ जब वापस लौट आएंगे। उसके दूसरे ही दिन 25 सितंबर को भोपाल में कार्यकर्ता महाकुंभ होगा। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे। प्रदेश में नवंबर के पहले हफ्ते में आचार संहिता लग सकती है। आपको बता दें कि साल 2018 के विधानसभा चुनाव के लिए आचार संहिता 6 अक्टूबर को लग गई थी। इससे पहले साल 2013 के चुनाव में 8 अक्टूबर को आचार संहिता लागू की गई थी। वहीं, जनआशीर्वाद यात्रा की कमान भाजपा के पांच बड़े नेताओं के हाथ में होंगी। अलग-अलग क्षेत्रों से निकलने वाली यात्राओं की कमान पांच नेताओं के हाथ में होगी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के अलावा चार नेता और होंगे, जो जनआशीर्वाद यात्रा को लीड करेंगे। इस यात्रा के जरिए भाजपा 230 सीटों तक पहुंचने की कोशिश करेगी।

मप्र में पिछले कुछ समय से घट रहे घटनाक्रम के कारण शिवराज सरकार के खिलाफ एंटी कंबेंसी का माहौल बनने लगा है। इससे लड़ने के लिए भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व अब अपने हाथों में कमान ले रहा है। इसी क्रम में केंद्रीय नेतृत्व ने प्रदेश में 5 अलग-अगल जनआशीर्वाद यात्रा निकालने का फैसला लिया है। इसे गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा हरी झंडी दिखाएंगे। यात्राओं का समागम भोपाल में होगा जिसे प्रधानमंत्री मोदी संबोधित करेंगे।

पहली यात्रा विंध्य संभाग के चित्रकूट से 3 सितंबर को प्रारंभ होगी, जिसका शुभारंभ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा करेंगे। दूसरी यात्रा महाकौशल के मंडला से 5 सितंबर को प्रारंभ होगी, इसका शुभारंभ भी केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह करेंगे। तीसरी यात्रा इंदौर संभाग के खंडवा से 4 सितंबर से प्रारंभ होगी, जिसका शुभारंभ देश के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह करेंगे। चौथी यात्रा उज्जैन संभाग के नीमच से 4 सितंबर को प्रारंभ होगी, जिसका शुभारंभ रक्षामंत्री राजनाथ सिंह करेंगे। पांचवी यात्रा ग्वालियर ,चंबल संभाग के श्योपुर से 6 सितंबर को प्रारंभ होगी, इसका शुभारंभ केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह करेंगे। यह पांचों जनआशीर्वाद यात्राएं प्रदेश में 10 हजार किमी से ज्यादा की दूरी तय करेंगी। इस दौरान 678 रथ सभाएं, 211 बड़ी सभाएं होंगी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर 25 सितंबर को इन पांचों यात्राओं का समागम भोपाल में होने वाले कार्यकर्ता महाकुंभ में होगा, जिसमें 10 लाख से अधिक कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे। कार्यकर्ता महाकुंभ को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संबोधित करेंगे। मप्र में होने वाली भाजपा की 5 यात्राओं पर कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने तंज कसा है। उन्होंने ट्वीट किया- 2018 में विधानसभा चुनाव से पहले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने जनआशीर्वाद यात्रा निकाली थी, जिसका स्वागत मप्र की जनता ने पत्थर फेंककर किया था। आशीर्वाद की जगह दिया था अभिशाप, जिसके चलते आधे में ही यात्रा बंद करनी पड़ी थी। इस बार दिल्ली के शाह ने यात्रा को पांच भागों में बांटकर कर इसका पंचनामा कर दिया है। जनआशीर्वाद यात्रा टुकड़े-टुकड़े यात्रा में बदल गई है। जनता अब इसे आशीर्वाद की जगह बर्बाद यात्रा में बदल देगी।

भाजपा में टिकट वितरण के क्राइटेरिया ने उड़ाई नींद

मप्र में इस बार विधानसभा चुनाव युद्ध की तरह लड़ा जा रहा है। इसलिए भाजपा ने टिकट वितरण का ऐसा फॉर्मूला बनाया है जिससे दावेदारों की नींद उड़ी हुई है। इस बार पार्टी ने तय किया है कि न नेतागिरी चलेगी, न वफादारी। इस बार केवल जिताऊ को ही टिकट दिया जाएगा। टिकट के इस फॉर्मूले ने सिंधिया समर्थकों को पसोपेश में डाल दिया है। गौरतलब है कि पार्टी ने जो पहली सूची जारी की है उसमें सिंधिया समर्थक रणवीर जाटव को टिकट न देकर इसका संकेत दे दिया है। भाजपा की दूसरी सूची जल्द आने वाली है। ऐसे में टिकट के दावेदारों की चिंताएं बढ़ गई है। खासकर सिंधिया समर्थकों की दावेदारी ने पेंच फंसा दिया है। जिन सीटों पर समर्थक टिकट मांग रहे हैं, वहां पुराने भाजपा नेता सक्रिय हैं। इधर पार्टी को भी जिताऊ चेहरे की तलाश है। मप्र की सियासत में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का बड़ा कद है जिसके भरोसे वर्ष 2020 में भाजपा ने उस कांग्रेस से सत्ता छीनी थी, जिसने वर्ष 2018 में अपना 15 साल का सूखा खत्म कर सूबे की सत्ता हासिल की थी, तब सिंधिया समर्थक निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के अलावा सैकड़ों समर्थकों ने भाजपा का दामन थाम लिया था, किंतु तीन साल बाद जब अगले चुनाव होने हैं, तो उससे पहले इन समर्थकों की घर वापसी ने सिंधिया के जादू पर ही सवाल खड़े कर दिए हैं। पिछले कुछ माह में उनके 5 बड़े वफादार अब कांग्रेस का दामन थाम चुके हैं। इतना ही नहीं भिंड के गोहद से रणवीर जाटव का टिकट कटने के बाद समर्थकों ने जिस तरह से खून से खत निकलकर अपनी विवशता को दर्शाया था, उससे यह लगने लगा है कि आने वाले समय में सिंधिया के कुछ और वफादार उनका साथ छोड़ सकते हैं।

दिग्विजय की यात्रा बनी नजीर

मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने 2018 के विधानसभा चुनाव से पहले राज्य में नर्मदा परिक्रमा यात्रा शुरू की थी। दिग्विजय समेत पूरी कांग्रेस ने इस यात्रा को धार्मिक यात्रा बताया था और कहा था कि इसका राजनीति से कोई संपर्क नहीं था। 192 दिनों की यात्रा में दिग्विजय सिंह ने मप्र, छत्तीसगढ़ और गुजरात का दौरा किया था। इस यात्रा के तहत दिग्विजय सिंह ने अपनी पत्नी के साथ करीब 3,300 किलोमीटर की पद यात्रा की थी। नर्मदा परिक्रमा यात्रा के दौरान दिग्विजय सिंह ने मप्र की 230 में से 110 सीटों का दौरा किया था। भले ही इसे राजनीतिक यात्रा मानने से इंकार किया गया था लेकिन इसके बाद भी दिग्विजय सिंह कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मिलकर उनका जोश बढ़ा रहे थे। जिसका असर 2018 के विधानसभा चुनाव में देखने को मिला था और भाजपा बहुत कम अंतरों से चुनाव हार गई थी। हालांकि किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला था लेकिन कांग्रेस सरकार बनाने में सफल रही थी। दिग्विजय सिंह की यात्रा के बाद अब मप्र में एक बार फिर से यात्रा शुरू हो रही है।

उप्र-बिहार की तरह मप्र में चुनाव भले ही पूरी तरह जाति आधारित नहीं होते हैं, लेकिन

यहां जातियों और समाजों का चुनाव में बड़ा रोल होता है। इसको देखते हुए भाजपा ने चुनाव की घोषणा से पहले ही सभी जातियों और सभी समाजों को साधकर अपना वोटबैंक मजबूत कर लिया है। जहां कांग्रेस सबको साधने की रणनीति बनाती रही, वहीं भाजपा ने सबको साधकर बाजी मार ली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी विश्वकर्मा योजना का उद्देश्य भी अति पिछड़ों को लुभाना ही है। देश के राजनीतिक पंडित मानते हैं कि ओबीसी कार्ड खेलने में कांग्रेस ने काफी देर कर दी। कांग्रेस ने अपने स्वर्णकाल में हमेशा ओबीसी की अपेक्षा की। कांग्रेस का ध्यान ब्राह्मण, मुस्लिम और दलित समीकरणों की तरफ अधिक था। नतीजे में हिंदी प्रदेशों का ओबीसी वर्ग समाजवादी और भाजपा के खेमे में चला गया। समाजवादी विचारधारा के दल परिवारवाद और भ्रष्टाचार में डूबते गए। नतीजे में उनमें कमजोरी आ गई, जिसका फायदा भाजपा ने सोशल इंजीनियरिंग करके उठाया।

दरअसल, इस बार भाजपा मिशन 2023 के साथ ही मिशन 2024 के लिए भी संयुक्त रूप से काम कर रही है। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा प्रदेश में सभी वर्गों को साधने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके तहत पार्टी ने रणनीति बनाकर जहां धर्म का परचम लहराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी, वहीं जातियों को साधने में भी सफलता पाई है। इसका परिणाम यह है कि सवर्णों के साथ ही पार्टी ने ओबीसी, एससी और एसटी वर्ग में भी अपनी पैठ जमाई है। गौरतलब है कि धर्म की राजनीति के तहत अयोध्या में राम मंदिर, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक जैसे प्रकल्प भाजपा की प्रतिबद्धता साबित करने के लिए पर्याप्त हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और परिवारी संगठनों के रहते भाजपा को धर्म की चिंता नहीं है जबकि नरेंद्र मोदी के कारण उसे अब जातियों को साधने की भी चिंता नहीं रही है।

सबको साधने की नीति

मिशन 2023 और 2024 की तैयारी में जुटी भाजपा किसी एक वर्ग को साधने की बजाय सबको साधने की नीति पर काम कर रही है। भाजपा न केवल मंदिर निर्माण और उनके पुनरुद्धार की रणनीति पर चल रही है, बल्कि पिछड़ों और अति पिछड़ों को रिझाने के लिए तमाम प्रयास भी कर रही है। भाजपा इस समय ओबीसी ही नहीं बल्कि अति पिछड़ा कार्ड खेल रही है। ओबीसी के नाम पर हिंदी प्रदेशों में यादव, गुर्जर, कुर्मी, बिश्नोई और जाट समुदाय ने ज्यादातर लाभ उठाया है जो पहले से ही साधन संपन्न ताकतवर जातियां हैं। इन शक्तिशाली पिछड़ी जातियों के कारण अति पिछड़ों के साथ अन्याय हुआ। भाजपा इन्हीं अति पिछड़ी जातियों को गोलबंद कर रही है। उप्र में वह ऐसा कर चुकी है। पार्टी ने अति पिछड़ों के कारण ही उप्र में दो लोकसभा और दो विधानसभा चुनावों में सफलता प्राप्त की है। भाजपा इसी फॉर्मूले को छत्तीसगढ़, राजस्थान, मप्र और बिहार में आजमाने जा रही है। महाराष्ट्र में भी भाजपा अति पिछड़ी जातियों को गोल बंद करने की सोशल इंजीनियरिंग कर रही है।

मप्र में ओबीसी सबसे बड़ा वोटबैंक है। भाजपा के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि उसके पास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जैसे ओबीसी नेता हैं। लेकिन मप्र में कांग्रेस का नेतृत्व कमलनाथ और दिग्विजय सिंह कर रहे हैं। इसलिए ओबीसी वोटबैंक मप्र में कांग्रेस के पास जाएगा इसकी संभावना कम है। इसलिए भाजपा का पूरा फोकस अति पिछड़ी जातियों को साधने पर है। प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीन से दिए अपने संबोधन में जो विश्वकर्मा और लखपति दीदी योजनाओं की घोषणा की उसका उद्देश्य अति पिछड़ों को टारगेट करना ही है। देश में औसतन 42 फीसदी ओबीसी आबादी है। इनमें 65 फीसदी अति पिछड़े हैं। पिछड़ों के नाम पर राजनीति में यादव, कुर्मी, जाट, गुर्जर, बिश्नोई समुदाय के लोग ही मुख्यमंत्री, मंत्री, केंद्रीय मंत्री, विधायक और सांसद बन रहे हैं। जबकि अति पिछड़े अपेक्षित हैं। भाजपा इन्हीं को गोल बंद कर रही है। पिछले दिनों उप्र के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की स्मृति में अलीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने इन्हीं समुदायों के संदर्भ में चर्चा की थी। पिछले 9 वर्षों में पद्म पुरस्कारों पर नजर डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि भाजपा ओबीसी वर्गों को रिझाने के लिए कितने जतन कर रही है। केंद्रीय मंत्रिमंडल में ओबीसी वर्ग का हिस्सा इस समय सबसे अधिक है। राज्यपालों और अन्य राजनीतिक नियुक्तियों में भी भाजपा लगातार सोशल इंजीनियरिंग कर रही है।

क्षेत्र में खराब परफॉर्मेंस वाले विधायकों का कटेगा टिकट

भाजपा के उम्मीदवारों की सूची जारी करने के बाद अब कांग्रेस ने भी अपनी तैयारी तेज कर दी है। कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक 2 सितंबर से आयोजित की गई है। इसमें प्रत्याशियों के नामों पर मुहर लगने के बाद पार्टी प्रदेश की आधे से ज्यादा सीटों पर अपने प्रत्याशियों के नाम का ऐलान कर सकती है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि जिन विधायकों की परफॉर्मेंस खराब होगी उनका टिकट कटना तय है। माना जा रहा है कि कांग्रेस के 95 में से 70-75 विधायकों को टिकट मिलना तय माना जा रहा है। जानकारों का कहना है कि चुनाव समिति ने लगभग 100 सीटों के नामों पर सहमति बना ली है। सूत्रों की मानें तो इनमें अधिकांश पार्टी के मौजूदा विधायकों के नाम हैं। सूची में 15-20 मौजूदा विधायकों के स्थान पर नए चेहरों के नाम शामिल किए गए हैं। प्रदेश कांग्रेस चुनाव समिति की बैठक में 100 विधानसभा सीटों के लिए पार्टी उम्मीदवारों के नामों पर सहमति बनाएं जाने की खबर है। समिति ने अपने अंदरूनी सर्वे और दिल्ली द्वारा कराए गए सर्वे के आधार पर संभावित उम्मीदवारों के नाम पर सहमति जताई है। समिति ने तय किया है कि लगभग 60 नामों की सूची जल्द घोषित कर दी जाए और जहां विधायकों के टिकट बदलने हैं, वहां उन्हें भरोसे में लेकर आगे निर्णय लिया जाए। इसके अलावा समिति ने उन विधानसभा क्षेत्रों के लिए भी अपने प्रत्याशियों के नाम पर मंथन किया, जहां पार्टी पिछले चुनाव में काफी कम मतों के अंतर से चुनाव हारी थी। खबर है कि इनमें से कुछ क्षेत्रों के लिए भी नामों की घोषणा पहली सूची में कर दी जाएगी। माना जा रहा है कि पार्टी जीती हुई विधानसभा सीटों के लिए अपने प्रत्याशियों के नामों का जल्द ऐलान कर देगी। सूत्रों का दावा है कि एक दर्जन विधायक इस बार टिकट से वंचित हो सकते हैं। पिछले दो माह से जिताऊ प्रत्याशियों की तलाश में जुटी प्रदेश कांग्रेस अब अंतिम फैसले की ओर है।

योजनाओं से साधा अति पिछड़ों को

अगर देखा जाए तो मप्र में भाजपा पिछले दो दशक से और केंद्र में पिछले 9 वर्षों से अति पिछड़ों को लुभाने की कवायद कर रही है। राज्य और केंद्र की सरकार ने योजनाओं के सहारे अति पिछड़ी जातियों को साधने में सफलता पाई है। इसी के तहत 2017 में रोहिणी आयोग और इस वर्ष 15 अगस्त को प्रधानमंत्री ने विश्वकर्मा योजना पर फोकस किया। विश्वकर्मा योजना के तहत लाभार्थी कामगारों को 5 फीसदी ब्याज दर पर 2 लाख रुपए तक का लोन दिया जा रहा है और साथ ही उन्हें 500 रुपए का भत्ता भी हर महीने ट्रेनिंग के साथ दिया जाएगा। इस योजना का फायदा विश्वकर्मा समुदाय से संबंध रखने वाली जातियां जैसे कि बधेल, बड़ीगर, बग्गा, विधानी, भरद्वाज, लोहार, बढ़ई, पंचाल इत्यादि को प्राप्त होगा। योजना के अंतर्गत कारीगरों को उनके काम की ट्रेनिंग भी दी जाएगी और जो लोग खुद का रोजगार चालू करना चाहते हैं उन्हें सरकार आर्थिक सहायता भी देगी। विश्वकर्मा योजना लागू करने के अलावा भाजपा के पास रोहिणी आयोग का पता भी है। इस आयोग का मकसद अति पिछड़ों की जातियों को छांटना और उन्हें ओबीसी आरक्षण में उनकी संख्या के अनुपात में आरक्षण सुनिश्चित करना है। रोहिणी आयोग के रूप में केंद्र सरकार के पास ऐसा कार्ड है जिसके चलते ही विपक्ष की रणनीति छिन्न-भिन्न हो जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा की सभी वर्गों को साधने की रणनीति ने आज प्रदेश में भाजपा को इतना मजबूत बना दिया है कि कांग्रेस का हर दांव अब फेल हो रहा है।

भाजपा ने मठाधीशों को दी जिम्मेदारी

मप्र में भाजपा इस बार का चुनाव कई स्तरों पर लड़ रही है। इसके पीछे पार्टी का मकसद है कि कोई भी ऐसा अवसर छूट न जाए जिससे जीत का रिकॉर्ड बनाने का मौका चूक न जाए। इसी कड़ी में पार्टी ने क्षत्रप फॉर्मूला भी आजमाने की रणनीति बनाई है। इसके तहत पार्टी ने क्षेत्रीय कद्दावर नेताओं को आगे करके चुनाव लड़ने का

फैसला किया है। यानी जो नेता जिस क्षेत्र से आता है, उसकी लोकप्रियता को उसी क्षेत्र में भुनाया जाएगा। कह सकते हैं कि चुनावी मोर्चे पर अग्रिम योद्धा क्षेत्रीय क्षत्रप ही रहेंगे। इस रणनीति के तहत पार्टी ने मठाधीशों को जिम्मेदारी दी है। यानी पार्टी के उम्मीदवारों को अपने क्षेत्र में जिताने की जिम्मेदारी मठाधीशों पर रहेगी। पार्टी के रणनीतिकारों का मानना है कि अगर किसी मठाधीश यानी पार्टी के दिग्गज नेता को उसके क्षेत्र में जिम्मेदारी दी जाएगी तो उसका चुनाव पर काफी असर दिखेगा। इसलिए क्षत्रपों को उन्हीं के क्षेत्र में चुनावी जिम्मेदारी सौंप दी गई है। केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, ज्योतिरादित्य सिंधिया और अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य को ग्वालियर-चंबल अंचल में सक्रिय किया गया है। भाजपा के महासचिव कैलाश विजयवर्गीय मालवांचल में मैदानी जमावट करेंगे, तो महाकौशल में केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते, प्रहलाद पटेल और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राकेश सिंह मोर्चा संभालेंगे। विंध्य अंचल की जिम्मेदारी मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के करीबी विधायक राजेंद्र शुक्ल को दी गई है। बुंदेलखंड को केंद्रीय मंत्री वीरेंद्र कुमार संभालेंगे, जबकि मध्य भारत क्षेत्र में मैदानी जमावट के साथ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पूरे प्रदेश में दौरे करेंगे।

ग्वालियर-चंबल पर अधिक फोकस

2018 के विधानसभा चुनाव के परिणामों के आधार पर भाजपा ने अपना सबसे अधिक फोकस ग्वालियर-चंबल पर कर रखा है। दरअसल, भाजपा ग्वालियर-चंबल अंचल को बड़ी चुनौती मान रही है। वर्ष 2018 के चुनाव में इस अंचल की 34 में से भाजपा को केवल सात सीटें मिली थीं। जबकि 27 सीटें कांग्रेस ने जीतीं थीं। यह तस्वीर 2013 के चुनाव से एकदम अलग थी। तब भाजपा को 20 और कांग्रेस को 12 सीटें मिली थीं। भाजपा की सीटों में कमी की मुख्य वजह एट्रोसिटी एक्ट में संशोधन को लेकर हुए आंदोलन के साथ ज्योतिरादित्य सिंधिया के चेहरे के जादू को भी माना गया। कांग्रेस ने कमलनाथ और सिंधिया के चेहरे पर ही पिछला चुनाव लड़ा था। भाजपा ने इस चुनाव में दोनों ही कमियों को पूरा करने की कोशिश की है। इस बार सिंधिया भाजपा के साथ हैं। वहीं सागर में संत रविदास मंदिर के लिए भूमिपूजन करके अनुसूचित जाति वर्ग को भी साधने की कोशिश की है। इसके अलावा इस अंचल के कद्दावर नेताओं नरेंद्र सिंह तोमर, ज्योतिरादित्य सिंधिया और लाल सिंह आर्य को पार्टी नेताओं-कार्यकर्ताओं को संगठित करके रखने और वोट प्रतिशत बढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

यात्रा पॉलिटिक्स के सहारे भाजपा-कांग्रेस, किसे मिलेगी सत्ता की चाबी?

मप्र में अब तक जातिगत पॉलिटिक्स करने वाली भाजपा और कांग्रेस ने अब यात्रा पॉलिटिक्स शुरु कर दिया है। हालांकि यह तो वक्त ही बताएगा कि भाजपा और कांग्रेस में से किसकी यात्रा सफल होती है और किसे प्रदेश की सत्ता की चाबी मिलती है। इन यात्राओं को दोनों ही प्रमुख दलों का चुनावी शंखनाद भी माना जा रहा है। जानकारी के अनुसार 2018 की तरह प्रदेश कांग्रेस 2023 के विधानसभा चुनाव में भी सफलता हासिल करना चाहती है। 2023 के विधानसभा चुनाव में सफलता हासिल करने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ों यात्रा की तर्ज पर हाथ से हाथ जोड़ो यात्रा निकाली गई। गौरतलब है कि कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा 30 जनवरी को श्रीनगर में समाप्त हुई। 3 हजार 570 किलोमीटर की यात्रा तय कर पार्टी ने सिर्फ अलग-अलग राज्य नहीं टापे, बल्कि ये भी साबित करने की कोशिश की, कि जमीन पर कांग्रेस की उपस्थिति अभी भी बरकरार है। 2024 के लोकसभा चुनाव भले ही अगले साल हैं, लेकिन 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव की तपिश गर्म है, उसे देखते हुए कांग्रेस ने इस यात्रा के जरिए एक सियासी शंखनाद बजा दिया है। ऐसे में सवाल ये उठता है कि इस भारत जोड़ो यात्रा से कांग्रेस को हासिल क्या हुआ? सवाल ये है कि क्या राहुल गांधी ने इस यात्रा के जरिए एक नई सियासी पारी शुरू की है? क्या विपक्षी खेमे में एक बार फिर कांग्रेस की भूमिका निर्णायक बन गई है?

कैसी होगी नई न्याय संहिता?

संसद के मानसून सत्र के आखिरी दिन गृहमंत्री अमित शाह ने एक ऐतिहासिक पहल करते हुए भारतीय दंड संहिता (इंडियन पीनल कोड) में आमूलचूल बदलाव का प्रस्ताव संसद के सामने प्रस्तुत किया। हालांकि यह प्रस्ताव अभी सदन पटल पर रखने के साथ ही स्टैंडिंग कमेटी के पास भेज दिया गया है। भविष्य में विधेयक के पारित होते ही ब्रिटिश शासकों द्वारा बनाए गए इंडियन पीनल कोड (आईपीसी 1860) का अंत हो जाएगा और उसकी जगह भारतीय न्याय संहिता 2023 कानूनों का नया आधार बनेगी। लोकसभा में बोलते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री मोदी के हवाले से कहा कि उन्होंने 2019 में ही कहा था कि ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा बनाए गए कानूनों की गहन समीक्षा की जरूरत है। तब से अब तक गृह मंत्रालय ने इस दिशा में राज्य सरकारों, केंद्र शासित प्रदेशों, उच्च न्यायालयों और विधि विश्वविद्यालयों के साथ लंबे विचार विमर्श के बाद भारतीय न्याय संहिता 2023 की रूपरेखा तैयार की है जो संसद से पास हो जाने के बाद आईपीसी 1860 की जगह लेगी।

ब्रिटिश शासकों ने मैकाले के नेतृत्व में 1934 में पहली कमेटी बनाई थी जिसे भारत की जनता पर शासन करने के लिए कानूनों का निर्माण करना था। मैकाले ब्रिटिश शासकों द्वारा बनाए गए पहले लॉ कमीशन के पहले चेयरमैन भी थे। एक साल के भीतर उन्होंने अपना ड्राफ्ट ब्रिटिश शासन को सौंप दिया। लेकिन इसके बाद अगले 25 साल तक कानून बनाने पर ब्रिटिश शासकों द्वारा विचार-विमर्श चलता रहा। 1857 की क्रांति ने उन्हें एक बार फिर से कानूनों पर नए सिरे से विचार करने के लिए विवश किया। आखिरकार 1860 में भारतीयों पर शासन करने के उद्देश्य से इंडियन पीनल कोड बनाने में सफल हुए जिसे 1861 में ब्रिटिश पार्लियामेंट से मिली मंजूरी के बाद भारत में लागू कर दिया गया था।

अब जबकि शासन करने और दंड देने वाले कानूनों की एक रूपरेखा बन गई थी इसलिए साक्ष्य को लेकर भी कानून की जरूरत महसूस हुई। इसलिए 1872 में एविडेंस एक्ट बनाया गया। इसके बाद 1882 में क्रिमिनल प्रोसीजर कोड जिसे सामान्य भाषा में सीआरपीसी कहते हैं उसका निर्माण किया गया। इस तरह तीन अलग-अलग प्रावधानों से ब्रिटिश हुकूमत ने भारत में दंड व्यवस्था की स्थापना और संचालन को सुनिश्चित किया। समय-समय पर इनमें नए कानून जुड़ते रहे। पूर्व के कानूनों में बदलाव भी होते रहे लेकिन मूल ढांचा वही रहा जिसका उद्देश्य नागरिकों को न्याय देने से अधिक अपराध करने पर कठोर दंड देने पर केंद्रित था। इसलिए गृहमंत्री अमित शाह ने जब लोकसभा में यह कहा कि भारत में लोग कहते हैं कि सजा की कोई जरूरत नहीं है। कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाना ही भारत में सजा है, तो कुछ गलत नहीं कह रहे थे। 1862 में जब पहली बार ब्रिटिश हुकूमत ने कलकत्ता के फोर्ट विलियम में हाईकोर्ट की स्थापना की थी, तब से लेकर अब तक भारत का कोर्ट सिस्टम न्याय पाने से अधिक सजा दिलाने या सबक सिखाने के लिए ही इस्तेमाल होता है। हत्या और यौन हिंसा जैसे गंभीर अपराधों में भी सजा सुनिश्चित होते-होते जीवन बीत जाता है।

भारत की कानून व्यवस्था में इस देरी के लिए बढ़ती जनसंख्या और संसाधनों की कमी को जिम्मेवार ठहराया जाता है। लेकिन जिस एक बात की पूरी तरह से अनदेखी की जाती है वह यह कि पूरी कानूनी प्रक्रिया ही इतनी उलझी हुई है कि पेशेवर अपराधी या फिर पहुंच वाले लोग इसका दुरुपयोग करके बच निकलते हैं। इसके उलट हजारों गरीब लोग सालों साल जेलों में इसलिए पड़े रहते हैं क्योंकि उनके पास जमानत कराने का पैसा नहीं होता या जमानतदार की व्यवस्था नहीं हो पाती। कुछ कमियों की ओर अमित शाह ने लोकसभा में भी संकेत किया। जैसे कई बार यह सुनने में आता है कि अगर किसी को फंसाना हो तो **सर्च या जब्ती** के नाम पर पुलिस ही आपत्तिजनक वस्तु को उस व्यक्ति के घर में रखकर उसे फंसा देती है। अब अगर भारतीय न्याय संहिता को संसद से मंजूरी मिलती है तो इसे रोकने के लिए सर्च और जब्ती के समय वीडियोग्राफी को अनिवार्य किया जाएगा। इसी तरह पुलिस कई बार आरोपियों को घर से उठा लेती है लेकिन उसकी गिरफ्तारी को रिकार्ड में दर्ज नहीं किया जाता। नए प्रावधान के तहत अब अगर पुलिस किसी को उठाती है तो उसके परिवार को लिखित गारंटी देनी होगी कि उस व्यक्ति की सुरक्षा की जिम्मेवारी पुलिस की है। और भी कुछ प्रावधानों का उल्लेख अमित शाह ने किया है। जैसे चार्जशीट को अब अधिकतम 90 दिन और कोर्ट से अनुमति मिलने के बाद 180 दिन में अनिवार्य रूप से दाखिल करना होगा। 7 साल से अधिक सजा वाले कानूनों में पुलिस द्वारा क्लोजर रिपोर्ट लगाने से पहले पीड़ित का बयान दर्ज करना होगा।

● **राजेश बोरकर**

प्रस्तावित न्याय संहिता में बदलाव की जरूरत

प्रस्तावित भारतीय न्याय संहिता में एफआईआर दर्ज करने, उसकी चार्जशीट लगाने और फिर अदालती कार्रवाई में प्रमाण सहित अपराध को साबित करने के बीच जो समय का लंबा अंतराल है उसे कम करने की कोशिश की जाएगी। इसी तरह जिन अपराधों में 7 साल या उससे अधिक की सजा का प्रावधान होगा उसमें फोरेंसिक जांच को अनिवार्य किया जाएगा ताकि किसी को गलत तरीके से फंसाया न जाए और दोषी निर्दोष न सिद्ध होने पाए। अदालतों का भी बोझ कम करने के लिए समरी ट्रायल को बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा जिससे अदालतों पर 40 प्रतिशत तक केसों का बोझ कम हो जाएगा। इसका प्रावधान सीआरपीसी संशोधन 1973 के तहत किया गया था। अदालतों में तीन तरह के ट्रायल होते हैं। वारंट, समन और समरी। वारंट और समन ट्रायल में समय अधिक लगता है, वहीं समरी ट्रायल में केसों का निपटारा जल्दी होता है। इसमें अपेक्षाकृत कम संवेदनशील अपराधों का निपटारा किया जाता है। इसलिए अगर इसे प्रोत्साहन मिलता है तो न केवल त्वरित न्याय मिलेगा बल्कि अदालतों पर से पेंडिंग केस का बोझ भी कम होगा। इसी तरह मानहानि या ऐसे ही मुकदमों में संबंधित समाज की सेवा को दंड के रूप में रखने का प्रस्ताव है। राजद्रोह को खत्म करके उसकी जगह देशद्रोह का प्रावधान करने का प्रस्ताव है। देशद्रोह में किसी ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को दंडित किया जाएगा जो देश की एकता, अखंडता को नुकसान पहुंचाने के लिए कार्य कर रहा है।

संसद की कार्यवाही का मिनट दर मिनट खर्च करदाताओं यानी देश की जनता के जेब से जाता है। लेकिन देखने में यह आ रहा है कि संसदीय कार्यवाही की उत्पादकता दर लगातार घटती जा रही है। 1978 से लेकर 1989 के दौरान इसकी उत्पादकता 135 प्रतिशत तक थी जो 1990 से 2004 के दौरान घटकर 90 प्रतिशत और 2004 से 2014 तक यूपीए के शासन में और नीचे गिरकर 87 प्रतिशत पर आ गई थी। 2014 के बाद संसद की औसत सालाना उत्पादकता दर 63 प्रतिशत पर आ गई है।

काम कम, हंगामा ज्यादा

भारतीय प्रशासन में संविधान सर्वोपरि है, पर राज्य का हर अंग किसी न किसी रूप में जनता के प्रति जवाबदेह है। चुनकर आए प्रतिनिधियों की कड़ी में सांसद सबसे ऊपर होते हैं। संसद अपनी प्रक्रियाओं को खुद रेगुलेट करती है और उसकी कार्यवाही की व्यवस्था को किसी भी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती। लेकिन इन सबके लिए संसद का चलना सबसे अहम है। मालूम हो कि 14वीं और 15वीं लोकसभा में ज्वलंत विषयों पर 113 अल्पकालिक चर्चाएं हुई थीं लेकिन 16वीं और 17वीं लोकसभा के दौरान इसकी संख्या घटकर 42 पर आ गई। इसी तरह 14वीं और 15वीं लोकसभा में 152 ध्यानाकर्षण प्रस्ताव को अनुमति मिली थी लेकिन बाद के सत्रों में इसकी संख्या घटकर बहुत कम हो गई। वर्ष 2020 में कोरोना के कारण संसद महज 33 दिन चली थी। 2021 में 58 दिन और 2022 में 56 दिन चली। संसद का कार्य व्यापार लगातार सिकुड़ता गया, सारी बहसें टीवी स्क्रीन पर होने लगीं। संसदीय इतिहास में सबसे बेहतरीन कामकाज 1952 से 1957 के बीच हुआ जब 677 बैठकों में 319 विधेयक पारित किए गए।

संसद में मौजूदा गतिरोध मणिपुर की घटना पर चर्चा को लेकर था। सरकार चर्चा कराने के लिए तैयार थी। केंद्रीय गृहमंत्री ने चर्चा करने के लिए विपक्षी दल के नेताओं को पत्र लिखकर चर्चा में शामिल होने की अपील भी की थी। सत्तापक्ष के सांसदों ने नियम 176 के तहत मणिपुर पर चर्चा की मांग राज्यसभा में की, जबकि विपक्षी दल नियम 267 के तहत चर्चा का लगातार नोटिस देते रहे। नियम 267 में लंबी चर्चा के साथ मतदान का प्रावधान है, जबकि 176 के तहत अल्पकालिक चर्चा होती है। कोई पक्ष झुकने के लिए तैयार नहीं था। आम आदमी पार्टी के सांसद सदन की कार्यवाही में व्यवधान उत्पन्न करने के कारण पूरे सत्र के लिए निलंबित भी किए गए। लोकसभा के पूर्व महासचिव एवं संविधान के जानकार पीडीटी आचारी का कहना है कि संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष से संवाद और संसद के प्रति संवैधानिक और नैतिक उत्तरदायित्व सर्वोपरि होता है। सुभाष कश्यप ने भी एक खास मौके पर अपनी टिप्पणी में संसद में विरोध के स्वर को गंभीरता से लेने की बात कही थी। भारत के संसदीय इतिहास में विरोध का स्वर प्रारंभ से ही महत्व के साथ रेखांकित किया जाता रहा है। 1952 में संसद की पहली बैठक में ही हंगामा हुआ था। सत्ता में आते ही नेहरू सरकार निरोधात्मक कानून ले आई थी। यह वही कानून था जिसे अंग्रेजी हुकूमत ने राष्ट्रवादियों के विरूद्ध प्रयोग किया था।

साल दर साल कम हो रहे सत्र

एक वर्ष में संसद का सत्र लगभग 100 दिनों तक चलता है और प्रतिदिन संसद के दोनों सदनों में लगभग 6 घंटे काम होता है। संसदीय आंकड़ों से पता चलता है कि दिसंबर 2016 के शीतकालीन सत्र के दौरान लगभग 92 घंटे व्यवधान की भेंट चढ़ गए। इस दौरान लगभग 144 करोड़ रुपए जिसमें 138 करोड़ रुपए संसद चलने का खर्च तथा 6 करोड़ रुपए सांसदों के वेतन भत्ते एवं आवास का नुकसान हुआ। सांसदों को विशेषाधिकार प्राप्त है। इनका संसदीय व्यवहार परम स्वतंत्र न सिर पर कोई, की उक्ति को चरितार्थ करता है। पगार बढ़ाने की मांग इनकी ओर से लगातार हो रही है लेकिन संसदीय कार्यवाही के प्रति वैसी गंभीरता नहीं दिखाई देती। जनता की गाढ़ी कमाई को जाया करने में इन्हें कोई संकोच नहीं होता। हाल के कुछ वर्षों में संसद के अधिकांश सत्र ऐसे चले हैं जिनमें शुरू में हंगामा होता है फिर गतिरोध बना रहता है, बाकी के बचे कुछ दिनों में अधिकांश बिल बिना बहस सत्ताधारी पक्ष पास कराने में सफल हो जाता है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल है कि जो विधेयक बिना चर्चा के कानून की शक्ल ले रहे हैं क्या वे कानून जन भावना से न्याय करने वाले होंगे? ऐसे में संसद के गतिरोध को समाप्त करने के लिए तुरंत जरूरी पहल की आवश्यकता है। सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों को आपसी संवाद सम्मान और जनता की अपेक्षाओं के प्रति संवेदनशीलता जैसे मुद्दे पर बल देने की जरूरत है। बात-बात पर अपनी नाक का सवाल बनाने से न केवल संसद की महत्ता और गरिमा पर असर पड़ रहा है बल्कि आम जनता में भी अपने प्रतिनिधियों के प्रति सम्मान का भाव धीरे-धीरे घट रहा है। अब जिम्मेदारी चुनकर आए माननीयों की है कि वे परम स्वतंत्र के शिखर से उतरकर जनता के बीच अपनी साख कैसे बचाते हैं।

संसद में सड़कछाप भाषा का इस्तेमाल बढ़ा

बहरहाल विचारणीय विषय यह है कि संसद में जिस तरह से हंगामा सत्तापक्ष के सदस्य करते हैं और जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल वो आजकल करने लगे हैं, क्या वो सड़कछाप भाषा नहीं है? ऐसे में अगर विपक्ष के संजय सिंह को संसद से निष्कासित किया जा सकता है, तो फिर सत्तापक्ष के सांसदों को निष्कासित क्यों नहीं किया जाता? हालांकि ऐसा नहीं है कि पहले सांसदों को निष्कासित नहीं किया गया, लेकिन इतनी छोटी बातों पर किसी सांसद को सदन से निष्कासित किया गया हो, यह मेरी जानकारी में नहीं है। भाजपा की वाजपेई सरकार के समय की बात है, जब अटल बिहारी वाजपेई प्रधानमंत्री थे और प्रमोद महाजन संसदीय कार्य मंत्री थे, तब विपक्ष ने सदन में कुछ ज्यादा ही हंगामा कर दिया था, जिस पर प्रमोद महाजन ने बड़े विनम्र स्वभाव से कहा कि आपका प्रश्न सरकार ने सुन लिया है। हम बीच का रास्ता निकाल लेंगे। आइए, बैठकर बात करें। यह भाषा हुआ करती थी संसद की। आज की भाजपा कई अपने दिग्गज नेताओं को याद करती है, उनके जन्मदिवस और पुण्यतिथियां मनाती है; लेकिन प्रमोद महाजन जैसे दिग्गज नेता को याद तक नहीं करती है। इसकी क्या वजह है? वो पुराने लोग अच्छी तरह जानते हैं।

प्रथम सदन में मुख्य विपक्षी कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट सदस्य थे जो आजादी के पूर्व और बाद में भी जेल जाते रहे थे। उन्होंने इस ब्रिटिश काले कानून का भारतीय गणराज्य में भारी विरोध किया था। विरोध के आगे झुकते हुए सरकार को निरोधात्मक कानून को बदलना पड़ा था। वर्ष 1973 में पेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोतरी के खिलाफ पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी बैलगाड़ी लेकर संसद भवन के उस हिस्से तक पहुंच गए थे जहां लोकसभा अध्यक्ष का दफ्तर है। संसद में धरने की सबसे अधिक यादगार घटना राजनारायण की है जिन्होंने 1975 में इंदिरा गांधी के विरूद्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनाव में गड़बड़ी का केस दायर किया था और जिसमें वे जीत भी गए थे। 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में भी राजनारायण ने इंदिरा गांधी को शिकस्त दी थी। वे सभापति के आसन के सामने धरने पर बैठ जाते थे, उन्हें कभी सदन से निलंबित नहीं किया गया। वर्ष 1978 में प्याज के दाम में हुई बढ़ोतरी के खिलाफ लोकदल के सांसद रामेश्वर सिंह ने प्याज की माला पहनकर तथा सिर पर प्याज की गठरी लेकर सदन में दाखिल होकर विरोध प्रदर्शन किया था।

इसी तरह धरना प्रदर्शन के कारण सितंबर 2012 में 20 दिनों का मानसून सत्र 13 दिनों तक ठप रहा। उस सत्र के लिए कुल 30 दिन प्रस्तावित थे, लेकिन विरोध के कारण काम नहीं हो सका। 2021 का मानसून सत्र पेगासस पर विरोध के कारण बाधित हुआ और परिणाम स्वरूप करदाताओं के 133 करोड़ रुपए बर्बाद हो गए। वर्ष 2022 का मानसून सत्र भी हंगामे के साथ ही शुरू हुआ था। विपक्ष की ओर से मूल्य वृद्धि और जीएसटी की दरों में बढ़ोतरी को मुद्दा बनाया गया जबकि सरकारी पक्ष ने नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सोनिया गांधी से पूछताछ को लेकर विपक्ष को घेरने की कोशिश की थी।

देश के लोकतंत्र के मंदिर में जो मानसून सत्र में हुआ वह बेहद शर्मनाक और अफसोसजनक है। सवाल यह है कि सांसदों की अभद्र और तल्ख भाषा से देश के लोगों की मानसिकता पर क्या असर पड़ेगा? वे एकता का पाठ कैसे सीखेंगे? क्या उनमें मतभेद पैदा नहीं होगा? क्या वे जगह-जगह लड़ने पर आमादा नहीं होंगे? और इसका परिणाम संसद के बाहर देश के हर शहर, हर कस्बे और हर गांव में देखने को मिल भी रहा है। चाहे वो जगह-जगह लोगों के बीच बढ़ता तनाव और लड़ाई के रूप में हो, या चाहे मणिपुर में तीन महीने से भड़की शर्मनाक हिंसा के बाद हरियाणा के नूंह, मेवात और गुड़गांव में हिंसक झड़पों की साजिश हो। हालांकि ऐसा नहीं है कि लोकतंत्र के मंदिर संसद में पहले कभी इतनी तीखी बहस, वॉकआउट और एक-दूसरे के ऊपर छींटाकशी का दौर नहीं चला है। लेकिन जैसा इस बार संसद के अंदर हुआ, वैसा पहले कभी नहीं हुआ। न ही ऐसा हुआ कि सवालों से सरकार इस कदर बचती रही हो और न ही ऐसा हुआ कि रिश्ते इतने तल्ख हो गए हों कि उनकी कड़वाहट सरेआम दिखने लगी हो और इतनी ज्यादा बढ़ गई हो कि एक-दूसरे के सभी दुश्मन बन बैठे हों।

पहले जब संसद में सरकार और विपक्ष के बीच तीखी बहस हुआ करती थी, तो संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में चाय पीने से लेकर खाना खाने तक सत्तापक्ष और विपक्ष के नेता एक साथ दिखते थे और एक-दूसरे से हंसकर मिलते थे, कभी-कभी तो हल्की-फुल्की मजाक भी हुआ करती थी। लेकिन पिछले करीब एक दशक से यह सिलसिला धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है और अब तो हालात यहां तक पहुंच गए हैं कि सत्तापक्ष और विपक्ष के देशभर से चुने हुए प्रतिनिधि एक-दूसरे का चेहरा देखने से भी कतराते दिखते हैं। दुश्मनी इतनी कि सत्तापक्ष विपक्षी दलों को खत्म करने पर ही आमादा-सा दिखाई देता है। कहा जाता है कि विपक्ष और निष्पक्ष मीडिया के बिना सरकार निरंकुश हो जाती है। क्या यही वजह है कि आज की केंद्र सरकार विपक्ष और निष्पक्ष मीडिया को खत्म करने पर आमादा है कि क्योंकि ये दोनों उसकी कमियों को उजागर कर रहे हैं? एक तरफ मणिपुर दंगों से लेकर कई महत्वपूर्ण सवालों से जिस तरह कतराकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बार संसद के मानसून सत्र में उपस्थित नहीं रहे। दूसरी तरफ सवाल पूछने पर, प्रति फाड़ने पर सांसदों को निष्कासित किया गया। क्या संसद में ऐसी घटनाएं पहले नहीं हुईं? लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला संसद में नहीं जाते हैं। कहते हैं कि जब तक विपक्ष हंगामा बंद नहीं करेगा, वो संसद में नहीं जाएंगे। प्रधानमंत्री इस मानसून सत्र से पूरी तरह गायब रहे। बस आखिरी दिन औपचारिकतावश आए। बड़ी अजीब बात है कि क्या कोई सवालों के डर से संसद में नहीं आएगा? तो कोई हंगामे को लेकर नहीं आएगा, फिर संसद चलेगी कैसे?

● **विपिन कंधारी**

संविधान का प्रथम अनुच्छेद इंडिया दैट इज भारत वाक्यांश का प्रयोग करता है। अर्थात् इंडिया की पहचान भारत है जो हजारों वर्ष पुराना है जिसकी सभ्यता-संस्कृति की प्रशंसा संपूर्ण विश्व करता है, जो हमारे गौरवशाली अतीत का प्रतीक है। उसके विपरीत यह कौन सा छद्म इंडिया है जो हाल में बेंगलुरु में जन्मा, जिसके पांच टुकड़े हैं, जिसका वास्तविक नाम इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस है।

मोदी विरोध से आगे बढ़े विपक्ष

जब से विपक्षी दलों ने बेंगलुरु में बैठक की है और नए इंडियन नेशनल डेमोक्रेटिक इनक्लूसिव एलायंस को इंडिया नाम दिया है, तब से 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले राजनीतिक नैरेटिव थोड़ा बदल गया है। इस गठबंधन को इस तरह से प्रस्तुत किया जा रहा है कि यह भाजपा के लिए चुनौती बन सकता है। इसके नाम ने भाजपा को थोड़ा रक्षात्मक बना दिया है क्योंकि अब नए गठबंधन का नाम लेकर उसकी आलोचना करना मुश्किल हो जाएगा। भाजपा को डर है कि इससे गलतफहमियां निर्मित हो सकती हैं और जनता तक यह संदेश पहुंचाया जा सकता है कि भाजपा इंडिया यानी भारत की आलोचना कर रही है।

हाल के दिनों में अनेक भाजपा नेताओं ने इस नए गठबंधन को आड़ेहाथों लेने की कोशिशें की हैं और भाजपा भी लोगों तक यह संदेश पहुंचाने की कोशिशों में लगी है कि यह नया गठजोड़ कुछ भ्रष्ट नेताओं और वंशवादी पार्टियों के संकलन से बढ़कर कुछ नहीं है। अभी यह निश्चित नहीं है कि यह नया गठबंधन चुनावी रूप से कितना ताकतवर साबित होगा, लेकिन देश में यह धारणा अवश्य निर्मित हो गई है कि वह भाजपा को चुनौती देने में सक्षम है और इस विचार से भाजपा असहज महसूस करने लगी है।

हालिया राजनीतिक बहसें इस पर केंद्रित रही हैं कि इंडिया बनाम एनडीए में से कौन-सा गठबंधन अधिक मजबूत है। इंडिया गठबंधन में 28 पार्टियां सम्मिलित हैं तो एनडीए को 38 पार्टियों का समर्थन प्राप्त है। 2019 के लोकसभा चुनावों और हाल में विभिन्न राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के परिणामों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इंडिया गठबंधन राज्यों के चुनावों में एनडीए की तुलना में ज्यादा मजबूत है, लेकिन वह लोकसभा चुनावों में भाजपा को चुनौती देने की स्थिति में अभी नहीं है। इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों की वर्तमान में 11 राज्यों में सरकारें हैं, जबकि एनडीए पार्टियां देश के 14 राज्यों में सत्तारूढ़ हैं। वहीं ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना जैसे राज्यों में उन पार्टियों की सरकारें हैं, जिन्होंने अभी तक दोनों ही गठबंधनों में से किसी में भी शामिल होने का निर्णय नहीं लिया है। इस गणना से ऐसा लग सकता है कि विधानसभा चुनावों में भी एनडीए का पलड़ा भारी होगा, लेकिन थोड़ा सतर्क विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इंडिया गठबंधन राज्यों में भारी पड़ेगा।

बीते दिनों 26 विपक्षी दलों ने इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस यानी आईएनडीआईए गठबंधन बनाया, जिसका संक्षिप्तीकरण कर ये दल उसे इंडिया नाम दे रहे हैं। इन दलों ने सोचा कि चुनावों को इंडिया बनाम भाजपा बनाने से उन्हें लाभ मिलेगा, लेकिन यह नहीं सोचा कि जनता क्या कहेगी? क्या देश का नाम राजनीतिक लाभ के लिए प्रयोग करना उचित है? गांधीजी ने तो इंडियन नेशनल कांग्रेस का नाम भी चुनावी स्पर्धा के लिए वर्जित किया था। अपनी हत्या से ठीक पहले उन्होंने इंडियन नेशनल कांग्रेस का विघटन कर उसे लोक सेवक संघ में बदलने का संविधान बना दिया था। उसे गांधीजी की अंतिम इच्छा कहा गया, लेकिन नेहरू ने वह इच्छा नहीं मानी। उलटे आज तो कांग्रेस और विपक्षी दलों ने देश का नाम ही चुनावी दांव पर लगा दिया है।

संविधान का प्रथम अनुच्छेद इंडिया दैट इज भारत वाक्यांश का प्रयोग करता है। अर्थात् इंडिया की पहचान भारत है, जो हजारों वर्ष पुराना है, जिसकी सभ्यता-संस्कृति की प्रशंसा संपूर्ण विश्व करता है, जो हमारे गौरवशाली

इंडिया से एनडीए फिलहाल काफी मजबूत

देश की कुल 4120 विधानसभा सीटों में से इंडिया गठबंधन-सहयोगी 1852 पर विजेता हैं, जबकि एनडीए के सहयोगियों के पास 1585 सीटें हैं। शेष 683 विधानसभा सीटें गुटनिरपेक्ष पार्टियों के पास हैं। राज्यों के स्तर पर इंडिया गठबंधन लोकप्रिय समर्थन के मामले में भी आगे है। राज्यों में पिछले विधानसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन-सहयोगियों को 39.7 प्रतिशत तो एनडीए पार्टियों को 34.7 प्रतिशत वोट मिले हैं। 25.5 प्रतिशत वोट निर्गुट पार्टियों के खाते में गए हैं। लेकिन लोकसभा चुनावों की बात आते ही परिदृश्य बदल जाता है। 2019 के परिणामों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इसी इंडिया गठबंधन के पास 171 सीटें हैं, जबकि एनडीए गठबंधन के पास 303 सीटें। वोट शेयर के मामले में भी एनडीए आगे है, जिसके पास इंडिया गठबंधन के 37.2 प्रतिशत वोटों की तुलना में 42.3 प्रतिशत वोट हैं। इससे पता चलता है कि इंडिया गठबंधन की एकजुटता के बावजूद एनडीए उस पर भारी पड़ सकता है।

अतीत का प्रतीक है। उसके विपरीत यह कौन सा छद्म इंडिया है जो हाल में बेंगलुरु में जन्मा, जिसके पांच टुकड़े हैं, जिसका वास्तविक नाम इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस है। हमने नकली उत्पादों के बारे में तो सुना था, लेकिन सत्ता हथियाने के लिए विपक्ष नकली इंडिया को ही गढ़ लेगा, यह कल्पना से परे है। क्या कांग्रेस बताएगी कि वह कौन सा इंडिया है, जिसे जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक डिस्कवरी आफ इंडिया में खोजा था? वह कौन सा इंडिया है, जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने यंग इंडिया का नाम दिया था? वह कौन सा इंडिया है, जिसके तिरंगे की शान में लाखों भारतीय जन और जवान शहीद हो गए?

विपक्षी दलों द्वारा इंडिया को अपने गठबंधन के संक्षिप्त नाम (एब्रीविएशन) के रूप में प्रयोग करना संप्रतीक और नाम (अनुचित प्रयोग निवारण) अधिनियम, 1950 का उल्लंघन है। इस कानून की धारा-3 के अनुसार किसी भी व्यक्ति द्वारा भारत सरकार के नाम का प्रयोग किसी भी कार्य या व्यवसाय में वर्जित है। धारा-2(3) के अनुसार किसी नाम का संक्षिप्तीकरण भी नाम ही माना जाएगा। विपक्ष के पास यूपीए या संप्रग अच्छा-खासा नाम था। उसे नए नाम की जरूरत क्यों पड़ी? क्या विपक्ष नाम के आधार पर चुनाव लड़ेगा? उसके पास जनता को बताने के लिए कोई काम या उपलब्धि नहीं है? क्या उसका सिर्फ यही काम है कि मोदी सरकार की निराधार निंदा करे, प्रधानमंत्री मोदी को अपशब्द कहे? राजनीति में सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों को काम करना पड़ता है। क्या विपक्ष बताएगा कि मोदी सरकार के विकल्प के रूप में उसके पास ऐसी कौन सी विचारधारा, नीतियां, लक्ष्य और कार्यक्रम हैं, जो उससे बेहतर हैं? देश का नेतृत्व कौन करेगा? मोदी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की जो छवि बनाई है, क्या वैसी क्षमता किसी विपक्षी नेता में है? देश में जो स्थिरता आई है, विकास और लोक-कल्याण के जो प्रतिमान गढ़े गए हैं, भ्रष्टाचार पर जैसा अंकुश लगा है, समावेशी समाज की ओर जो कदम बढ़े हैं, जिस समर्पण के साथ मोदी सरकार काम कर रही है, क्या विपक्ष से उसके शतांश की भी उम्मीद की जा सकती है?

यह तो संभव नहीं कि किसी सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों और निर्णयों में कोई खामी न हो। मोदी सरकार सहित सभी पूर्ववर्ती सरकारों पर यह बात लागू होती है, लेकिन सवाल है कि क्या राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन सरकारों का कोई मॉडल है, जो जनता को भरोसा दिला सके कि यदि विपक्षी गठबंधन सत्ता में आया तो वह मोदी सरकार से बेहतर काम करेगा? 1977 से 1980 तक चार दलों की जनता पार्टी सरकार या 1998 से 2004 तक अटल बिहारी वाजपेयी की राजग सरकार को स्थिर और मजबूत सरकार के रूप में नहीं जाना गया। 2004 से 2014 तक मनमोहन सिंह के नेतृत्व में संप्रग सरकार ने तो कुशासन और भ्रष्टाचार के नए-नए कीर्तिमान ही बना दिए। ऐसे में, 2024 के लोकसभा चुनावों को लेकर विपक्षी गठबंधन का क्या एजेंडा है?

विपक्ष सरकार की आलोचना अवश्य करे, लेकिन उसे जनता को भरोसा दिलाना होगा कि उसकी आलोचनाओं में दम है। उसे मोदी विरोध की नकारात्मकता से आगे निकल कर अपने सकारात्मक एजेंडे पर ध्यान देना होगा। इन दलों को समझना होगा कि जनता जिस मोदी को चाहती है, उसके प्रति अपशब्द या अनर्गल आलोचना उन्हें कितनी महंगी पड़ सकती है। विपक्षी गठबंधन को जनता को यह भी समझाना होगा कि जिन दलों के साथ राज्यों में उनकी चुनावी स्पर्धा है, पारस्परिक कटुता है, जिनके नेताओं पर उन्होंने भ्रष्टाचार एवं अपराध के गंभीर आरोप लगाए हैं, उन्हें साथ लेकर मोदी को हटाने की मुहिम चलाने की असली वजह क्या है?

बंगाल में पिछले उपचुनाव में कांग्रेस द्वारा तृणमूल से सागरदिघी सीट छीनने, कांग्रेस द्वारा तृणमूल पर गोवा और मेघालय में भाजपाई गेम खेलने का आरोप लगाने और त्रिपुरा में कांग्रेस द्वारा वामपंथी दलों की उपेक्षा से गठबंधन के अनेक दल कांग्रेस से आहत हैं। जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं, उनके नेता कांग्रेस या अन्य पार्टियों को सीट देना नहीं चाहेंगे, जैसे बंगाल में ममता, बिहार में नीतीश-लालू तथा दिल्ली और पंजाब में अरविंद केजरीवाल। हालांकि, जहां उनकी सरकार नहीं है, जैसे उप्र में अखिलेश यादव, महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे आदि वहां कांग्रेस या अन्य दलों के प्रति नरमी हो सकती है। इसके बावजूद कोई संदेह नहीं कि टिकट बंटवारे की बात आते-आते विपक्ष में कई दरारें पड़ेंगी। ऐसे में, संभव है कि कांग्रेस को अधिकतर राज्यों में वांछित स्पेस न मिले और उसे निर्णय लेना पड़े कि राहुल की भारत जोड़ो यात्रा और प्रियंका के वाराणसी से चुनाव लड़ने की संभावना से उपजे दलीय उत्साह के कारण पार्टी सभी लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़े। यदि ऐसा न हुआ तो भी विभाजित, विचारधारा-विहीन, नीति-विहीन, कार्यक्रम-विहीन और मोदी-विरोध की आधारशिला पर वोट मांगने वाले इंडिया गठबंधन के नाम और मोदी सरकार के काम के आधार पर ही आगामी लोकसभा चुनाव होगा।

● इन्द्र कुमार

वंशवादी राजनीति का इतिहास

कांग्रेस की देखा-देखी आज लगभग हर प्रदेश में कोई न कोई राजनीतिक परिवार ऐसा है, जो वहां की राजनीति के एक हिस्से को नियंत्रित कर रहा है। वंश के आधार पार्टी या फिर सरकार का नेतृत्व सौंपने में जब कांग्रेस ने योग्यता-क्षमता का कोई ध्यान नहीं रखा तो अन्य दल क्यों रखेंगे? आज देश की राजनीति करीब 300 परिवारों तक सिमट कर रह गई है। मार्क्सवाद का सिद्धांत भी परिवारवाद को नहीं रोक पाया। केरल के मुख्यमंत्री के दामाद उनके मंत्रिमंडल के सदस्य हैं। वंशवादी राजनीति की शुरुआत आजादी की लड़ाई के दिनों ही हो चुकी थी। अपने पुत्र को कांग्रेस अध्यक्ष बनवाने के लिए आतुर मोतीलाल नेहरू ने 23 अगस्त 1927 को गांधीजी को पत्र लिखा, मेरे समझाने के बावजूद एकमात्र संभावित विकल्प के रूप में आमतौर पर सभी जवाहरलाल की ही मांग कर रहे हैं। इससे पहले गांधीजी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए जवाहरलाल को अयोग्य मानते हुए 19 जून 1927 को मोतीलाल को लिखा था, कांग्रेस का जो रंग-ढंग है, उससे यह राय दृढ़ होती है कि अभी जवाहरलाल का कांग्रेस अध्यक्ष बनना ठीक नहीं। 1928 में मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। उन्होंने गांधीजी को दो और चिट्ठियां लिखकर जवाहर लाल को 1929 में कांग्रेस अध्यक्ष बनवा ही दिया। तब यह कहा गया कि कांग्रेस मुख्यालय के लिए इलाहाबाद में आनंद भवन देने की पूरी कीमत मोतीलाल नेहरू ने वसूल ली।

सिरदर्द बने क्षेत्रीय दल

छत्तीसगढ़ में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में कांग्रेस-भाजपा के बीच अभी से ही टक्कर देखने को मिल रही है। हालांकि, प्रदेश में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और निर्दलीय प्रत्याशियों ने अपनी दावेदारी तो पेश की, लेकिन राज्य में बहुत अधिक प्रभावशाली नहीं हो पाए हैं। छत्तीसगढ़ के चुनावी रण में कांग्रेस-भाजपा प्रमुख दलों के बीच लगातार कांटे की टक्कर देखने को मिली है। तीसरे मोर्चे के दल महज वोटकटवा के रूप में ही खड़ा रहा है। प्रदेश में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, अपंजीकृत और निर्दलियों ने दमदारी से दावेदारी तो की मगर बहुत अधिक प्रभावशाली नहीं हो पाए। तीसरे मोर्चे के रूप में उभरे दलों ने अब तक जीत के रूप में दहाई का आंकड़ा भी नहीं छुआ है। हालांकि विगत चार चुनावों में दलों की संख्या लगातार बढ़ी है। आंकड़ों को देखें तो 2003 के चुनाव में कुल दलों की संख्या 28 थी जो कि 2018 के चुनाव बढ़कर 61 तक पहुंच चुकी है। राजनीतिक विशेषज्ञों के मुताबिक चुनावी रण में अचानक क्षेत्रीय, राष्ट्रीय पार्टियों के सक्रिय होने पर उन्हें वोटकटवा ही माना जाता है। प्रदेश के मतदाताओं का व्यवहार ऐसा रहा है कि भाजपा-कांग्रेस प्रमुख राजनीतिक दलों को ही ज्यादा वोट करते आ रहे हैं।

प्रदेश में 2003 में पूर्व लोकसभा सदस्य विद्याचरण शुक्ल की पार्टी एनसीपी चुनाव लड़ी थी तब उनकी भूमिका चुनाव में वोटकटवा मानी गई। 2018 के चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी की पार्टी छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस (जोगी) ने यह भूमिका निभाई थी। इस दौरान प्रदेश में छत्तीसगढ़ स्वाभिमान मंच, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी, सीपीआई आदि अपने-अपने क्षेत्र में प्रभाव डालती रही हैं। इस बार के चुनाव में बस्तर में आदिवासी नेता अरविंद नेताम की पार्टी हमर राज चुनावी रण में उतरने को तैयार है। इस बार आम आदमी पार्टी (आप) भी वोटकटवा की भूमिका निभा सकती है। जानकारों का कहना है कि दिल्ली और पंजाब में आप ने सरकार तो बनाई मगर गुजरात में कांग्रेस के वोट काटने का काम किया। भाजपा-कांग्रेस दोनों ही दल बहुत कम मार्जिनल मार्जिन से चुनाव जीतते आ रहे हैं। इस बीच प्रदेश में तीसरे मोर्चे की भूमिका अहम रही है। आप के प्रदेश अध्यक्ष कोमल हुपेंडी ने कहा कि हम वोटकटवा नहीं, सरकार बनाने के लिए चुनाव लड़ रहे हैं और जनता बदलाव के लिए वोट करेगी। हमने लोगों को कई गारंटी दी है।

दुर्गा कॉलेज के राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. अजय चंद्राकर ने कहा, अगर हम 2003 का चुनाव देखें तो भाजपा-कांग्रेस में महज ढाई प्रतिशत ही जीत और हार का अंतर था। इस चुनाव में एनसीपी, बसपा, सीपीआई और जीजीपी वोटकटवा की भूमिका में थी। इसी तरह 2008 और 2013 में भी इन पार्टियों का वोटकटवा के रूप में प्रभाव दिखा। इसके अलावा 2018 चुनाव में छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस पार्टी ने यह भूमिका निभाई। पार्टी को 7.61 प्रतिशत वोट मिले। इसके अलावा निर्दलीय और नोटा भी वोटकटवा की भूमिका निभाते हैं।

दरअसल, इस बार के विधानसभा चुनाव में बस्तर में आदिवासी नेता अरविंद नेताम की पार्टी हमर राज चुनावी रण में उतरेगी तो अरविंद केजरीवाल की पार्टी आप भी चुनावी ताल ठोकती नजर आ रही है। जानकारों का कहना है कि दिल्ली और पंजाब में आप ने सरकार तो बनाई है, लेकिन उन्होंने गुजरात में कांग्रेस के वोट काटने का काम किया है। हालांकि, आप के प्रदेश अध्यक्ष कोमल हुपेंडी ने कहा कि हम वोटकटवा नहीं, सरकार बनाने के लिए चुनाव लड़ रहे हैं और जनता बदलाव के लिए वोट करेगी। हमने लोगों को कई गारंटी दी है। छत्तीसगढ़ की राजनीति में कांग्रेस और भाजपा के बीच ही सीधा मुकाबला होता आया है। राज्य गठन के बाद से हर चुनाव में दोनों दलों के अलावा तीसरे मोर्चे ने हर चुनाव में 7 से 8 प्रतिशत वोट प्राप्त किए। वर्ष 2003 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से अलग होकर पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के बैनर तले चुनाव लड़ा और 7 प्रतिशत वोट पाए। हालांकि उनकी पार्टी का सिर्फ एक विधायक चुना गया। उसके बाद हुए चुनाव में भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ताराचंद साहू ने अपनी अलग पार्टी छत्तीसगढ़ स्वाभिमान मंच बनाई और करीब 3 प्रतिशत वोट पाए, लेकिन उनकी पार्टी का कोई विधायक नहीं चुना गया। पिछले विधानसभा चुनाव में जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ और बसपा ने साथ मिलकर चुनाव लड़ा और गठबंधन के 7 विधायक चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे।

वहीं इस चुनाव में अब तक तीसरे मोर्चे में बिखराव नजर आ रहा है। जकांछ और बसपा का गठजोड़ नहीं हुआ और बसपा ने एकला चलो की राह पर 9 सीट पर उम्मीदवार घोषित कर दिए। इस चुनाव में जकांछ, बसपा, आम आदमी पार्टी, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी और सर्व आदिवासी समाज की पार्टी चुनावी मैदान में ताल ठोंक रही है। प्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी के निधन के बाद जकांछ का जनाधार कमजोर हुआ है। जाति प्रमाणपत्र विवाद के बाद जोगी परिवार की परंपरागत सीट मरवाही पर अब जोगी परिवार से कोई उम्मीदवार नहीं बन सकता। जकांछ के दो विधायक धर्मजीत सिंह और प्रमोद शर्मा ने भी अलग राह चुन ली है। धर्मजीत ने भाजपा का दामन थाम लिया है, तो प्रमोद शर्मा टिकट के समीकरण को देखते हुए इंतजार कर रहे हैं।

● **रायपुर से टीपी सिंह**

बसपा का जनाधार तेजी से बढ़ रहा

बसपा का जनाधार बिलासपुर संभाग के साथ एससी वर्ग के लिए आरक्षित सीट पर है। आम आदमी पार्टी सभी 90 सीटों पर उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रही है। हालांकि प्रदेश स्तर पर कोई बड़ा चेहरा नहीं होने के कारण आप की उम्मीद थोड़ी कमजोर नजर आ रही है। टिकट वितरण के बाद स्थानीय स्तर पर प्रत्याशी कोई चमत्कार करें, तभी आप की उपस्थिति विधानसभा में हो सकती है। वहीं, कांग्रेस के बागी नेता अरविंद नेताम सर्व आदिवासी समाज की पार्टी के सहारे चुनावी रण में उतरे हैं। नेताम का असर बस्तर में है। राजनीतिक प्रेक्षकों की मानें तो उनकी पार्टी की स्थिति वोटकटवा वाली ही रहेगी। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी हीरा सिंह मरकाम के निधन के बाद कमजोर हुई है, लेकिन कोरबा और सरगुजा के आदिवासी क्षेत्रों में पार्टी का जनाधार है। लेकिन अब तक उनकी पार्टी का पिछले तीन चुनाव में विधानसभा में प्रतिनिधित्व नहीं हो पाया है।

दावपेंच की राजनीति

महाराष्ट्र की राजनीति में फिर से कुछ पक रहा है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को गत दिनों एक कार्यक्रम में पुणे जाना था, लेकिन वह अचानक अपने घर सतारा चले गए। पुणे में अजित पवार ने कहा कि मुख्यमंत्री अस्वस्थ हैं, इसलिए वह आराम करने सतारा चले गए। लेकिन वह कितने अस्वस्थ हैं, क्या बहुत ज्यादा अस्वस्थ हैं, या राजनीति में कुछ बड़ा पक रहा है। शिंदे शिवसेना के ही एक विधायक संजय शिरसाट ने कहा कि 15 अगस्त के बाद एकनाथ शिंदे को जबरदस्ती अस्पताल में भर्ती करवाया जाएगा। शनिवार 12 अगस्त को ही शरद पवार और अजित पवार की पुणे में एक कारोबारी के घर पर हुई मुलाकात की भी चर्चा है। इस मुलाकात के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में फिर से हलचल है।

आखिर अजित पवार बार-बार शरद पवार से मुलाकातें क्यों कर रहे हैं। क्या भाजपा को इन मुलाकातों पर आश्चर्य नहीं होता। कहने को तो कहा जा रहा है कि अजित पवार की कोशिश शरद पवार को अपने साथ लाने की है। वह चाहते हैं कि एनसीपी एकजुट होकर रहे, लेकिन शरद पवार मान नहीं रहे, उन्होंने इस बार भी अजित पवार को दो-टूक जवाब दिया है कि वह भाजपा के साथ कभी नहीं जाएंगे। पहली बात तो यह है कि अगर भाजपा शरद पवार को अपने साथ लाना चाहती, तो यह बात प्रधानमंत्री के स्तर से होती, अजित पवार के स्तर पर नहीं। नरेंद्र मोदी अपने स्तर पर शरद पवार को भाजपा के साथ लाने की कई बार कोशिश कर चुके हैं। इन कोशिशों के बार-बार विफल होने के बाद ही भाजपा ने अजित पवार को तोड़ा। 2016 में जब राजनीति में शरद पवार के 50 साल पूरे होने का पुणे में जश्न मनाया गया तो पवार को सम्मानित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस दोनों मौजूद थे। पवार और मोदी दोनों ने एक-दूसरे की तारीफ की, मोदी ने यहां तक कहा कि राजनीति के शुरुआती दिनों में पवार ने उनका साथ दिया था। तब शरद पवार ने उनकी तारीफ करते हुए कहा था कि वह मोदी के काम करने के तरीके से आश्चर्यचकित हो जाते हैं, कल वह जापान में थे और सुबह वह गोवा गए, दोपहर में बेलगाम आए और अब वह वीएसआई पुणे में हैं। मुझे नहीं पता कि वह रात में कहां जा रहे हैं। पवार ने कहा यह देश के हित के प्रति उनकी पूर्ण प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके कुछ महीने बाद ही मोदी सरकार ने जनवरी 2017 में शरद पवार को पद्म विभूषण से सम्मानित किया था। 2021 में एक बार फिर पुणे में ही शरद पवार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मंच साझा करते हुए खुलासा किया था कि 2004 में जब वह मनमोहन सिंह सरकार में कृषि मंत्री थे, तो उन्होंने नरेंद्र मोदी के खिलाफ राजनीतिक आधार पर बदले की कार्रवाई का विरोध किया था। उन्होंने खुलासा किया कि जब केंद्रीय जांच एजेंसियां नरेंद्र मोदी के खिलाफ हाथ धोकर पड़ी थीं, तब वह यूपीए की बैठकों में सभी को समझाते थे कि भले ही नरेंद्र मोदी के साथ कितने ही राजनीतिक मतभेद हों, यह नहीं भूलना चाहिए कि वह निर्वाचित मुख्यमंत्री हैं।

मोदी की तारीफ करते हुए शरद पवार ने कहा था कि वह जो काम अपने हाथ में लेते हैं, उसे कभी बीच में नहीं छोड़ते, काम पूरा करके ही छोड़ते हैं। और यह बात उन्होंने तब कही थी जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कृषि कानूनों के कारण पूरे देश में विरोध हो रहा था। शरद पवार कृषि कानूनों को लेकर मोदी सरकार के खिलाफ बाकी राजनीतिक दलों की तरह मुखर नहीं थे। विपक्ष की बेंगलुरु बैठक के बाद इसी महीने 2 अगस्त को भी शरद पवार ने इंडिया गठबंधन की नाराजगी के बावजूद पुणे में उस कार्यक्रम की अध्यक्षता की, जिसमें नरेंद्र मोदी को तिलक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अब यह बात किसी के पल्ले नहीं पड़ रही कि अजित पवार की मुलाकातें शरद पवार को भाजपा के साथ लाने की कोशिशों का हिस्सा है। कुछ दिन पहले जब अजित पवार और अन्य मंत्री अचानक शरद पवार से मिलने पहुंच गए थे, तो सुप्रिया सुले को समझ नहीं आया था कि यह क्या हो रहा है। उन्हें डर था कि अजित पवार दबाव डालकर शरद पवार से कुछ गलत न करवा लें, इसलिए उन्होंने फोन करके महाराष्ट्र एनसीपी के अध्यक्ष जयंत पाटिल को बुला लिया था। लेकिन शनिवार 12 अगस्त को पुणे में हुई गोपनीय बैठक में जयंत पाटिल भी मौजूद थे। इस मीटिंग की खास बात यह रही कि अजित पवार सरकारी काफिला छोड़कर पहुंचे थे, तो जयंत पाटिल कार्यकर्ता की गाड़ी में पहुंचे थे। यह बैठक पुणे के कोरेगांव पार्क क्षेत्र के एक बंगले में एक घंटे से ज्यादा चली। बैठक को गुप्त रखा गया था, लेकिन एक क्षेत्रीय समाचार चैनल को भनक लग गई तो उसने शरद पवार को दोपहर करीब एक बजे कोरेगांव पार्क क्षेत्र में कारोबारी के आवास पर पहुंचते दिखाया। शाम करीब 5 बजे शरद पवार चले गए, उसके लगभग 2 घंटे के बाद अजित पवार को शाम पौने सात बजे कैमरे से बचने की कोशिश करते हुए कार में परिसर से बाहर निकलते देखा गया। राजनीतिक अटकल यह लगाई जा रही है कि शरद पवार गुट के जयंत पाटिल किसी न किसी तरह एनसीपी को एकजुट करने की कोशिशों का हिस्सा बन गए हैं। लेकिन राजनीतिक समीक्षक अजित पवार का एनसीपी मीटिंग में दिया गया वह भाषण याद दिलाते हैं कि बाकी राज्यों के क्षेत्रीय दलों तृणमूल कांग्रेस, बीजू जनता दल, वाईएसआर कांग्रेस, भारत राष्ट्र समिति और मेघालय की एनपीपी की तरह एनसीपी इतनी ताकतवर क्यों नहीं बन सकी कि उसका महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री हो।

● **बिन्दु माथुर**

अजित की महत्वाकांक्षा है बहुत बड़ी

अजित पवार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। यह तब तक संभव नहीं है, जब तक शरद पवार उनके साथ खड़े नहीं हों। लेकिन सवाल है कि क्या वह भाजपा के कंधों पर सवार होकर मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं, या उद्धव ठाकरे की तरह, जो भी उन्हें मुख्यमंत्री बना दे, वह उसके साथ चले जाएंगे। जयंत पाटिल का उद्धव ठाकरे से भी संपर्क बना हुआ है। हाल ही के दिनों तक खुद को शरद पवार के निकटतम बताने वाले और उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री बनवाने के रणनीतिकार शिवसेना के सांसद संजय राउत की टिप्पणी कुछ आश्चर्यचकित करने वाली है। अजित पवार को गद्दार कहने वाले संजय राउत ने कहा है कि अगर नरेंद्र मोदी और नवाज शरीफ मिल सकते हैं, तो शरद पवार और अजित पवार क्यों नही मिल सकते? इधर दो दिन पहले कल्याण में शिवसेना के दोनों गुट एक कार्यक्रम में मौजूद थे, जिसने शिवसेना में ही कुछ खिचड़ी पकने के संकेत दिए। कहीं शिवसेना के विधायक शिंदे को अलग-थलग तो नहीं कर रहे।

पायलट की चुप्पी

सचिन पायलट बातचीत में कुशल हैं। सामान्य बोलचाल में भी, मीडिया से भी और सार्वजनिक तौर पर भी। हिंदी वे अच्छी जानते हैं और राजनीतिक वाकपटुता में भी वह दूसरे नेताओं से उन्नीस नहीं हैं। अंग्रेजी तो हिंदी से भी बेहतर बोलते हैं। लेकिन राजस्थान और लगभग पूरे हिंदुस्तान में भी किसी नेता का अंग्रेजी में बात करना वोटों की राजनीति के लिए भारी साबित होता है, इस तथ्य को पायलट जानते हैं, सो वे सार्वजनिक तौर पर अंग्रेजी में बोलने से बचते हैं। हिंदी में ही बोलते हैं और हिंदी में ही भाषण भी देते हैं। शब्दावली वे बहुत अच्छी चुनते हैं और उनका वाक्य विन्यास भी विशेष अंदाज से भरा होता है। लेकिन बीते लगभग दो महीनों से पायलट न तो कुछ खास बोल रहे हैं, न ही भाषण दे रहे हैं और न मीडिया से कोई बातचीत। तस्वीर के तेवर यही हैं कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और उनके पूर्व उपमुख्यमंत्री पायलट के बीच तकरार भले ही बंद है, मगर रार अभी भी बरकरार है। यही रार राजस्थान में कांग्रेस और गहलोत के फिर से सत्ता में आने के प्रयासों की पतवार पर पलटवार कर सकती है।

कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति में रूचि रखने वाले लोग पायलट के इस मौन के मायने तलाश रहे हैं, और समर्थक हैरान हैं कि उनका नेता कुछ तो बोले। बाहर भाजपा और भीतर कांग्रेस दोनों में बड़ी हलचल के हालात हैं। कांग्रेस और उसकी सरकार पर प्रहार करती भाजपा और उनके नेताओं को करारा जवाब देने के लिए कांग्रेस के नेताओं में पायलट ही बेहद सक्षम माने जा सकते हैं, लेकिन पायलट हैं कि भाषा पर पकड़, स्पष्ट उच्चारण और शालीन शब्दावली के बावजूद चुप्पी साधे हैं, और उनकी यही चुप्पी राजनीतिक रहस्य के गुब्बारे को फुला रही है। वैसे, मुख्यमंत्री गहलोत खुश हो सकते हैं कि पार्टी में उनके प्रखर विरोधी के रूप में लगभग कुख्यात होने की हद तक चर्चित सचिन इन दिनों शांत हैं। लेकिन यह चुप्पी जब अपनी आवाज की बुलंदियों को साधेगी, तो क्या होगा, यह केवल पायलट ही जानते हैं। वैसे, पायलट की राजनीति के जानकार कहते हैं कि ताजा राजनीतिक परिदृश्य में जब उनका मौन ही मुखरित हो रहा है, तो बोलने की जरूरत ही क्या है।

दरअसल, पायलट की इस चुप्पी की जड़ में कांग्रेस आलाकमान के साथ वह समझौता है, लेकिन समझौते की शर्तें क्या हैं, कोई नहीं जानता। कुछ महीनों पहले पायलट की पदयात्रा के बाद जब कांग्रेस में हलचल तेज हुई, तो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी ने गहलोत और पायलट से कई बार बात की और पार्टी हित में दोनों में सुलह की कोशिश हुई। आखिर, 6 जुलाई को दिल्ली में राजस्थान के लगभग सभी बड़े नेताओं के साथ खड़गे और राहुल ने चुनावी रणनीति तय करने की आड़ में सुलह करवाने की बैठक की जिसमें पायलट खुद शामिल रहे, लेकिन दोनों पैरों के दोनों अंगूठों में चोट आने और फ्रेक्चर हो जाने की वजह से मुख्यमंत्री गहलोत वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए जुड़े। माना जा रहा था कि नई दिल्ली में हुई इसी बैठक में हुए समझौते के तहत गहलोत और पायलट के बीच जारी खींचतान थम गई और राजस्थान कांग्रेस में शांतिकाल की स्थापना के लिहाज से यह बैठक काफी महत्वपूर्ण भी रही। इस बैठक के बाद 8 जुलाई को पायलट का एक बयान आया, जिसमें उन्होंने साफ-साफ कहा था कि राजस्थान में अगला विधानसभा चुनाव पार्टी के सभी नेता एकजुट होकर लड़ेंगे और सामूहिक नेतृत्व ही इस चुनाव में आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है।

इस बयान के बाद लगने लगा था कि अब पायलट को चुनाव तक गहलोत से कोई समस्या नहीं है। लेकिन 11 अगस्त को जयपुर में हुई राजस्थान कांग्रेस की पार्लियामेंट्री अफेयर्स कमेटी की महत्वपूर्ण बैठक में भी पायलट जब केवल नपे तुले शब्दों में बहुत कम ही बोले तो उनके न बोलने की बातें चलने लगीं। उधर, बैठक खत्म होते ही मुख्यमंत्री गहलोत ने एक बार फिर से भाजपा पर धावा बोलते हुए कह दिया कि राजस्थान में उनकी सरकार गिराने की दो-दो बार कोशिश हुई है। इस बयान को सीधे पायलट से जोड़कर देखा गया, जिनकी बहुचर्चित मानेसर बगावत के पीछे भाजपा का षड्यंत्र बताया जाता रहा है और जिसकी वजह से पायलट को सवा तीन साल पहले उपमुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के दो-दो पदों से एक साथ बर्खास्त कर दिया गया था।

कांग्रेस में किसी भी मुद्दे पर कभी न बोलने वाले नेता के रूप में सबसे पहले नरसिम्हाराव को जाना जाता है। वे ऐसे प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने चुप रहने की अपनी दिव्य कला को ही अपना सबसे बड़ा राजनीतिक हथियार बना डाला था। उनके बाद प्रधानमंत्री बने मनमोहन सिंह की भी लगभग इसी तासीर के कारण लोग उन्हें मनमोहन के बजाय मौनमोहन सिंह तक कहने लगे थे। संयोग से सचिन पायलट उन्हीं मौनमोहन के दूसरे कार्यकाल के मंत्रिमंडल में राज्यमंत्री रहे हैं। राजनीति में निरीह प्राणी के रूप में कहे जाने वाले मनमोहन की रोबोटनुमा चाल और किसी भी गंभीरतम मुद्दे पर भी निष्भाव बने रहने की वजह से अक्सर उनकी चुप्पी का मतलब कमजोरी से लगाया जाता रहा।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

सचिन हर मुद्दे पर धाराप्रवाह बोलने वाले नेता

हमारे देश में मौन रहने वाले राजनेता को आम तौर पर निर्णायक न होने या निर्णय न लेने की क्षमता से संपन्न ही माना जाता है। लेकिन सचिन पायलट तो हर मुद्दे पर धाराप्रवाह बोलने वाले नेता माने जाते हैं। दरअसल, जब बोलने वाला व्यक्ति जहां बोलना जरूरी हो, वहां भी खुलकर नहीं बोले, तो राजनीति में वह चुप्पी रहस्य तो बुनती ही है। और रहस्य यही है कि अद्भुत आक्रामकता की राजनीतिक तासीर वाले पायलट की चकित करने वाली चुप्पी बहुत कुछ साफ-साफ कह रही है, पर हर किसी को सुनाई नहीं दे रही, लेकिन जब सुनाई देगी, तो कांग्रेस में भूचाल खड़ा होगा। और कोई भी भूचाल कभी सुखद परिणाम नहीं देता। चुनाव सामने हैं और सामने भाजपा कोई बहुत कमजोर नहीं है। इसलिए पायलट की चुप्पी को समझकर कांग्रेस को अपनी सियासी रणनीति संभालकर रखनी होगी, वरना राहुल गांधी भले ही अपनी भारत जोड़ो यात्रा का पार्ट-2 भी शुरू कर देंगे, लेकिन जादूगर गहलोत कोई जादू ही कर दे तो अलग बात, मगर राजस्थान में कांग्रेस को अकेले अशोक गहलोत ही जिता देंगे, ऐसा तो किसी को भी आसान नहीं लगता।

अब कांग्रेस को करिश्मे का इंतजार

कांग्रेस पिछले 34 साल से उप्र में अपने खराब दौर से गुजर रही है। इस दौरान कांग्रेस ने कई प्रयोग भी किए। अकेले और गठबंधन के साथ भी चुनाव लड़ी लेकिन कोई बड़ा कारनामा नहीं कर सकी। अब लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस ने अपने नए अध्यक्ष अजय राय के हाथ में कमान सौंपी है। जल्द ही वे अपनी नई टीम भी बनाएंगे। आक्रामक अंदाज के लिए पहचान रखने वाले अजय राय ने अपने इरादे भी साफ कर दिए हैं। उन्होंने कहा है कि जुल्म और ज्यादती के खिलाफ कांग्रेस 2024 तक सड़कों पर दिखेगी। अब सवाल ये उठ रहा है कि क्या प्रदेश की नई लीडरशिप कांग्रेस के लिए कोई करिश्मा कर पाएगी? खासतौर से ऐसे समय जब प्रदेश और देश, दोनों ही परिदृश्य में कांग्रेस की स्थिति अभी बहुत मजबूत नहीं है।

उप्र में कांग्रेस का खराब दौर 1989 से ही चल रहा है। एक बार तो 1998 में उसे उप्र से एक भी सीट नहीं मिली। इस दौरान वह सिर्फ एक बार 2009 के लोकसभा चुनाव में अधिकतम 21 सीटें जीत सकी थी। इसके बाद से फिर 2014 में दो सीट पर आ गई और 2019 में सिर्फ रायबरेली की एक सीट जीत सकी। यहां तक के उनके सबसे बड़े नेता राहुल गांधी अपनी अमेठी सीट भी हार गए। इस दौरान कांग्रेस ने प्रदेश की लीडरशिप में कई बदलाव भी किए। इन 34 साल में 17 प्रदेश अध्यक्ष बनाए। ये हर क्षेत्र, जाति, वर्ग और संप्रदाय के साथ ही प्रदेश के अलग-अलग इलाकों से रहे। वरिष्ठ नेताओं से लेकर जमीनी कार्यकर्ता स्तर तक के नेता को ये जिम्मेदारी दी गई। प्रियंका गांधी को भी बतौर प्रभारी उतरना पड़ा। इसके बावजूद अभी तक तो कोई चमत्कार नहीं दिखा। लोकसभा चुनाव से पहले आखिर, नई लीडरशिप के पीछे कांग्रेस की क्या मंशा और उम्मीदें हैं? इस बारे में पार्टी के लोगों कहना है कि वरिष्ठ नेताओं को उम्मीद है कि इतने साल सत्ता में रहने के बाद देश में भाजपा के खिलाफ जो माहौल बन रहा है, उसका फायदा कांग्रेस को मिलेगा। राहुल गांधी लगातार जनता के बीच रहकर देश में माहौल बना रहे हैं। अब जरूरत है सबसे बड़े राज्य में सुस्त पड़ी कांग्रेस में जान फूंकने की। यह काम यहां आक्रामक तेवरों के साथ ही हो सकता है। राष्ट्रीय और प्रदेश दोनों स्तर पर काम होगा तभी यहां से कुछ हासिल हो सकता है। प्रदेश की सियासत में कांग्रेस दोबारा से खड़े होने के लिए कई सियासी प्रयोग करके देख चुकी है, लेकिन अभी तक राजनीतिक सफलता नहीं मिल सकी है। 2024 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस ने प्रदेश अध्यक्ष का बदलाव किया है। बृजलाल खाबरी की जगह अजय राय को कमान सौंपने के साथ ही कांग्रेस के तेवर और अंदाज बदल गए हैं। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अजय राय ने उप्र के प्रदेश अध्यक्ष का कार्यभार संभाला और जिस तरह से कांग्रेसियों ने हर-हर महादेव के नारे बुलंद किए हैं, उससे एक बात तो साफ है कि उप्र में भाजपा से मुकाबला करने के लिए कांग्रेस ने सॉफ्ट हिंदुत्व की राह पर अपने कदम बढ़ा दिए हैं।

हिंदुत्व के इर्द-गिर्द देश और प्रदेश की सियासत सिमटती जा रही है। सत्तापक्ष से लेकर विपक्ष के सभी दल हिंदुत्व के एजेंडे पर अपने राजनीतिक समीकरण सेट करने में जुटे हैं। अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर को भाजपा अपनी उपलब्धि के तौर पर पेश कर 2024 के लोकसभा चुनाव में उम्मीद पाले हुए है तो कांग्रेस मप्र और राजस्थान में हिंदुत्व की राह पर ही अपने दांव चल रही है। कमलनाथ खुद को हनुमान भक्त तो भूपेश बघेल रामभक्त बता रहे हैं। इस कड़ी में अब उप्र कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय का नाम भी जुड़ गया है, जो खुद को शिवभक्त के तौर पर स्थापित करना चाहते हैं। आरएसएस और भाजपा की हिंदुत्व की राजनीति से निकले अजय राय अब उप्र कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। भाजपा की हिंदुत्व पॉलिटिक्स का मुकाबला करने के लिए अजय राय ने भी अब इसके नक्शेकदम पर अपने कदम बढ़ा दिए हैं। इसकी झलक गत दिनों अजय राय के शपथ ग्रहण में ही दिख गई। हिंदू रीति-रिवाज और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अजय राय ने कांग्रेस का प्रदेश अध्यक्ष पद ग्रहण किया। हिंदू पंचाग से निकाले गए शुभ मुहूर्त पर ही अजय राय ने कार्यभार संभाला। सूत्रों की मानें तो कांग्रेस के उप्र कार्यालय के जिम्मेदारों को अजय राय ने बता दिया था कि निश्चित शुभ घड़ी यानि शाम के चार बजे तक ही है। यही वजह थी कि मुहूर्त खत्म होने से पहले लगभग साढ़े तीन बजे अजय राय ने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष पद का कार्यभार मंच से संभाला। उन्होंने कहा कि मैं प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी बंद कमरे में नहीं, बल्कि मंच से और कार्यकर्ताओं को साक्षी मानते हुए ले रहा हूं। इस दौरान पूरे समय तक हर-हर महादेव के नारे पूरे पंडाल में गूंजते रहे।

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

कांग्रेस हिंदुत्व की राह पर क्यों?

दरअसल 2014 लोकसभा चुनाव के बाद से देश का राजनीतिक पैटर्न पूरी तरह से बदल गया है। उप्र अब बहुसंख्यक (हिंदू) समाज केंद्रित राजनीति हो गई है और इस फॉर्मूले के जरिए भाजपा लगातार चुनाव जीत रही है। कांग्रेस लंबे समय तक मुस्लिम मतदाताओं पर फोकस राजनीति करती रही है, जिसके चलते भाजपा ने कांग्रेस को मुस्लिम परस्त पार्टी के तौर पर स्थापित कर दिया है। इसी टैग को हटाने और अपनी छवि को बदलने के लिए कांग्रेस ने सॉफ्ट हिंदुत्व की राजनीति की तरफ कदम बढ़ाया है ताकि हिंदू वोटों के बीच अपनी पैठ जमा सके। मुस्लिम वोट 2014 के बाद से आप्रसंगिक हो गया है। कांग्रेस सॉफ्ट हिंदुत्व की पॉलिटिक्स करके हिंदू और मुस्लिम दोनों ही वोटों को साधे रखना चाहती है। अजय राय ने काशी की परंपरा को कांग्रेस से जोड़ते हुए कहा कि उनके पास सिर्फ महादेव ही नहीं कबीर, संत रविदास और गंगा मैया भी हैं। बुद्ध और अन्य ऋषि परंपरा के लोग हैं। इस तरह से अजय राय ने भविष्य की सियासत को खींचने और कांग्रेस के सोशल इंजीनियरिंग को भी मजबूत करने का दांव चला है। देखना यह है कि पार्टी का बदला हुआ मिजाज क्या कांग्रेस के लिए सियासी संजीवनी साबित होगा?

बेचारे के सहारे!

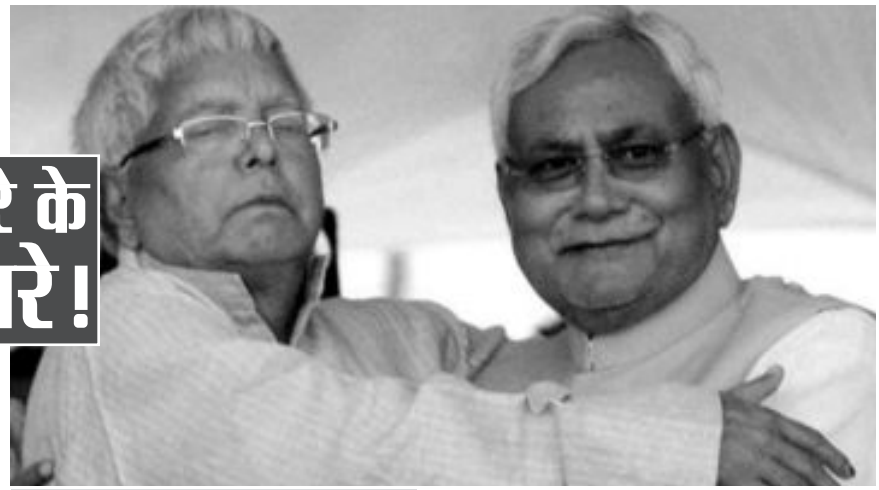

लालू परिवार पर कभी ईडी तो कभी सीबीआई की कार्रवाई जारी है। वहीं दूसरी ओर एनडीए से नाता तोड़ने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जितने ही ज्यादा भाजपा पर गरम हैं उतने ही लालू प्रसाद यादव के करीब। उनके बयानों से ही यह झलकने लगा है। बिहार के मुख्यमंत्री जो कुछ समय पहले तक इन सारे मसलों पर बोलते नहीं थे अब वो खुलकर बोलने लगे हैं। अब तो लालू के लिए मुख्यमंत्री के मुख से बेचारा शब्द भी निकलने लगा है। ऐसे में सवाल है कि नीतीश का ये लालू प्रेम भाईचारे के लिए है या सियासत के खेल में कुछ और है?

लोकसभा चुनाव से पहले एनडीए के खिलाफ विपक्षी एकता की शुरुआत मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने की और दो बैठकों का दौर समाप्त हो चुका है। तीसरी बैठक 1 सितंबर को मुंबई में होने वाली है। इसकी जानकारी खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गत दिनों मीडियाकर्मियों से बातचीत में दी। सीबीआई और ईडी की कार्रवाई पर नीतीश कुमार ने कहा कि उनको (लालू) बेचारे को तो जान बूझकर न तंग किया जा रहा है। केंद्र पर हमला करते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि आजकल जो है केंद्र में किसी को छोड़ रहे हैं। सबको तंग ही न कर रहे हैं। नीतीश के इस बेचारे शब्द से नजदीकियां झलके या कोई और मायने लेकिन यह पहली बार नहीं है। अभी इसी साल मार्च में नीतीश कुमार ने ईडी-सीबीआई की कार्रवाई पर चुप्पी तोड़ी थी। कहा था कि ये कोई मुद्दा नहीं हैं। 2017 में भी छापेमारी हुई थी। अब 5 साल बाद फिर कार्रवाई हो रही है। जब से वे आरजेडी के साथ आए हैं, तब से क्या हो रहा, ये सभी देख रहे हैं।

भाजपा लगातार यह आरोप लगा रही है कि नीतीश कुमार लालू के सहारे अब राजनीति कर रहे हैं। नीतीश कुमार के हाथ में कुछ भी नहीं है। इस तरह के सवाल क्यों उठ रहे हैं, इसका अंदाजा कुछ कारणों से लगाया जा सकता है। पहला कारण, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एनडीए से नाता तोड़कर अगस्त 2022 में बिहार में महागठबंधन की सरकार बना ली। उनके जाते ही जेडीयू में टूट भी हो गई। उपेंद्र कुशवाहा जैसे बड़े नेता ने भी पार्टी छोड़ी और आरोप लगाया कि आरजेडी और जेडीयू में डील हुई है। इस बात को वजन इस वजह से भी मिलता है कि नीतीश कुमार ने खुद ही मीडिया से बातचीत में तेजस्वी की ओर इशारा करते हुए कहा था कि अगला चुनाव अब इन्हीं के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। दूसरा कारण, लैंड फॉर जॉब मामले में सीबीआई ने चार्जशीट दाखिल की जिसमें तेजस्वी को भी आरोपी बनाया। यह मामला बिहार विधानसभा सत्र में भाजपा ने उठाया। तेजस्वी यादव के इस्तीफे की मांग की गई। विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि नीतीश कुर्सी बचाने के लिए उपमुख्यमंत्री को बर्खास्त नहीं कर रहे। आरजेडी के सहारे मुख्यमंत्री हैं। भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस का ढोंग करते हैं। चार्जशीटेड भ्रष्टाचारी उपमुख्यमंत्री तेजस्वी सदन में कैसे आ जाते हैं? उनको इस्तीफा देना चाहिए। मुख्यमंत्री आखिर क्यों इस्तीफा नहीं ले रहे हैं? तीसरा कारण, इसी बीच हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के संरक्षक और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी ने भी नीतीश कुमार पर गंभीर आरोप लगाया और पार्टी छोड़ दी। कहा था उनकी पार्टी को विलय के लिए दबाव बनाया गया था। मांझी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर सवाल उठाए थे कि तेजस्वी यादव को क्यों नहीं बर्खास्त किया जा रहा है? जीतनराम मांझी ने कहा कि उन पर जब आरोप लगा था तो तुरंत इस्तीफा ले लिया गया था। अब नीतीश कुमार ऐसा क्यों नहीं कर रहे हैं? चौथा कारण, बिहार में बढ़ते अपराध के मामलों पर भी यही कहा जा रहा है कि जब से नीतीश कुमार ने आरजेडी के साथ सरकार बनाई है तो प्रदेश में अपराध बढ़ गए हैं। चुनावी रणनीतिकार और राजनीतिक जानकार प्रशांत किशोर ने भी अपने बयान में यह बात कही है कि बिहार की सत्ता पूरी तरह से आरजेडी के हाथ में है, इसलिए जंगलराज की वापसी हो रही है।

2024 में केंद्र की सत्ता से भाजपा को उखाड़ फेंकने की बात कही जा रही है। भाजपा कह रही है कि नीतीश कुमार का प्रधानमंत्री बनने का सपना पूरा नहीं होगा। हालांकि नीतीश कुमार खुद कह चुके हैं कि उनकी कोई मंशा नहीं है कि वह प्रधानमंत्री बनें। वह विपक्ष को बस एकजुट करना चाहते हैं। हालांकि यह सवाल इसलिए उठते रहे हैं क्योंकि खुद जेडीयू के कई नेता यह बात कह चुके हैं कि नीतीश कुमार में प्रधानमंत्री बनने की क्षमता है। वह प्रधानमंत्री मैटेरियल हैं। वहीं आरजेडी भी चाहती है कि नीतीश कुमार केंद्र की राजनीति करें। बिहार की गद्दी तेजस्वी यादव के हाथों में सौंप दें। खैर राजनीति में कुछ भी संभव या असंभव नहीं है। बिहार की राजनीति में कब, क्या हो जाए यह कह पाना भी मुश्किल है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को राजनीतिक पंडित भी नहीं आंक सकते हैं।

● **विनोद बक्सरी**

कुछ परेशान तो हैं नीतीश!

जानकारों का मानना है कि कुछ परेशानी तो नीतीश कुमार को है। एक तरफ नीतीश कुमार जहां विपक्षी एकता की मुहिम के एक बड़े टास्क के साथ हैं। वहां अचानक प्रदेश कार्यालय आना यह बताता है कि पार्टी के भीतर सब कुछ ठीक-ठाक नहीं है। उनके इस आगमन को इस नजरिए से देखा जा सकता है कि उन्हें यह लग रहा है कि ऐसा न हो कि हम उधर देश दुरुस्त करते रहें, और इधर मेरी पार्टी बिखर जाए। और संयोग ऐसा हुआ कि जदयू के तीन बड़े पदाधिकारी ही गायब थे। मुझे तो लगता है कि नीतीश कुमार किसी गुप्त सूचना पर गए होंगे। और पार्टी कार्यालय के जो हालात थे, वह अविश्वास तो लगता है। आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव के बयान के बाद मुख्यमंत्री पद को लेकर तेजस्वी यादव एक बार फिर चर्चा में आ गए हैं। जेडीयू के विधायक गोपाल मंडल ने कहा कि तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बनने लायक तो हैं। इसमें कोई दो मत नहीं है और बनना भी चाहिए। इसके पहले लालू यादव ने अपनी पत्नी को मुख्यमंत्री बनाया, अब बेटा लायक हुआ है तो कोशिश में हैं कि वो मुख्यमंत्री बने। लेकिन जब तक नीतीश कुमार हैं तब तक तो वो नहीं बन सकते हैं। नीतीश कुमार तो उन्हें मौखिक रूप से तो ताज पहना ही चुके हैं। लालू यादव के पास वोट ज्यादा है। जेडीयू के किसी नेता को मुख्यमंत्री बनाया जाएगा और उनके पास वोट ही नहीं होगा तो वह मुख्यमंत्री कैसे बनेंगे। लालू प्रसाद यादव के पास वोट है और तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनना चाहिए। विधायक गोपाल मंडल ये बातें तब कह रहे हैं जब नीतीश कुमार ने साफ कह दिया है कि 2025 का विधानसभा चुनाव तेजस्वी यादव के नेतृत्व में लड़ेंगे।

पाक में लंबा चलेगा आंतरिक संघर्ष

मूल आर्थिक मुश्किलें कायम ही रहेंगी

आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान को तात्कालिक तौर पर कुछ राहत मिली है, लेकिन उसकी मूल आर्थिक मुश्किलें कायम ही रहेंगी। जम्मू-कश्मीर सीमा पर पाकिस्तान के साथ फरवरी, 2001 से संघर्षविराम की स्थिति बनी हुई है और लगता नहीं कि पाकिस्तान इसका उल्लंघन करेगा। इसके बावजूद जम्मू-कश्मीर से जुड़े भारत के संवैधानिक परिवर्तन पर कार्यवाहक पाकिस्तान सरकार का रवैया भी सख्त रहेगा। इससे द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के कोई आसार नहीं दिखते। मोदी सरकार भी पाकिस्तान को लेकर उदासीनता दिखा रही है। अगले साल भारत में भी चुनाव होने हैं तो मोदी सरकार का पूरा ध्यान घरेलू मुद्दों पर केंद्रित होगा। भले ही पाकिस्तान इस समय भारत की प्राथमिकता न हो, पर उसके अतीत को देखते हुए भारत को उससे सतर्क रहना होगा, क्योंकि उसकी ओर से हुआ कोई आतंकी हमला किसी नए संकट को जन्म दे सकता है।

शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट यानी पीडीएम सरकार ने तय कार्यकाल से तीन दिन पहले नेशनल असेंबली को भंग करने का निर्णय किया। पाकिस्तान में अब कार्यवाहक सरकार का शासन है। पाकिस्तानी संविधान में यही प्रविधान है कि वहां संसद और प्रांतीय असेंबली के चुनाव कार्यवाहक सरकार के अंतर्गत ही हो सकते हैं। अमूमन कार्यवाहक सरकारें बड़े नीतिगत फैसले नहीं ले सकतीं। हालांकि, जुलाई में ही सरकार ने एक संविधान संशोधन के माध्यम से कार्यवाहक सरकार को देश के आर्थिक हितों से जुड़े अहम फैसले लेने के लिए अधिकृत किया है। यह दर्शाता है कि पीडीएम सरकार इसे लेकर निश्चिंत नहीं कि नेशनल असेंबली के चुनाव 90 दिनों की संवैधानिक सीमा के दायरे में हो पाएंगे।

यह धारणा इस कारण भी मजबूत हो रही है कि राष्ट्रीय एवं प्रांतीय सरकारों के नेताओं से मिलाकर बनी साझा हितों की परिषद ने इस साल डिजिटल रूप से हुई एक जनगणना को स्वीकृति प्रदान की है। इसका अर्थ होगा कि नेशनल असेंबली के चुनाव से पहले निर्वाचन क्षेत्रों का नए सिरे से परिसीमन होगा। इस प्रक्रिया में निश्चित रूप से 90 दिनों से अधिक का समय लगेगा। ऐसे में, तय है कि चुनाव अब अगले साल ही संपन्न होंगे। संभवत: अगले वर्ष की पहली छमाही में।

ऐसे आसार कम हैं कि पीडीएम गठजोड़ की पार्टियां अब एकजुट रहेंगी। ये पार्टियां इमरान खान को सत्ता से बेदखल करने के लिए साथ आई थीं और उनका वह मकसद पूरा हो गया है। इमरान की सत्ता से विदाई में पाकिस्तानी सेना ने भी पर्दे के पीछे से इन पार्टियों की मदद की थी। यह पिछले साल अप्रैल की बात है। तब सेना प्रमुख रहे जनरल बाजवा ने यह सुनिश्चित किया कि पीडीएम सरकार कम से कम नवंबर तक सत्ता में बनी रहे ताकि शहबाज शरीफ उनके उत्तराधिकारी के नाम पर मुहर लगा पाएं। असीम मुनीर की सेना प्रमुख के पद पर ताजपोशी के साथ यह मंशा भी पूरी हुई। माना जाता है कि इमरान खान मुनीर को फूटी आंख नहीं सुहाते। दरअसल प्रधानमंत्री रहते हुए इमरान ने मुनीर को आईएसआई मुखिया के पद से हटाकर उनकी जगह अपने चहेते फैज हमीद को नियुक्त किया था।

सेना के लिए समस्या इस साल मई में तब उभरी जब इमरान की गिरफ्तारी से आक्रोशित उनके समर्थकों ने सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाकर भारी उत्पात मचाया। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण पंजाब प्रांत में इमरान की लोकप्रियता में इजाफा सेना की सिरदर्दी बढ़ाने वाला रहा। इमरान की पार्टी पीटीआई ने पंजाब असेंबली के उपचुनावों में विरोधियों का सफाया कर दिया। तब इमरान ने असेंबली को भंग करने का दांव चला ताकि चुनाव में जीतकर पाकिस्तानी राजनीति में अपनी अहमियत दर्शा सकें। सुप्रीम कोर्ट ने भी इमरान के इस कदम का समर्थन किया और संवैधानिक समयसीमा के दायरे में चुनाव कराने का निर्देश दिया। हालांकि, सेना की मिलीभगत से पीडीएम सरकार चुनावों को टालने में सफल रही। इससे इमरान की व्यग्रता और बढ़ गई।

इस बीच सेना की मदद से सरकार ने इमरान खान के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले खोलने शुरू किए। ऐसे ही एक मामले में नौ मई को इमरान की गिरफ्तारी हुई थी, जिसके बाद उनके समर्थकों ने उपद्रव किया। हैरत की बात यह रही कि सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने वाले इमरान समर्थकों पर सेना ने सख्ती नहीं की। इमरान समर्थकों की इन गतिविधियों ने जनरल मुनीर को यह मौका दे दिया कि वे इमरान की पार्टी को पाकिस्तान विरोधी करार दे सकें। इस मामले को ढंग से नहीं संभाल पाने को लेकर मुनीर ने कुछ शीर्ष सैन्य अधिकारियों पर भी कार्रवाई की और सेना के बयान में दंगों के लिए इमरान और उनकी पार्टी को दोषी बताया गया।

वास्तव में उन दंगों ने ही तय कर दिया कि मुनीर कभी इमरान को दोबारा प्रधानमंत्री नहीं बनने देंगे। पर्दे के पीछे से सक्रिय रहकर सेना ने इमरान की पार्टी में ऐसी खलबली मचाई, ताकि उनके कुछ निकट सहयोगी उन्हें छोड़कर चलते बनें। सेना ने यह भी तय किया कि भ्रष्टाचार के मामलों में इमरान पर शिकंजा ढीला न पड़े और सजा होने के साथ ही वह चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य भी सिद्ध हो जाएं। तोशाखाना मामले में बिल्कुल ऐसा ही हुआ। इमरान को तीन साल की सजा तो सुनाई ही गई, उन्हें पांच साल तक चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य भी ठहरा दिया गया। जब तक उच्च अदालत इमरान की सजा को नहीं पलटती तब तक यह आदेश प्रभावी रहेगा। पाकिस्तान के मौजूदा मुख्य न्यायाधीश उमर अता बंदियाल को इमरान का हमदर्द माना जाता है, लेकिन वह अगले माह सेवानिवृत्त हो रहे हैं। इससे यही लगता है कि सेना और इमरान के राजनीतिक विरोधी उन्हें राजनीति से बाहर रखने के लिए हरसंभव व्यूह की रचना करेंगे और चुनावों को तब तक टालेंगे जब तक पीटीआई पूरी तरह टूट नहीं जाती। पाकिस्तान में इतनी उथल-पुथल के बावजूद उसकी सेना का भारत विरोधी एजेंडा यथावत कायम है। हालांकि, अभी वह अफगानिस्तान सीमा पर तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से जूझ रही है। टीटीपी को अफगान तालिबान की शह मिली हुई है। उसकी मदद को लेकर पाकिस्तानी धमकियों को अफगान तालिबान अनदेखा कर रहा है। ऐसे में टीटीपी से निपटने की चुनौती पाकिस्तानी सेना के लिए कुछ समय तक इसी तरह बनी रहेगी।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

mycem cement

HEIDELBERGCEMENT

mycem power

Trusted German Quality

Over 150 Years

Send 'Hi' 7236955555

चीन की नई करतूत

सैटेलाइट तस्वीरों से चीन की नई करतूत का खुलासा हुआ है जिससे भारत की टेंशन बढ़ सकती है। इन सैटेलाइट तस्वीरों में चीन दक्षिण चीन सागर के एक विवादित द्वीप पर हवाई पट्टी का निर्माण करता दिखाई दे रहा है। इस द्वीप पर वियतनाम और ताइवान भी दावा करते हैं। उपग्रह तस्वीरों के विश्लेषण से पता चलता है कि पारासेल द्वीपसमूह के ट्राइटन द्वीप पर यह निर्माण कार्य किया जा रहा है। इससे पहले चीन ने स्प्रैटली द्वीपसमूह के सात मानव निर्मित द्वीपों पर निर्माण किया जहां हवाई पट्टियों, जहाजों के ठहरने के लिए गोदी और सैन्य प्रणालियों की व्यवस्था है। दूसरे देशों के दावों को खारिज करते हुए चीन लगभग पूरे दक्षिण चीन सागर पर अपना दावा जताता है।

विश्लेषण के अनुसार प्लैनेट लैब्स पीबीसी की उपग्रह तस्वीरों में हवाई पट्टी पर निर्माण पहली बार अगस्त की शुरुआत में दिखाई देता है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रनवे 600 मीटर से अधिक लंबा होगा, जिस पर टर्बोप्रॉप विमान और ड्रोन आसानी से उतर सकते हैं। हालांकि, लड़ाकू या बमवर्षक विमानों का यहां से परिचालन नहीं हो सकेगा। द्वीप के अधिकांश हिस्से में बड़ी संख्या में वाहनों के निर्माण के लिए रास्ते भी दिखाई दे रहे हैं। साथ ही कंटेनर और निर्माण उपकरण भी दिखे हैं। ट्राइटन पारासेल द्वीपसमूह के प्रमुख द्वीपों में से एक है, जो वियतनाम के तट और चीन के द्वीपीय प्रांत हैनान से लगभग समान दूरी पर है। अमेरिका ने चीन के दावे पर कोई रुख नहीं अपनाया है, लेकिन वह चीनी कब्जे वाले द्वीपों के पास नौवहन संचालन की स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता जताते हुए नियमित रूप से अपनी नौसेना के जहाज भेजता है। 2018 में अमेरिका के एक मिशन के केंद्र में ट्राइटन था। द्वीप पर चीन के एक हेलीपैड और रडार प्रणाली के साथ एक छोटा बंदरगाह और इमारतें हैं। द्वीप पर दो बड़े मैदानों पर चीनी ध्वज लगा हुआ है।

चीन का कहना है कि निर्माण का उद्देश्य वैश्विक नौवहन सुरक्षा में मदद करना है। उसने अपने द्वीप निर्माण कार्य के संबंध में और विवरण देने से इनकार कर दिया है। चीन ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है कि वह महत्वपूर्ण जलमार्ग का सैन्यीकरण कर रहा है, जिसके माध्यम से सालाना करीब पांच ट्रिलियन डॉलर का व्यापार होता है। चीन का कहना है कि उसे अपने संप्रभु क्षेत्र में जो चाहे करने का अधिकार है। चीन ने 1974 में एक संक्षिप्त नौसैनिक संघर्ष में वियतनाम से पारासेल द्वीपसमूह का पूरा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया था। चीन अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। अब चीन ने ऑफिशियल मैप जारी कर अरुणाचल प्रदेश, अक्साई चिन, ताइवान और विवादित दक्षिण चीन सागर को अपना हिस्सा बता दिया है। चीन की इस हरकत पर भारत ने फटकार लगाई है। इस मैप के जारी होने के बाद भारत में सियासी आरोप-प्रत्यारोप भी शुरू हो गए हैं। कांग्रेस, एआईएमआईएम समेत तमाम विपक्षी दलों ने इस मुद्दे पर मोदी सरकार को घेरा है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चीन के मैप को गंभीर मुद्दा बताया है। उधर, निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य ने भी चीन की विस्तारवादी नीति की निंदा की है। उन्होंने कहा कि चीन पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता।

चीन ने हाल ही में स्टैंडर्ड मैप ऑफ चाइना का 2023 संस्करण जारी किया, जिसमें दावा किया गया कि अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन चीन का हिस्सा हैं। इतना ही नहीं मैप में दक्षिण चीन सागर को कवर करने वाली तथाकथित नाइन-डैश लाइन को भी चीन के हिस्से के रूप में दिखाया गया है। 1962 के युद्ध में चीन ने अक्साई चिन पर कब्जा किया था। वहीं भारत ने चीन से बार-बार कहा है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा था, है और हमेशा रहेगा।

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन पर दावा जताने वाले चीन के तथाकथित मैप को खारिज करते हुए कहा कि सिर्फ बेतुके दावे करने से अन्य लोगों के क्षेत्र आपके नहीं हो जाते। उन्होंने कहा, बीजिंग ने पहले भी उन क्षेत्रों पर दावा करते हुए ऐसे नक्शे जारी किए थे, जो उसके नहीं हैं और यह चीन की पुरानी आदत है। जयशंकर ने कहा, यह कोई नई बात नहीं है। इसकी शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। इसलिए भारत के कुछ क्षेत्रों पर अपना दावा करने वाला मानचित्र पेश करने से मुझे लगता है कि इससे कुछ नहीं बदलता। ये भारत का हिस्सा हैं। हम बहुत स्पष्ट हैं कि हमारे क्षेत्र कहां तक हैं। सरकार इस बारे में बहुत स्पष्ट है कि हमें अपने क्षेत्र की रक्षा के लिए क्या करने की जरूरत है। आप इसे हमारी सीमाओं पर देख सकते हैं। मुझे लगता है कि इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। भारत ने मानचित्र मुद्दे पर चीन के समक्ष कड़ा विरोध दर्ज कराया और कहा कि चीनी पक्ष के ऐसे कदम सीमा से जुड़े विषय को केवल जटिल ही बनाएंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा, हमने चीन के तथाकथित मानक मानचित्र के 2023 के संस्करण पर राजनयिक माध्यमों के जरिए कड़ा विरोध दर्ज कराया है, जो भारतीय क्षेत्र पर दावा करता है। उन्होंने कहा, हम इन दावों को खारिज करते हैं जिसका कोई आधार नहीं है।

● **कुमार विनोद**

सियासी आरोप-प्रत्यारोप हुए शुरु

कांग्रेस ने अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन को चीन के मानचित्र में दिखाए जाने पर कड़ी आपत्ति जताई। कांग्रेस ने कहा कि ये भारत के अभिन्न अंग हैं और मनमाने तरीके से तैयार किया गया कोई चीनी नक्शा इसे नहीं बदल सकता। कांग्रेस ने भारत सरकार से मांग की कि आगामी जी-20 समिट के दौरान भारतीय क्षेत्र में चीन की घुसपैठ का वैश्विक स्तर पर खुलासा किया जाए। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने ट्वीट कर कहा, अन्य देशों से जुड़े क्षेत्रों का नाम बदलने और उन्हें नक्शों पर दर्शाने के मामले में चीन आदतन अपराधी रहा है। कांग्रेस इस तरह के अवैध सीमांकन या भारतीय क्षेत्रों का नाम बदलने पर कड़ी आपत्ति जताती है। उन्होंने कहा, हम अपने पड़ोसियों के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व चाहते हैं जिसमें चीन शामिल है। हम वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर अमन चैन चाहते हैं। उन्होंने आगे लिखा, हालांकि यह दुखदायी है कि गलवान की घटना के बाद चीन की ओर से धोखेबाजी और आक्रामकता जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से दी गई छूट के कारण ऐसा हुआ, जिन्होंने हमारे 20 बहादुर जवानों की शहादत के बाद कहा था कि हमारे क्षेत्र में कोई नहीं घुसा।

उड़ान का आनंद

उसका पासपोर्ट बन कर आ गया था। फिर भी ना जाने क्यों वीजा के लिए अप्लाई करने से पहले दिलो-दिमाग में उथल-पुथल मची थी। जिस उड़ान की चाहत में ना जाने कितनी मन्नतें मंदिरों में की थी। पासपोर्ट मिलते ही वह शिथिल सी क्यों होने लगी? भैया कब से उसे अपनी कंपनी में सीनियर मैनेजर के पोस्ट पर बिठाना चाहते हैं। भैया की वजह से भारी-भरकम पैकेज उसे मिलने वाला था। पासपोर्ट हाथ में है, फिर भी उदासी दूर नहीं हो पा रही है क्यों?

कारण तलाशने लगी, धीरे-धीरे भावनाओं के तार आपस में जुड़ते चले गए। मां-पापा के सिवा कोई रिश्ता नहीं है आसपास, दादी की तो उसमें जान बसती है! सभी आज तक हमारी खुशियों की खातिर अपनी खुशियों का हवन करते रहे हैं। क्या दादी के जीवन-संध्या पूजन-काल में मेरा विदेश जाना अंतिम आहूति साबित होगी? सोच कर ही रोम-रोम सिहर उठा। नहीं-नहीं उड़ान सिर्फ सात-समंदर पार ही नहीं मन के आंगन में भी संभव है। मन के कोने में मंदिर सी घंटियां बजने लगी।

नहीं! मुझे कहीं नहीं जाना है, दादी की चाहत पहले पूरी कर लूं। माना कि दादी के पंख थक गए हैं लेकिन मेरे पंख तो बलशाली हैं। फटाफट पैकेज टूर वालों का नंबर तलाशने लगी। कमरे से बाहर निकलकर मां पापा से मुखातिब हो- मां-पापा और दादी आप सब लोग यात्रा की तैयारी शुरू कर दें। यह सुनते ही सबके चेहरे पर घोर उदासी छा गई।

दादी ने मुंह खोला- जा बिटिया तेरी उड़ान में हम सभी तेरी ताकत बनेंगे, बाधक नहीं।

हां दादी आप सही कह रही हैं, अकेले भला कोई टूर पर जाता है! हम सभी मथुरा वृंदावन की सैर पर जा रहे हैं, उड़ान का आनंद अकेले में कहां?

- आरती रॉय

नाम अपने चंद्रयान का

वो पल गौरव शाली है,
मेरे हिंदुस्तान का।
साईन्स कम नहीं,
हौंसला हिंदुस्तान का।
हां लोहा मनवाया दुनिया से
अपने ज्ञान का।
पल हर पल, था है,
अभिमान हिंदुस्तान का।
झंडा ऊंचा रहा है,
रहेगा मेरे हिंदुस्तान का।
सबकी आंखों में था
नक्शा हिंदुस्तान का।
हिकमत सारी लगी हुई थी,
चंद्रयान के निर्माण में।
बच्चा-बच्चा नमन करे है,
उनको सारे हिंदुस्तान का।
साईन्सदां की मेहनत का ही
तो ये परिणाम है।
क्षण वो कामयाबी का,
भारत के अभिमान का।
परिणाम है, ये विज्ञान के
चिंतन अध्ययन और ज्ञान का।
नामुमकिन को मुमकिन में
बदल दें हम हिंदुस्तानी।
चंद्रमा से हुआ मिलन
आशाओं के उत्थान का।
चेहरा-चेहरा निखर गया है
भारत के हर इंसान का।

- डॉ. मुश्ताक अहमद

मास्टरजी

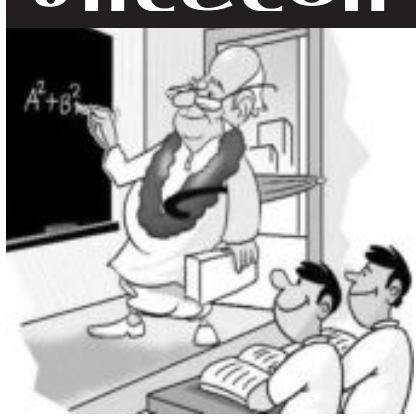

बिना प्रेस का कुरता-पजामा, बिखरे बाल, कंधे पर झोला, आंखों पर पुराने जमाने जैसी ऐनक, मुंह हर समय तम्बाकू से भरा हुआ, ऐसे थे उस गांव के मास्टरजी। सरकारी स्कूल, वो भी सुविधाएं रहित और उस पर समय पर शिक्षकों का न आना। जब तक कोई नया शिक्षक नियुक्त नहीं होता तो पूरे विषय पढ़ाने का जिम्मा मास्टरजी पर होता। मरता क्या न करता मजबूरन सभी विषय पढ़ाने पढ़ते थे। बच्चे भी इतने शैतान कि पढ़ाई के बजाय कक्षा में ऊधम मचाते रहते। कितने सहनशील थे मास्टरजी जो बच्चों को पढ़ाने के साथ उनकी शैतानियां बर्दाश्त करते थे।

वैसे तो वे बहुत शांत स्वभाव के थे पर उनकी अगर कोई नकल उतरता तो बहुत रौद्र रूप धारण कर लेते थे। एक तो तम्बाकू मुंह में भरी होने से बच्चों को उनकी आवाज स्पष्ट नहीं सुनाई देती थी, दूसरा डर इतना था कि मजाल कोई बच्चा कुछ बीच में पूछ ले। मास्टरजी का सखा स्वभाव ऊपरी था, वे बच्चों से बहुत स्नेह करते थे। उनके पढ़ाए हुए बच्चे अच्छे पदों पर आसीन थे।

कुछ दिन बाद मास्टरजी सेवानिवृत होने वाले थे। सभी उनकी विदाई की तैयारी में लगे हुए थे। नियत तिथि पर उनकी विदाई ससम्मान हुई। सभी ने उन्हें विदा किया। आज मास्टरजी की कुर्सी खाली पड़ी हुई थी। और बच्चे प्रतीक्षारत थे नए मास्टरजी की नियुक्ति में।

- सपना परिहार

Bhopal Development Authority, Bhopal

Ref-118/EO/Rev./BDA/2023 **Bhopal, Date 22/08/2023**

E-AUCTION NOTICE

Bhopal Development Authority, Bhopal Call of E-Auction for PSP Plots Under the Yojna of Misrod Ph-2, Aero city Ph-1 Authority invites E-Auction of Plots as mentioned under the following tables.

E-Auction Portal No.	Description of Plots	Use of Plots/ Units	Area in sq. Mtr.	Category of Reservation, if reserved	Reserve Price of Plot/Unit	EMD
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
Misrod Ph.-2, Yojna						
2023_BDAMP_110	PSP SECTOR-A	PSP	4200	Unreserved	11,20,56,000	1,12,05,600
2023_BDAMP_111	PSP SECTOR-B	PSP	3440	Unreserved	9,17,79,200	91,77,920
2023_BDAMP_112	PLOT NO-SR-25 SECTOR-E	SR	301.90	Unreserved	2,04,32,290	20,43,229
Laxmi Narayan Sharma, Aerocity Ph.-1, Yojna						
2023_BDAMP_113	J-17	Commercial	1075	Unreserved	2,98,66,725	29,86,672
2023_BDAMP_114	J-14	Commercial	1075	Unreserved	2,98,66,725	29,86,672
2023_BDAMP_115	ML(NH-12) PLOT NO-04 SECTOR-B	S.R.	1880	Unreserved	7,93,60,440	79,36,044

Auction Schedule

Published Date : 24/08/2023
Documents and Payment Submission Start Date : **24/08/23, 17:30 PM**
Documents and Payment Submission End Date : **04/09/23, 17:30 PM**
Approval Start Date : 05/09/2023, 11:00 AM
Approval End Date : 06/09/2023, 11:00 AM
Date of Auction Start : 06/09/2023, 11:30 AM
Date of Auction End : 07/09/2023, 17:30 AM
Date of Auction Open : 08/09/2023, 12:00 PM
Auction Website : https://www.eauction.gov.in
INSTRUCTIONS : These documents and EMD are required to be duly filled in and signed by the bidder and thereafter uploaded in the website https://www.eauction.gov.in and submit in Bhopal Development Authority, Bhopal during the time of submission of the bid.

Annexure

Terms & Conditions of e-Auction.
9. Details of Bidder (Annexure-I)
INSTRUCTIONS: This document is required to be duly filled in and signed by the bidder and thereafter uploaded in the website https://www.eauction.gov.in during the time of submission of the bid.
10. Affidavit by Bidder (Annexure-II)
INSTRUCTIONS: This document is required to be duly filled and Notaries in and signed by the bidder and thereafter uploaded in the website https://www.eauction.gov.in during the time of submission of the bid.
11. Terms & Conditions for Allotment of Property (Annexure-III).
12. Price Confirmation Letter by H1 Bidder (Annexure-IV).
INSTRUCTIONS: This document is required to be duly filled in and signed by the H1 bidder and thereafter e-mail and hard copy of letter to be submitted office "The Bhopal Development Authority, Bhopal," mentioned in the Sale Notice & copy to https://www.eauction.gov.in. Immediately on completion of the bidding.

Bidding in the last minutes and seconds should be avoided in the bidders own interest. Neither the Service Provider nor Bhopal Development Authority, Bhopal will be responsible for any lapses/failure on the part of the Bidder, in such cases.

Estate Officer
Bhopal Development Authority, Bhopal

भारत जीत पाएगा विश्वकप?

विश्व कप से पहले भारतीय टीम की सबसे बड़ी परेशानी खिलाड़ियों की फिटनेस है। कई अनुभवी खिलाड़ी चोटिल हैं। मेजबान होने के नाते भारत घरेलू परिस्थितियों में खिताब जीतने के प्रबल दावेदारों में से एक हो सकता है लेकिन कुछ पूर्व दिग्गज खिलाड़ी और खेल विशेषज्ञों को ऐसा नहीं लगता। इनका मानना है कि टीम दबाव के समय संघर्ष करती नजर आ सकती है। ऐसे में सवाल है कि क्या टीम वनडे वर्ल्डकप जीत पाएगी? भारतीय टीम तीसरी बार विश्व कप जीतने के सपने के साथ 8 अक्टूबर को इस टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत करेगी। वह चेन्नई में अपने पहले मैच में आस्ट्रेलिया के खिलाफ उतरेगी। लेकिन विश्व कप से पहले भारतीय टीम की सबसे बड़ी परेशानी खिलाड़ियों की फिटनेस है। कई अनुभवी खिलाड़ी चोटिल हैं। क्रिकेट प्रेमियों को उम्मीद है कि 12 साल बाद टीम इंडिया वनडे विश्व कप को जीत सकती है, मगर कुछ पूर्व दिग्गज खिलाड़ी और विशेषज्ञों को ऐसा नहीं लगता। ऐसे में सवाल है कि क्या भारतीय टीम वनडे वर्ल्डकप जीत पाएगी?

जानकार कहते हैं कि मेजबान होने के नाते भारत घरेलू परिस्थितियों में खिताब जीतने के प्रबल दावेदारों में से एक हो सकता है लेकिन टीम दबाव के समय संघर्ष करती नजर आ सकती है। ऋषभ पंत भयानक कार दुर्घटना में लगी चोटों से अभी तक उबर नहीं पाए हैं। वहीं श्रेयस अय्यर और केएल राहुल भी अपनी फिटनेस चिंताओं से जूझ रहे हैं। इससे भारतीय मध्यक्रम कमजोर हो गया है। अगर इन चिंताओं का समाधान नहीं किया गया, तो टीम दबाव वाले मैचों में संघर्ष करेगी। वर्ष 2011 विश्व कप के दौरान टीम के पास न केवल एक ठोस शीर्ष क्रम था बल्कि एक अच्छा मध्य क्रम भी था। गौतम गंभीर, सचिन तेंदुलकर और वीरेंद्र सहवाग जैसे बहुत अच्छे सलामी बल्लेबाजों के साथ ही अच्छा मध्यक्रम भी था। अभी शीर्ष क्रम ठीक है, लेकिन मध्य क्रम में काफी फेरबदल देखने को मिल रहा है। सूर्यकुमार का टी-20 में प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है। लेकिन एकदिवसीय मैचों में वे नाकाम रहे हैं।

पंत के दुर्घटनाग्रस्त होने से पहले टीम में बाएं और दाएं हाथ के संयोजन की बदौलत मध्यक्रम मजबूत दिख रहा था। अगर भारत को विश्व कप जीतने की उम्मीद है तो उसे मध्य क्रम में उस अंतर को भरना होगा। पहले हार्दिक वनडे में छठे या सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करते थे, फिर ऋषभ और जडेजा। बाएं-दाएं का संयोजन अच्छा काम कर रहा था। वनडे क्रिकेट में नंबर चार और पांच सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। दबाव वाले मैच में हर किसी को योगदान देना होता है। चौथे और पांचवें क्रम पर समस्या है। ऋषभ चोटिल हैं, श्रेयस चोट से वापसी करेंगे, सूर्या ने वनडे में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। ऐसे में इन लोगों को विश्व कप से पहले तैयार करना होगा। गौरतलब है कि आईसीसी वनडे विश्व कप की शुरुआत होने में कुछ ही महीनों का वक्त रह गया है। विश्व कप भारत की मेजबानी में खेला जाएगा। टूर्नामेंट की शुरुआत 5 अक्टूबर से होगी। वहीं भारतीय टीम विश्व कप से ठीक पहले एशिया कप और आस्ट्रेलिया के साथ वनडे सीरीज खेलेगी। इससे पहले रोहित शर्मा ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि हमें आईसीसी टूर्नामेंट जीतने की जरूरत है।

साल 2023 में भारतीय क्रिकेट के लिए सबसे बड़ा अवसर वनडे विश्व कप होगा। क्रिकेट इतिहास में पहली बार वनडे विश्व कप सिर्फ भारत में ही आयोजित किया जाएगा। रोहित और कोहली के लिए ये आखिरी विश्व कप माना जा रहा है। बुमराह, भुवनेश्वर, राहुल जैसे खिलाड़ी भी अपने लंबे क्रिकेट कैरियर में पहली बार विश्व कप की ट्रॉफी पर हाथ जमाना चाहेंगे। इस विश्व कप से इतनी उम्मीदें इसलिए हैं क्योंकि भारत धोनी की कप्तानी में आखिरी बार 2011 में विश्व कप भारतीय जमीन पर ही जीता था। पिछले एक दशक में घरेलू मैदान पर टीम का रिकॉर्ड शानदार रहा है, जो टीम के मनोबल को जरूर बढ़ाएगा। लेकिन चुनौतियां भी कम नहीं होंगी। सबसे बड़ा चैलेंज वर्ल्ड कप विनर टीम तैयार करना है। पिछले कुछ टूर्नामेंटों में टीम मैनेजमेंट इसी मोर्चे पर फेल होता रहा है, जिसकी सबसे बड़ी वजह जरूरत से ज्यादा प्रयोग करना है। अभी भी दर्जनों काबिल खिलाड़ी टीम से जुड़ने की कतार में हैं। आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका और पाकिस्तान की मजबूत टीमें भी बैटिंग फ्रेंडली पिचों पर भारत के लिए बड़ी चुनौतियां पैदा कर सकती हैं। विश्व कप शुरू होने से पहले भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि हमें आईसीसी टूर्नामेंट जीतने की जरूरत है और हम ट्रॉफी जीतने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे। टीम इंडिया 2013 के बाद से कोई भी आईसीसी ट्रॉफी नहीं जीती है। उन्होंने श्रेयस अय्यर की बात करते हुए कहा कि वह पूरी फिटनेस हासिल करने की राह पर हैं।

● आशीष नेमा

निशाने पर कप्तान और कोच

हाल में खेली जा रही वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 सीरीज के शुरुआती दो मुकाबलों में भारतीय टीम को हार का सामना करना पड़ा है। इसके बाद भारतीय टीम के कोच और कप्तान की जमकर आलोचना हो रही है। कई खेल प्रेमी और जानकारों ने भारत के वनडे विश्व कप जीतने की दावेदारी पर भी संदेह जताया है। हालांकि, कुछ लोगों का मानना है कि भारतीय टीम इस साल घरेलू मैदान पर विश्व कप का खिताब जीतने की क्षमता रखती है और इसका आंकलन वेस्टइंडीज में दो टी-20 मैचों में मिली हार के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। दरअसल भारत वेस्टइंडीज में दो टेस्ट मैच और वनडे सीरीज जीतने के बाद, पांच मैचों की टी-20 सीरीज में 1-2 से पीछे है, जिसके कारण दो प्रमुख प्रतियोगिताओं, पाकिस्तान और श्रीलंका में एशिया कप और घरेलू मैदान पर वनडे वर्ल्ड कप से पहले टीम की तैयारियों की आलोचना हो रही है। भारत ने सिर्फ दो टी-20 मैच वेस्टइंडीज के खिलाफ गंवाए हैं, इसलिए ज्यादा चिंतित होने की जरूरत नहीं है। एकमात्र चीज यह है कि टीम के कुछ प्रमुख खिलाड़ी गायब हैं। इनमें बुमराह का गायब होना सबसे बड़ा कारण है। अगर वह पूरी तरह से फिट हो जाते हैं तो एक पहलू पूरी तरह से ठीक होना है और दूसरा पहलू मैच फिटनेस हासिल करना है। अगर वे मैच फिटनेस हासिल कर लेते हैं, तो यह टीम इंडिया के लिए एक बड़े फायदे के साथ ही टीम के पास घरेलू मैदान पर विश्व कप जीतने का अच्छा मौका है।

जब अमीषा ने ऐश्वर्या को किया रिप्लेस, हुआ भारी नुकसान

फिल्म 'कहो ना प्यार है' के बाद साल 2001 में अमीषा पटेल की फिल्म गदर आई। इस फिल्म में सनी देओल के साथ एक्ट्रेस ने कमाल की अदाकारी की थी। फिल्म में सकीना का किरदार निभाकर अमीषा पटेल एक अलग ही स्टारडम लाइफ स्टाइल जीने लगी थीं।

बॉलीवुड को लगातार ब्लॉकबस्टर देने के बाद अमीषा ने सफलता का स्वाद खूब चखा। लेकिन इसके बाद से अमीषा पटेल के करियर का सफर बहुत धीमा पड़ गया था। ऐसे में उन्हें आमिर खान का सहारा मिला। हालांकि अफसोस अमीषा फिर धड़ाम से गिर गई थीं। कहा जाता है कि साल 2005 में जब अमीषा का करियर फ्लॉप होने की कगार पर पहुंच चुका था। तब आमिर खान ने उन्हें सहारा दिया था। ये बातें तब की हैं जब आमिर खान की फिल्म मंगल पांडे रिलीज हुई थी। लेकिन दुख की बात ये है कि ये फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर असफल साबित हुई थी। मंगल पांडे को निर्देशक केतन मेहता ने डायरेक्ट किया था। फिल्म में आमिर खान मेन लीड में थे। उस वक्त हिरोइन के रोल में ऐश्वर्या राय को कास्ट किया गया था। लेकिन कुछ कारणों से ऐश्वर्या राय के हाथ से ये फिल्म निकल गई। जिसके बाद ऐश्वर्या राय को अमीषा पटेल ने रिप्लेस किया था। फिल्म में अमीषा एक बंगाली विधवा ज्वाला की भूमिका में थीं, जिसके पति के मरने के बाद उसे सती बनने पर मजबूर किया जाता है। इस रोल में पहले ऐश्वर्या को फिट किया गया था। लेकिन बाद में इसे अमीषा की झोली में डाल दिया गया।

16 साल की उम्र में पिता को खो दिया, जिंदगी हार जाना चाहते थे अमित साध

काई पो चे और सुल्तान जैसी फिल्मों में अपनी एक्टिंग के दम पर वाहवाही बटोरने वाले एक्टर अमित साध ने एक इंटरव्यू में अपनी जिंदगी से जुड़े कई अहम किस्से शेयर किए। अमित साध ने बताया कि 16 साल की उम्र में उनके पिता का निधन हो गया था। इसके बाद 12वीं कक्षा में उन्हें स्कूल से भी निकाल दिया गया। इन हताशा और निराशा के क्षणों में अमित साध ने 3 बार अपनी जिंदगी काल के हवाले करने की कोशिश की है।

हालांकि खुशकिस्मति से इन काले सायों के उस भयानक दौर को पार कर अमित साध ने एक्टिंग की दुनिया में खूब नाम कमाया है। अमित साध ने टीवी सीरियल्स से अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद फिल्मों में अपनी किस्मत आजमाई। अब अमित साध ग्लैमर की दुनिया का एक जाना-पहचाना नाम बन गए हैं। अमित साध एक्टिंग के साथ एडवेंचर के भी शौकीन हैं। अमित साध अपनी बाइक से पहाड़ों में खूब घूमा करते हैं।

जब केके मेनन के लिए अमिताभ ने लिया स्टैंड, डायरेक्टर को दी नसीहत

केके मेनन ने हाल ही में निर्देशक राम गोपाल वर्मा की फिल्म सरकार में अमिताभ बच्चन के साथ काम करने के बारे में बात की। केके मेनन ने यह भी बताया कि कैसे बिग बी ने उन्हें लाइमलाइट में लाने की कोशिशें की। केके ने फिल्म के डाइनिंग टेबल वाले सीन के बारे में बात की, जहां अमिताभ बच्चन का किरदार उनके किरदार का सामना करता है। पिता-पुत्र की जोड़ी के बीच तूतू-मैंमैं होती है और केके अपनी प्लेट को फेंककर बाहर निकल जाते हैं। केके ने कहा कि इस सीन को उन्होंने इम्प्रोवाइज किया और राम गोपाल वर्मा ने भी इसे मंजूरी दे दी। केके मेनन ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया कि वह अपने कमरे में वापस आए और लंच कर रहे थे तभी अस्सिटेंट

ने आकर कहा कि डायरेक्टर राम गोपाल वर्मा उन्हें वापस बुला रहे हैं। वह हैरान थे कि डायरेक्टर उन्हें दोबारा क्यों बुला रहे हैं। राम गोपाल वर्मा ने उन्हें बताया कि अमिताभ बच्चन ने आपके हित के लिए एक सुझाव दिया है।

अमिताभ बच्चन ने अपने पीछे एक कैमरा लगाने का सुझाव दिया, जिससे कि केके मेनन के इंटेंस सीन का क्लॉजअप लिया जा सके। अमिताभ ने डायरेक्टर से कहा कि उन्हें केके मेनन की परफॉर्मेंस को भी कैद करना चाहिए। तभी डायरेक्टर ने उस सीन को दोबारा शूट करने का फैसला किया। इससे मेनन की परफॉर्मेंस को स्क्रीन पर स्पष्ट देखा जा सकता था। केके मेनन ने अमिताभ बच्चन की भी जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि बिग ही एक न्यूकमर की तरह रिहर्सल करते हैं। उन्होंने बिग बी को जिज्ञासु और आने वाली जनरेशन के एक्टर्स के लिए इंस्पिरेशन भी बताया। उन्होंने यह भी कहा कि बिग बी आज जिस मुकाम पर हैं, वह इसके हकदार हैं। सरकार के अलावा अमिताभ बच्चन और केके मेनन ने फिल्म दीवार में भी एकसाथ काम किया है।

नेता जी का कुर्सी प्रेम

किसी नेता का अपने परिवार और पत्नी से उतना संबंध नहीं होता जितना कि अपनी राजनीतिक कुर्सी से होता है। खासकर चुनाव के आसपास तो नेता जी की यह कुर्सियोचित बीमारी अपने चरम पर होती है। कहते हैं कि तब उनकी पत्नी भी उनके साथ रहने से कतराने लगती हैं, क्योंकि उस समय उनके राजनीतिक पतिदेव पर हर आधे घंटे के बाद चीख-चीखकर बोलने का दौरा पड़ने लगता है। उस समय उन्हें पूरा बेडरूम, बेडरूम की तरह नहीं दिखाई पड़ता, बल्कि राजनीतिक श्रोताओं से भरी हुई एक विशाल जनसभा की तरह दिखाई पड़ता है जिसे वह अपने लच्छेदार भाषणों से संबोधित और सम्मोहित कर रहे होते हैं। फिर कुछ देर बाद खड़ंजा और नालियों का जिक्र ऐसे करते हैं कि जैसे उनके सुंदरीकरण के लिए ही वह राजनीति में आए हैं।

इतना ही नहीं, अगर उनके चुनावी क्षेत्र में इस बीच कोई व्यक्ति गुजर जाता है तो वह उसके घर जाकर उसके घरवालों से भी कहीं ज्यादा अपनी छाती पीट-पीटकर ऐसे रोते हैं कि जैसे उनके किसी अपने की मृत्यु हो गई हो। दरअसल वह केवल चुनाव में अपने एक मतदाता के कम हो जाने के गम में इस तरह से रोते हैं, लेकिन जनता उनके इस तरह से रोने के रहस्य को नहीं जान पाती और उनके इस घड़ियाली आंसू की चपेट में आ जाती है। उनकी पत्नी की मानें तो नेता जी शादी से पहले एक सामान्य पुरुष थे। विवाह के कुछ दिन बाद तक भी सारी गिड़गिड़ाहट और डर-भय उनमें भी अन्य पतियों की तरह थे, लेकिन वे सब अचानक से गायब हो गए। न जाने उनके मस्तक की कौन-सी भाग्य रेखा का भौगोलिक एक्सीडेंट हुआ कि वह देखते ही देखते एक जनप्रिय नेता बन गए। उनके नेता बनते ही हमारी और उनकी मोहब्बत की पूरी गृहस्थी रेगिस्तान की तरह बनकर रह गई। कभी-कभी तो उनका मेरे प्रति व्यवहार भी अब राजनीतिक लगने लगा है। यहां तक कि जब चुनाव काफी नजदीक आ जाता है तो उनका राजनीतिक माइलेज इतना अधिक बढ़ जाता है कि कुछ पूछिए मत! उस समय उनकी मुखमुद्रा को भांप या पढ़ पाना बड़े से बड़े ज्योतिष के वश की भी बात नहीं होती।

कहते हैं कि उन्होंने अपने बेडरूम में एक पुरानी कुर्सी को इतने प्यार से रख रखा है कि उतने प्यार से कभी अपनी पत्नी तक को नहीं रखा होगा। दरअसल वह अपनी उस कुर्सी को अपने राजनीतिक करियर के लिए काफी लकी मानते हैं। जब कभी चुनाव प्रचार में जाना होता है तो वह ब्रह्ममुहूर्त में बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ उठते हैं। बाथरूम में ऐसे स्नान करते हैं कि जैसे कोई महा प्रकांड व्यक्ति प्रयागराज के संगम में स्नान कर रहा हो। उसमें से निकलने के बाद वह अपनी कुर्सी के सामने वास्तुशास्त्र के हिसाब से आलथी-पालथी मारकर बैठ जाते हैं। फिर उसके चारों पायों की तरफ अगरबत्ती सुलगाते हैं।

जब कभी चुनाव प्रचार में जाना होता है तो वह ब्रह्ममुहूर्त में बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ उठते हैं। बाथरूम में ऐसे स्नान करते हैं कि जैसे कोई महा प्रकांड व्यक्ति प्रयागराज के संगम में स्नान कर रहा हो। उसमें से निकलने के बाद वह अपनी कुर्सी के सामने वास्तुशास्त्र के हिसाब से आलथी-पालथी मारकर बैठ जाते हैं। फिर उसके चारों पायों की तरफ अगरबत्ती सुलगाते हैं।

तदुपरांत अपने एक चौबीस कैरेट के घनघोर समर्थक द्वारा उस कुर्सी के लिए लिखे गए कुर्सी सतसई का लगभग सवा घंटे तक राग राजनीति में गाकर ऐसे पाठ करते हैं जैसे यह इस देश के पहले और आखिरी भजन सम्राट हों। कुर्सी सतसई का पाठ करने के बाद उसकी परिक्रमा करते हैं। फिर उसे साष्टांग प्रणाम कर अपने विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार के लिए निकल पड़ते हैं। रास्ते में जगह-जगह रुकते हैं और विकास एवं झूठे वादों की गंगा बहाने की बातें तथा वादे करते हैं।

उनकी पत्नी अपने विवाह के पुराने दिनों को याद करते हुए कहती हैं कि एक समय वह भी था जब वे तमाम जिम्मेदारियों के बोझ तले किसी गधे की तरह दबे रहते थे। अपना मुंह किसी बिगड़ी हुई दीवार घड़ी की तरह लटकाए हुए घर से निकलते थे। कुछ देर बाद अस्त-व्यस्त धूल-धूसरित मुंह लिए हुए घर लौटते थे, लेकिन अब सब कुछ बदल गया है। चार-चार लग्जरी वाहन, गनर, महंगे कपड़ों पर विदेशी परफ्यूम मारकर कभी इस जगह तो कभी उस जगह जाना और यह सब देखना अब मेरी इन छटपटाती आंखों की नियति बन गई है। उनको प्यार से देखने की मेरी बोहनी महीनों से नहीं हुई है। अब तो ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह ऐसी लड़कियों को सद्बुद्धि दे, जिनकी अभी तक शादी नहीं हुई है। उन लड़कियों को अगर घर पर देखने आए लड़के में जरा-सा भी नेता बनने का रासायनिक गुण दिखाई दे तो वे तत्काल ऐसी शादी करने से इनकार कर दें, क्योंकि एक नेता का संबंध अपनी पत्नी से उतना नहीं होता जितना कि कुर्सी से।

● **प्रमोद दीक्षित 'मलय'**

ANU SALES CORPORATION

We Deal in Pathology & Medical Equipment

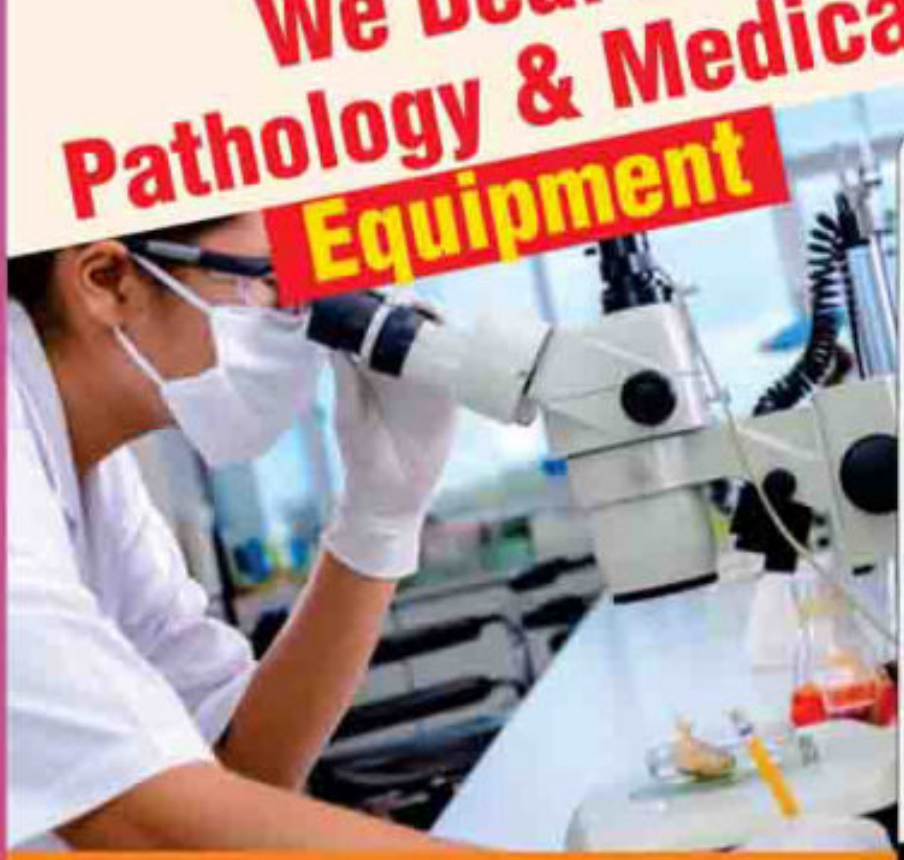

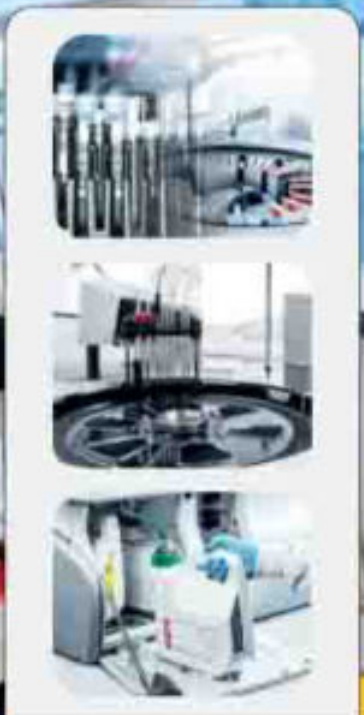

Address : M-179, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023

9329556524, 9329556530 Email : ascbhopal@gmail.com

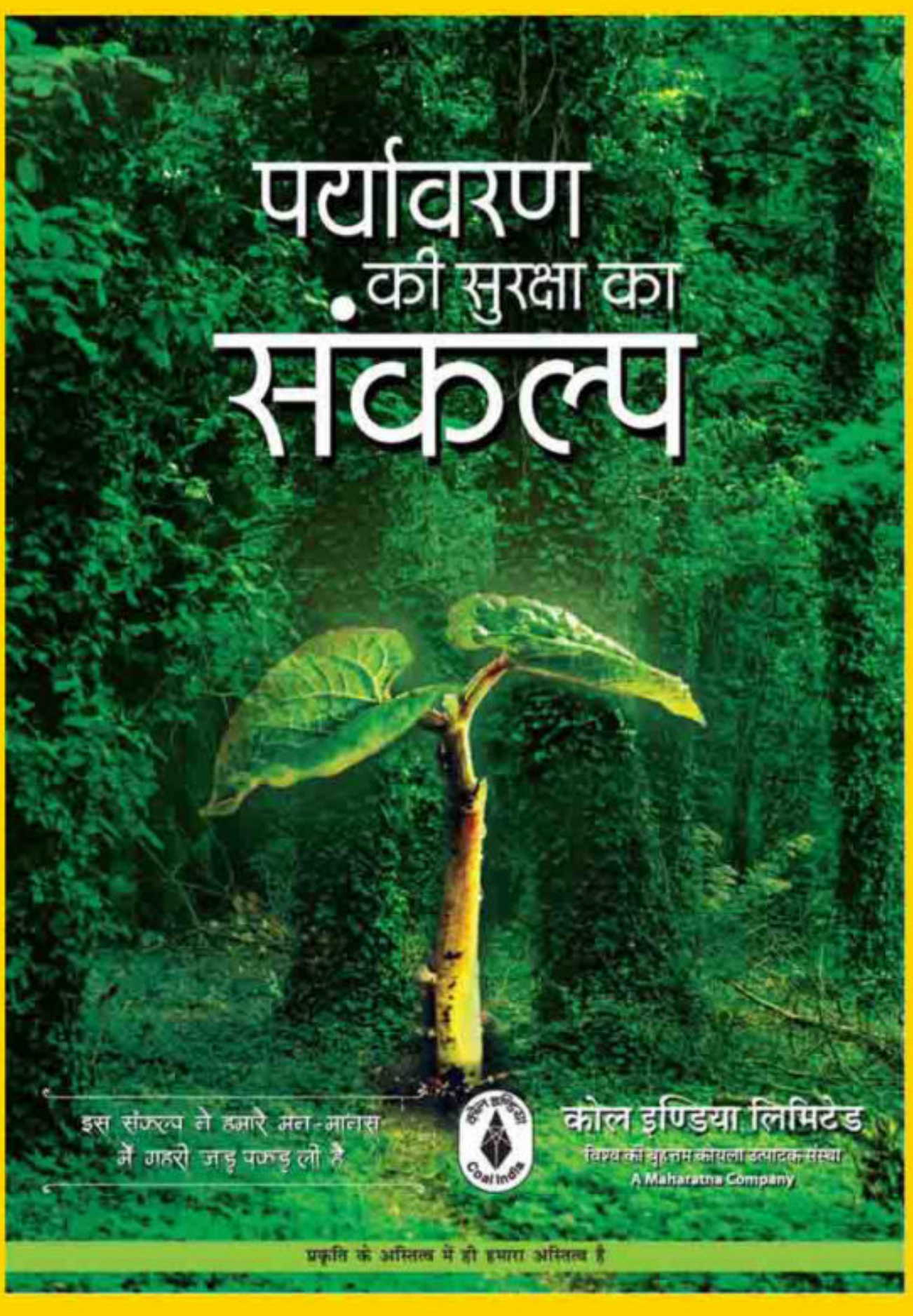

पर्यावरण
की सुरक्षा का
संकल्प
इस संकल्प ने हमारे मन-मानस
में गहरी जड़ पकड़ ली है
Coal India
कोल इण्डिया लिमिटेड
विश्व की वृहत्तम कोयला उत्पादक संस्था
A Maharatna Company
प्रकृति के अस्तित्व में ही हमारा अस्तित्व है